एजाज़े अहमदी

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

Ejaz-e-Ahmadi
(in Hindi)

by

Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani[as]
The Promised Messiah and Imam Mahdi

एजाज़े अहमदी

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : एजाज़े अहमदी
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक : डाक्टर अन्सार अहमद, एम.ए., एम.फिल,
पी एच,डी पी.जी.डी.टी., आनर्स इन अरबिक
टाइप, सैटिंग : सलमा अदील
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) फ़रवरी 2019 ई०
संख्या : 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book : Ejaze Ahmadi
Author : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator : Docter Ansar Ahmad, M.A., M.Phil, Ph.D
P.G.D.T., Hons in Arabic
Type Setting : Salma Adeel
Edition : 1st Edition (Hindi) February 2019
Quantity : 1000
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian,
143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रीव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम इब्नुल मेहदी एम् ए और मुकर्रम मुहियुद्दीन फ़रीद एम् ए ने इसका रीव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

'ऐजाज-ए-अहमदी' परिशिष्ट पुस्तक नुज़ूलुल मसीह 6 शाबान 1320 हिज्री तदनुसार 8 नवम्बर 1902 ई० को लिखी गई जिसके साथ दस रुपए के इनाम का विज्ञापन है, 15 नवम्बर 1902 ई० को प्रकाशित की गई।

लिखने का कारण

मुद्द ज़िला अमृतसर में एक गांव है। मियां मुहम्मद यूसुफ साहिब अहमदी अपील नवीस बिकट गंज मर्दान जो इस गांव के रहने वाले थे। जब उनके भाई मियां मुहम्मद याक़ूब साहिब सिलसिला अहमदिया में दाखिल हुए तो गांव वालों ने उनका कठोर विरोध किया और उनका पूर्ण बायकाट कर दिया तो उन्होंने अपने भाई मियां मुहम्मद यूसुफ़ साहिब को मर्दान से बुलवाया और अन्ततः गांव वालों से यह तय पाया कि वहां 29, 30 अक्टूबर 1902 ई० को मुबाहसा हो और मियां मुहम्मद यूसुफ़ साहिब के आग्रह पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मौलवी सय्यिद मुहम्मद सरवर शाह साहिब और मौलवी अब्दुल्लाह साहिब कशमीरी को वहां भिजवा दिया तथा दूसरी ओर से मौलवी सनाउल्लाह साहिब अमृतसरी मुनाज़िर नियुक्त हुए। उन दिनों मुद्द की आबादी दो अढ़ाई सौ के लगभग थी परन्तु आस-पास के देहात से सम्मिलित होने वाले ग़ैर अहमदियों की संख्या छः सात सौ तक पहुँच गई परन्तु अहमदी केवल तीन चार थे।

मुबाहसा हुआ, मुबाहसे के दो दिन बाद मौलवी सय्यिद मुहम्मद सरवर शाह साहिब अपने दोस्तों सहित 2 नवम्बर 1902 ई० को वापस क़ादियान पहुँच गए और मुबाहसे का विस्तृत वृतान्त हज़रत

अक़्दस को सुना दिया।

मौलवी सनाउल्लाह साहिब ने मुबाहसे के मध्य में एक यह ऐतराज़ किया था कि मिर्ज़ा साहिब की समस्त भविष्यवाणियां झूठी निकलीं। दूसरे यह कहा था कि मैं मिर्ज़ा साहिब से मुबाहले के लिए तैयार हूं। तीसरी हज़रत मौलवी सय्यिद मुहम्मद सरवर शाह साहिब की इस मांग के उत्तर में, कि यदि हज़रत मिर्ज़ा साहिब को झूठा समझते हो तो ऐजाज़ुल मसीह का उत्तर क्यों न लिखा, कहा था कि मैं चाहूं तो बड़ी आसानी से इन बातों का उत्तर लिख सकता हूं। इसलिए हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने उचित समझा कि इसका उत्तर दिया जाए। अतः आप फ़रमाते है:-

"यदि मौलवी सनाउल्लाह साहिब इस बहस में बेईमानी और झूठ से काम न लेते तो इस लेख के लिखने की आवश्यकता न होती। परन्तु चूंकि कथित मौलवी साहिब ने मेरी भविष्यवाणियों को झुठलाने में झूठ बोलने को अपना कर्तव्य समझ लिया इसलिए ख़ुदा ने मुझे इस लेख के लिखने की ओर ध्यान दिलाया ताकि हर झूठे का मुंह काला हो।"

(ऐजाज़-ए-अहमदी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 107 उर्दू एडिशन)

और फ़रमाया :- "तथा यह भी विचार आया कि मौलवी सनाउल्लाह साहिब से यदि केवल पुस्तक 'ऐजाज़ुलमसीह' का उदाहरण मांगा जाए तो वह इस में अवश्य कहेंगे कि क्योंकर सिद्ध हो कि सत्तर दिन के अन्दर यह पुस्तक लिखी गई है और यदि वह हुज्जत प्रस्तुत करे कि यह पुस्तक दो वर्ष में बनाई गई है और हमें भी दो वर्ष की मुहलत (छूट) मिले तो कठिन होगा कि हम सफाई से उनको सत्तर

दिन का सबूत दे सकें। इन कारणों से उचित समझा गया कि ख़ुदा तआला से यह निवेदन किया जाए कि एक **सादा क़सीदा** बनाने के लिए रुहुलक़्दुस (फ़रिश्ते) से मुझे समर्थन दे जिसमें **मुद्द के मुबाहसे** की चर्चा हो.....अतः मैंने दुआ की कि हे शक्तिमान ख़ुदा! मुझे निशान के तौर पर सामर्थ्य दे कि ऐसा क़सीदा बनाऊं और वह मेरी दुआ स्वीकार हो गई और रुहुलक़ुदुस से मुझे एक विलक्षण समर्थन मिला और वह क़सीदा मैंने पाँच दिन में ही समाप्त कर लिया। काश यदि कोई अन्य कार्य विवश न करता तो वह क़सीदा एक दिन में ही समाप्त हो जाता.....मुबाहसा 29 और 30 अक्तूबर 1902 ई० को हुआ था और हमारे दोस्तों के वापस आने पर 8 नवम्बर 1902 ई० को इस क़सीदे का बनाना आरंभ किया गया और 12 नवम्बर 1902 ई० को इस उर्दू इबारत सहित समाप्त हो चुका था। चूंकि मैं हार्दिक विश्वास से जानता हूं कि ख़ुदा के समर्थन का यह एक बड़ा निशान है ताकि वह विरोधी को शर्मिन्दा और निरुत्तर करे। इसलिए मैं इस निशान को **दस हज़ार रुपये के इनाम के साथ मौलवी सनाउल्लाह** और उसके सहायकों के सामने प्रस्तुत करता हूं।"

(ऐजाज़-ए-अहमदी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 146 उर्दू एडिशन)

और फ़रमाया:- "यदि इस तिथि से कि यह क़सीदा और उर्दू इबारत उनके पास पहुँचे चौदह दिन तक इतने ही शे'र सरस-सुबोध जो इस मात्रा और संख्या से कम न हों, प्रकाशित कर दें तो मैं दस हज़ार रुपया उनको इनाम दे दूंगा। उनको अधिकार होगा कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब से मदद लें या किसी और साहिब से मदद लें। तथा इस कारण से भी उनको कोशिश करनी चाहिए कि मेरे एक **विज्ञापन** में

भविष्यवाणी के तौर पर ख़बर दी गई है कि अन्तिम दिसम्बर 1902 ई० तक कोई **विलक्षण निशान** प्रकट होगा। और यद्यपि वह निशान अन्य रुपों में भी प्रकट हो गया है परन्तु यदि मौलवी सनाउल्लाह तथा दूसरे सम्बोधितों ने इस मीआद के अन्दर इस क़सीदे और उस उर्दू निबन्ध का उत्तर न लिखा या न लिखवाया तो यह निशान उनके द्वारा पूरा हो जाएगा।"

(ऐजाज़-ए-अहमदी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 147 उर्दू एडिशन)

और इस पुस्तक के अंत में दस हज़ार रुपये के पुरस्कार का विज्ञापन प्रकाशित किया जिसमें आपने चौदह दिन की बजाए बीस दिन की मुद्दत कर दी और फ़रमाया:-

इंशाअल्लाह 16 नवम्बर 1902 ई० की सुबह को मैं यह पुस्तक ऐजाज़-ए-अहमदी मौलवी सनाउल्लाह के पास भेज दूंगा जो मौलवी सय्यद मुहम्मद सरवर साहिब लेकर जाएंगे तथा इसी तारीख को यह पुस्तक उन समस्त सज्जनों की सेवा में जो इस कसीदः में सम्बोधित हैं रजिस्ट्री द्वारा भेज दूंगा..... 17,18,19 नवम्बर 1902 ई० इन दिनों तक बहर हाल उनके पास जगह-जगह यह क़सीदः पहुंच जाएगा। अब उनकी समय सीमा 20 नवम्बर से आरंभ होगी तो इस प्रकार से 10 दिसम्बर 1902 ई० तक इस समय सीमा का अन्त हो जाएगा। फिर यदि 20 दिन में जो दिसम्बर 1902 ई० की दसवीं तारीख के दिन की शाम तक समाप्त हो जाएगा। उन्होंने इस क़सीदः तथा उर्दू लेख का उत्तर छाप कर प्रकाशित कर दिया तो यों समझो कि मैं बिल्कुल बरबाद हो गया और मेरा सिलसिला झूठा हो गया। इस स्थिति में मेरी समस्त जमाअत को चाहिए कि मुझे छोड़ दें और संबंध समाप्त करें। परन्तु

यदि अब भी विरोधियों ने जानबूझ कर पृथकता की तो न केवल दस हज़ार रुपए के इनाम से वंचित रहेंगे बल्कि दस लानतें उन का अनादि भाग होंगी।"

(ऐजाज़-ए-अहमदी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 204-205 उर्दू एडिशन)

परन्तु हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने भविष्यवाणी के रूप में फ़रमाया:- "देखो मैं आकाश और पृथ्वी को गवाह रखकर कहता हूं कि आज की तिथि से इस निशान पर निर्भरता रखता हूं। यदि मैं सच्चा हूं और ख़ुदा तआला जानता है कि मैं सच्चा हूं तो कभी संभव नहीं होगा कि मौलवी सनाउल्लाह और उनके समस्त मौलवी पाँच दिन में ऐसा क़सीदा बना सकें और उर्दू निबंध का खण्डन लिख सकें क्योंकि ख़ुदा तआला उनकी क़लमों को तोड़ देगा और उनके दिलों को मंद बुद्धि कर देगा।"

(ऐजाज़-ए-अहमदी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 148 उर्दू एडिशन)

इसी प्रकार क़सीदे में आप फरमाते हैं:-

فان اك كذّابا فيأ تى بمثلها   وان اك من ربّى فيغشى و يثبر

अत: यदि मैं झूठा हूँ तो वह ऐसा क़सीदा बना लाएगा और यदि मैं ख़ुदा की ओर से हूँ तो उसकी समझ पर पर्दा डाल दिया जाएगा और रोका जाएगा।

(ऐजाज़-ए-अहमदी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 156 उर्दू एडिशन)

मीआद गुज़र गई और उलेमा से न व्यक्तिगत तौर पर और न सामूहिक तौर पर उस का उत्तर बन सका और भविष्यवाणी के अनुसार वास्तव में अल्लाह तआला ने उन के दिल कुंद कर दिए तथा उनके क़लम तोड़ दिए और भविष्यवाणी (तिरयाक़ुल क़ुलूब के

विज्ञापन में दर्ज) कि 1902 ई० दिसम्बर के अन्त तक एक बड़ा निशान प्रकटन में आएगा, बड़ी चमक-दमक से पूरा हो गया।

मुद्द पर तबाही

मुद्द का स्थान जहां पर मुबाहसा हुआ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को गालियां दी गईं और झुठलाने एवं उपहास का लक्ष्य बनाया गया। मुबाहसे से पांच-छः दिन बाद वहां ताऊन का प्रचंड आक्रमण हुआ और दो ढाई सौ की आबादी में से एक सौ बीस लोग ताऊन से मर गए और गांव की औरतों ने मुल्लाओं को बहुत बुरा-भला कहा कि उन्होंने मौलवी सनाउल्लाह इत्यादि को बुला कर मिर्ज़ा साहिब को गालियां दीं और संक्रामक रोग फैला (अलहकम 17 मई 1903 ई०) और इस के संबन्ध में क़सीदः में हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने यह भविष्यवाणी की थी-

اری ارضَ مدّ قد ارید تبارھا
و غادرھم ربی کغصن تجذر

मैं मुद्द की ज़मीन को देखता हूं उसका विनाश निकट आ गया और मेरे रब्ब ने उनको कटी हुई टहनी के समान कर दिया।

(ऐजाज़-ए-अहमदी, रूहानी खज़ायन जिल्द 19, पृष्ठ-156 उर्दू एडिशन)

मुबाहले की दावत का उत्तर

मौलवी सनाउल्लाह साहिब की मुबाहले की दावत का हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने (पृष्ठ 121-125 जिल्द-19) विस्तृत उत्तर दिया और फ़रमाया-

"यदि इस चेलेन्ज पर वह तैयार हुए कि झूठा सच्चे से पहले

मर जाए तो अवश्य वह पहले मरेंगे।"

(ऐजाज़-ए-अहमदी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द -19 पृष्ठ -148)

मौलवी सनाउल्लाह साहिब का एक असफल छल

1923 ई० में मौलवी सनाउल्लाह साहिब ने ऐजाज़-ए-अहमदी के महान निशान को संदिग्ध करने के लिए यह चाल चली कि एक पुस्तक 'शहादाते मिर्ज़ा' लिखी और एक हज़ार रुपया इनाम के साथ छः माह उसके उत्तर के लिए मुद्दत निर्धारित की। पुस्तक पर माह अक्टूबर लिख दिया। परन्तु यह प्रकट न किया कि अक्टूबर की किस तिथि को प्रकाशित हुई और अहमदियों से उसे गुप्त रखा गया तथा किसी अहमदी को न भेजी और जब उस का दिसम्बर 1923 ई० के अन्त में मुझ लेखक को मालूम हुआ तो क़ादियान आकर इस के बारे में पूछा तो मालूम हुआ कि क़ादियान में भी किसी को यह पुस्तिका नहीं भेजी गई। जब मुझे पुस्तिका मिली तो मैंने कुछ दिन में उसका उत्तर लिख कर क़ायमगंज (यू.पी.) से मुकर्रम मुहतरम क़ाज़ी मुहम्मद ज़हूरुद्दीन साहिब अकमल को भेज दिया। उस समय आप मासिक पत्रिका रीव्यू आफ रेलीजेन्ज़ के एडिटर थे यह उत्तर अप्रैल 1924 ई० की पत्रिका में प्रकाशित हुआ और 'अर्ज़-ए-हाल' शीर्षक के अंतर्गत आप ने लिखाः-

> "बिरादर अज़ीज़ुल क़द्र ख्वाजा शम्स फ़ाज़िल सेखवानी मल्काना के मुर्तद होने की रोकथाम के लिए में हज़रत खलीफ़तुल मसीह (द्वितीय) अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आदेशानुसार व्यस्त हैं। वहां से आप दो चार दिन

के लिए दारुलअमान (क़ादियान) पधारे तो मुझ से चर्चा की कि मौलवी सनाउल्लाह साहिब की पुस्तिका 'शहादाते मिर्ज़ा' का एक दोस्त ने रेल में ज़िक्र किया था यदि आप के पास हो तो मुझे दे दें मैं उसका उत्तर लिखूंगा। मैंने कहा यह क़ादियान में किसी के पास नहीं, न लेखक ने भेजी है। ख्वाजा शम्स ने कहा अच्छा यदि मुझे मिल गई और थोड़ी सी भी फ़ुर्सत पाई तो आप को उत्तर लिख कर भेज दूंगा। अत: आदरणीय बिरादर ने 31 जनवरी 1924 ई० को मुझे उत्तर पहुंचा दिया। जिन लोगों को व्यक्तिगत तौर पर ख्वाजा शम्स साहिब की व्यस्तताओं का ज्ञान है कि वह दिन-रात सफ़र, असंतुष्टि और ग़रीबी की हालत में रहते हैं वे भलीभांति समझ सकते हैं कि ख़ुदा का समर्थन मेरे विद्वान दोस्त के साथ था। न अपने समय पर अधिकर रखते हैं क्योंकि जिस समय आदेश हो और जहां भी आदेश हो तुरन्त उनको पैदल चल कर पहुंचना पड़ता है न कोई पुस्तक पास रख सकते हैं। ऐसी हालत में सिलसिला अहमदिया के पुराने शत्रु की समस्त आयु का सरमाया जो ऐतराज़ थे उन ऐतराज़ों का इस खूबी से खण्डन करना, प्रशंसा-पत्र लिए बिना नहीं छोड़ता। अल्लाह तआला उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

(रीव्यू आफ़ रेलीजन्ज़ उर्दू अप्रैल 1924 ई०)

यह पुस्तक मार्च में छप गई और इसकी एक प्रति रजिस्ट्री करवा कर मौलवी सनाउल्लाह साहिब को भेज दी गई। 1,2,3 अप्रैल को ग़ैर अहमदियों का क़ादियान में जल्सा था। इस जल्से में मौलवी सनाउल्लाह साहिब ने भाषण देते हुए गर्व करते हुए 'शहादाते मिर्ज़ा'

की चर्चा की कि एक हज़ार रुपया इनाम निर्धारित है और अब तक किसी ने उसका उत्तर नहीं लिखा। उसी समय रजिस्ट्री की रसीद दिखाई गई और मीर क़ासिम अली साहिब ने बुलन्द आवाज़ से कहा कि उत्तर भेजा जा चुका है। बस फिर घिग्घी बंध गई और ऐसा खामोश हुआ कि कुछ बात न बन आई।

(अलफ़ज़्ल 8 अप्रैल 1924 ई०)

"कमालते अहमदिया" का मौलवी सनाउल्लाह से उत्तर मांगा गया परन्तु उन्हें उत्तर लिखने की हिम्मत न हुई। किन्तु अपनी लज्जा और शर्म को कम करने के लिए कमालते अहमदिया के प्रकाशन के आठ माह पश्चात् हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय और रज़ियल्लाहु अन्हु को सम्बोधित करते हुए 'अहले हदीस' 5 दिसम्बर में 'एक खुली चिट्ठी' प्रकाशित की जिसमें उन्होंने लिखा-

1- "चूंकि निबन्ध के लेखक ने अब तक इनाम की मांग नहीं की और न ही फैसले का तरीका बताया है और न ही मुझ से पूछा है। इसलिए मालूम हुआ कि वे स्वयं ही अपने उत्तर को कमज़ोर समझते हैं।"

2- और लिखा – "क्या यह संभव है कि आप ही एक साल के अन्दर अज़ाब की क़सम के साथ फैसला कर दें कि उत्तर सही है या ग़लत है?"

अलफ़ज़ल 26 दिसम्बर 1924 ई० पृष्ठ-4 में मैंने उस खुली चिट्ठी का उत्तर देते हुए नं०-1 के सबन्ध में लिखा कि:-

"मौलवी साहिब को मालूम होगा कि उत्तर के प्रकाशित होने से पूर्व अख़बार फ़ारुक के द्वारा आदरणीय जनाब मीर

क़ासिम अली साहिब ने मालूम किया था कि उत्तर की वे शर्तें जिन के अन्तर्गत वह वादा की गई राशि देने वाले हैं लिख कर या अहले हदीस के माध्यम से छाप कर शीघ्र मेरे पास भेज दें तथा जज इत्यादि के संबन्ध में भी लिखें कि किस को जज नियुक्त किया जाएगा तथा किन शर्तों के अन्तर्गत वह फैसला देगा।" (फारूक 13, व-20 मार्च 1924 ई०)

परन्तु मौलवी साहिब ने इसका कोई उत्तर न दिया। तत्पश्चात् हम ने पहले अनुभवों के आधार पर और मरते हुए को मारना उचित न समझ कर इनाम लेने की मांग पर भी ज़िद न की विचार तो करो कि वह व्यक्ति जो एक इनामी पुस्तक लिखता है और फिर उसे अपने साथियों में छुपा कर रखता है और बार-बार मांग करने पर भी भेजने से संकोच करता हुआ वास्तविकता के विरुद्ध लिख देता है कि मैंने एक पुस्तक क़ादियान भेज दी थी जिसके उत्तर में क़सम दी जाती है। (फ़ारूक 2 मार्च 1924 ई०) तो कुछ नहीं देता। अन्ततः लिखा जाता है कि:-

"यदि यह पुस्तक अपने गुमान में अनुपम है तो क्यों नहीं भेजता। अब यदि और रजिस्ट्री करा और नहीं भेजता तो वी.पी. द्वारा भेज दे।"

(अलफ़ज़्ल 4 मार्च 1924 ई०)

फिर और 6 मार्च के फ़ारूक में पुनः लिखा जाता है तो ख़ुदा की सृष्टि से शर्म करके 7 मार्च को वी.पी. संख्या -9508 आठ आने की पुस्तक भेजता है। तो ऐसे व्यक्ति से एक हज़ार की मांग करना चील के घोंसले से गोश्त तलाश करने वाली बात नहीं तो और क्या है। फिर मौलवी साहिब को याद होगा कि इस से पहले भी उन्होंने

हदीस يخرج فی اٰخر الزمان دجال पर अहले हदीस 6 जनवरी 1922 ई० में एक इनाम निर्धारित किया था:-

"कि यदि तुम मिर्ज़ा साहिब क़ादियानी की रिवायत तुहफ़ा गोलड़विया में दर्ज पृष्ठ-73 किसी पुस्तक से दिखा दो तो लुधियाना का तीन सौ रुपया तुम से लिया हुआ वापस करने का वादा लिखा लो।"

जब अलफज़्ल 9 जनवरी 1922 ई० में मुकर्रमी, मख़्दूमी जनाब क़ाज़ी मुहम्मद अकमल साहिब की ओर से यह चेलेन्ज स्वीकार किया गया तो उन्हें बगले झांकने और इधर-उधर की बातें तथा चेलेन्ज के शब्द परिवर्तित करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं सूझा था। मौलवी साहिब ख़ुदा तआला के पहलवान की तरह इनाम निर्धारित करना चाहते हैं जिन से उन को कोई तुलना नहीं-

چہ نسبت خاک را باعالم پاک

देखो हज़रत 'हुज्जतुल्लाह अलल अर्ज़' (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) ने जब 'ऐजाज़-ए-अहमदी' पर दस हज़ार रुपया इनाम निर्धारित किया तो एक विशेष व्यक्ति के हाथ से पुस्तक को मौलवी साहिब के पास पहुँचाया और फिर साथ ही उसके पृष्ठ – 73 पर लिख दिया:-

"ख़ुदा तआला उन क़लमों को तोड़ देगा और उनके दिलों को कुंद कर देगा।"

अर्तात् निर्धारित अवधि के अन्दर वे इस पुस्तक का कुछ भी उत्तर नहीं लिख सकेंगे। तो उस समय मौलवी साहिब और उनके साथियों से यह न हो सका कि वे ग़लत या सही उत्तर लिख दें।

अतः उपरोक्त कारणों के आधार पर हमने इनाम की मांग पर

ज़ोर नहीं दिया और इस से हमारे उत्तर की कमज़ोरी नहीं अपितु दृढ़ता प्रकट होती है कि वे दोनों पुस्तकों को पढ़कर स्वयं निर्णय करें कि किस की पुस्तक में मूल सच्चाई पाई जाती है और किस ने झूठी कर्रवाई की है। यदि मौलवी साहिब को अपनी पुस्तक के अनुपम होने पर विश्वास था और इनाम का फैसला कराना चाहते तो आठ महीने तक क्यों खामोश रहे और अब नौवें महीने में आकर किस चीज़ ने उनके अन्दर करूणा एवं बेचैनी पैदा कर दी जिसके कारण वे उपरोक्त कुछ वाक्य लिखने पर विवश हुए।

फिर मौलवी साहिब को चाहिए था कि आप उस समय यह बहाना प्रस्तुत करते जब खाक़सार ने अलहकम 7 अगस्त 1924 में लिखा था:-

"अब हम मौलवी साहिब को कमालाते अहमदिया के उत्तर की ओर पुनः ध्यान दिलाते हैं और चेलेन्ज देते हैं कि यदि उन में कुछ साहस और हिम्मत शेष है तो इसका उत्तर लिखें।"

उस समय भी आपने मुक़ाबले पर एक अक्षर न लिखा। असल बात यह है कि मौलवी साहिब को इस बात पर हसरत है कि हमने क्यों छः माह के अन्दर उनके गुमान के विपरीत और उनके समस्त यत्नों पर पानी फेरते हुए पूर्ण एवं तार्किक उत्तर प्रकाशित करने से पहले उस थोड़ी सी मुद्दत को जिसमें हमें वह पुस्तक मिली। जज इत्यादि की शर्तें तय करने में क्यों व्यर्थ न कर दी।

और नं. 2 अर्थात् अज़ाब की ताकीद के साथ उठाने में मैंने यह उत्तर दिया:-

"हज़रत दूसरों से क़सम खिलाने की आवश्यकता नहीं। ऐतराज़

आप के हैं उत्तर मेरे हैं। मैं आप से कहता हूं कि आप ही हलफ़ मुअक्कद बिअज़ाब★ एक साल तक इस बात पर उठाएं कि उत्तर ग़लत हैं और उन उत्तरों से सारे के सारे ऐतराज़ वैसे ही स्थापित हैं जिन से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अल्लाह की ओर से होने का दावा ग़लत सिद्ध होता है और यह कि आपने ख़ुदा तआला पर इफ़्तिरा किया है।

और मैंने आप की पुस्तक का उत्तर देते हुए कमालाते अहमदिया के पृष्ठ 36 पर इल्हामों के असल शब्द लिख कर मुबाहले के लिए लिखा था जिस से आप की रूह क़ब्ज़ है। यदि आप स्वयं को सच्चा और ईमानदार समझते हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम के दावे में (नऊज़ुबिल्लाह) झूठ गढ़ने वाला समझते हैं तो क्यों मुबाहले के लिए मैदान में नहीं आते या क्यों हलफ मुअक्कद बिअज़ाब शर्तों के अनुसार नहीं खाते। मौलवी साहिब को अन्तिम सांस तक 'कमालाते अहमदिया' का खण्डन लिखने की हिम्मत नहीं हुई और इस प्रकार ऐजाज़-ए-अहमदी के निशान को संदिग्ध करने के लिए उनका मक्र व्यर्थ गया और इस से सच्चे और झूठे में एक स्पष्ट अन्तर प्रकट हो गया।

★ ऐसी क़सम जिसके झूठा होने के परिणाम स्वरूप ख़ुदा का अज़ाब उतरे

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम
व अला अब्दहिल मसीहिल मौऊद

नुज़ूलुलमसीह पुस्तक का परिशिष्ट (ज़मीमः)

6 शाबान 1320 हिज्री दिन शनिवार तदनुसार 8 नबम्बर 1902 ई० जिसके साथ दस हज़ार रुपये के ईनाम का विज्ञापन है

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَ بَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَ اَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ

(अल-आराफ: 90)

हे हमारे ख़ुदा! हम में और हमारी क़ौम में सच्चा-सच्चा फ़ैसला कर और तू ही है जो सब से अच्छा फैसला करने वाला है)

हे पाठकगण! अल्लाह तआला आप का मार्गदर्शन करे आप लोगों पर स्पष्ट हो कि इस लेख को लिखने की आवश्यकता इसलिए हुई कि ग्राम मुद्द ज़िला अमृतसर में मुंशी मुहम्मद यूसुफ़ साहिब के आग्रह पर मेरे दो वफादार मित्र एक मुबाहसे में गए। हमारी ओर से मौलवी मुहम्मद सर्वर साहिब नियुक्त हुए और प्रतिद्वन्द्वी पक्ष ने मौलवी सनाउल्लाह साहिब को अमृतसर से बुला लिया। यदि मौलवी सनाउल्लाह साहिब इस बहस में बेईमानी और झूठ से काम न लेते तो इस लेख के लिखने की आवश्यकता न होती। परन्तु चूंकि कथित मौलवी साहिब ने मेरी भविष्यवाणियों को झुठलाने में झूठ बोलने को अपना कर्तव्य समझ लिया इसलिए ख़ुदा ने मुझे इस लेख के लिखने की ओर ध्यान दिलाया ताकि हर झूठे का मुंह काला हो। हे इन्साफ़

करने वालों, हमारी पुस्तक नुज़ूलुल मसीह के पढ़ने वालों पर जिसमें डेढ़ सौ आकाशीय निशान सैंकड़ों ग़वाहों की गवाही के साथ लिखे गए हैं यह बात छुपी हुई नहीं कि मेरे समर्थन में ख़ुदा के पूर्ण एवं पवित्र निशान वर्षा के समान बरस रहें हैं और उन भविष्यवाणियों के पूरा होने के सारे गवाह एकत्र किए जाएं तो मैं सोचता हूं कि वे साठ लाख से भी अधिक होंगे। किन्तु अफसोस कि पक्षपात और संसार-पूजा एक ऐसा लानती रोग है जिससे मनुष्य देखते हुए नहीं देखता और सुनते हुए नहीं सुनता और समझते हुए नहीं समझता। मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसके हाथ मे मेरी जान है कि वे निशान जो मेरे लिए प्रकट किए गए और मेरे समर्थन में प्रकटन में आए,यदि उनके गवाह एक स्थान पर खड़े किए जाएं तो दुनिया में कोई बादशाह ऐसा न होगा कि उसकी फौज उन गवाहों से अधिक हों, तथापि इस पृथ्वी पर कैसे-कैसे गुनाह हो रहें हैं कि उन निशानों को भी लोग झुठला रहें हैं। आकाश ने भी मेरे लिए गवाही दी और पृथ्वी ने भी, परन्तु दुनिया के अधिकतर लोगों ने मुझे स्वीकार न किया मैं वही हूं जिसके समय में ऊंट बेकार हो गए और पवित्र आयत की भविष्यवाणी

(अत्तक्वीर 5) وَ اِذَا الۡعِشَارُ عُطِّلَتۡ

पूरी हुई तथा हदीस की भविष्यवाणी

وَلَيُتۡرَكَنَّ الۡقِلَاصُ فَلَا يُسۡعٰى عَلَيۡهَا

ने अपनी पूरी-पूरी चमक दिखा दी, यहां तक कि अरब और अजम (गैर अरब) के अखबारों के एडीटर्ज़ तथा पत्रिकाओं वाले भी अपने पर्चों में बोल उठे कि मदीना और मक्का के बीच रेल तैयार हो रही है। यही उस भविष्यवाणी का प्रकटन है जो क़ुर्आन और हदीस में

इन शब्दों में की गई थी कि मसीह मौऊद के समय का यह निशान है। इसी प्रकार ख़ुदा की समस्त किताबों में सूचना दी गई थी कि मसीह मौऊद के समय में ताऊन फैलेगी और हज रोका जाएगा और **पुच्छल तारा** निकलेगा तथा सातवें हज़ार के सर पर वह मौऊद प्रकट होगा जो निर्धारित है कि दमिश्क की पूर्वी दिशा में उस का प्रकटन हो और वह सदी के सर पर स्वयं को प्रकट करेगा जबकि सलीब का बहुत अधिपत्य होगा। तो आज वे सब बातें पूरी हो गईं और मेरे समर्थन में मेरे हाथ पर ख़ुदा ने बड़े-बड़े निशान दिखाए। आथम की मौत एक बड़ा निशान था जो भविष्यवाणी के अनुसार प्रकटन में आया। बारह वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में भी इसकी ओर संकेत किया गया था तथा एक हदीस भी इस घटना की सूचना दे रही थी परन्तु दुष्ट लोगों ने इस पर ठट्ठा किया और स्वीकार न किया। इस भविष्यवाणी की समयसीमा के साथ शर्त थी और भविष्यवाणी इसलिए नहीं की गई थी कि वह ईसाई है बल्कि जैसा कि इस मुबाहसे की पुस्तक में जिसका नाम ईसाईयों ने जंगे मुक़द्दस रखा है लिखा है कि इस भविष्यवाणी के करने का कारण यही था कि उसने अपनी पुस्तक, "अन्दरुना बाईबल" में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम दज्जाल रखा था। तो उसको भविष्यवाणी करने के समय लगभग सत्तर आदमियों के सामने सुना दिया गया था कि इस भविष्यवाणी का कारण यही है कि तुम ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दज्जाल कहा था तो यदि तुम इस शब्द से नहीं **लौटोगे** तो पन्द्रह महीने में मारे जाओगे। तब आथम ने उसी मज्लिस में रुजू किया और कहा कि ख़ुदा की पनाह मैंने आंजनाब की शान में ऐसा **कोई**

शब्द नहीं कहा और दोनों हाथ उठाए और जीभ मुंह से निकाली और थरथराते हुए ज़ुबान से इन्कार किया, जिसके न केवल मुसलमान गवाह हैं बल्कि चालीस से अधिक ईसाई भी गवाह होंगे। तो क्या यह **रुजू** न था और क्या उसका डरना और भविष्यवाणी की समय सीमा में उस बहस को पूर्णतया छोड़ देना जो हमेशा मेरे साथ करता था और स्वर्गीय शेख ग़ुलाम हसन साहिब रईस आज़म अमृतसर के साथ और मियां गुलाम नबी साहिब बिरादर स्वर्गीय मियां असदुल्लाह साहिब वकील अमृतसर के साथ भी किया करता था। क्या तर्क इस बात का नहीं है कि वह अवश्य डरा और क्या उसका अमृतसर को छोड़ना और गुर्बत में खामोश जीवन व्यतीत करना और अक्सर रोते रहना इस बात का प्रभाव नहीं है कि उसका दिल भयभीत और लर्जा हुआ। क्या उसका चार हज़ार रूपये की राशि देने के बावजूद क़सम न खाना हालांकि सिद्ध कर दिया गया था कि ईसाई धर्म में क़सम वैध है और स्वयं मसीह ने भी क़सम खाई तथा पोलूस ने भी इस बात का तर्क नहीं है कि वह डर गया? तो क्या अब तक दज्जाल कहने के कथन से उसका रुजू(लौटना) सिद्ध नहीं हुआ? तथा कौन सिद्ध कर सकता है कि इसके बाद उसने भविष्यवाणी की समयसीमा में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दज्जाल कहके पुकारा और फिर इसके बावजूद जैसा कि मेरी भविष्यवाणी में था झूठा सच्चे के जावन में मर जाएगा। क्या वह मेरे जीवन मे नहीं मरा? यदि भविष्यवाणी सच्ची नहीं निकली तो मुझे दिखलाओ कि आथम कहां है। और उसकी आयु मेरी आयु के बराबर थी अर्थात् लगभग चौंसठ वर्ष। यदि सन्देह हो तो उसकी पेन्शन के पेपर्स सरकारी दफ्तर में देख लो

कि कब और किस आयु में उसने पेन्शन पाई। तो यदि भविष्यवाणी सही नहीं थी तो वह क्यों मुझ से पहले मर गया। ख़ुदा की लानत उन लोगों पर जो झूठ बोलते हैं। जब इन्सान शर्म को छोड़ देता है तो जो चाहे बके उसे कौन रोकता है।

देखो लेखराम के बारे में जो भविष्यवाणी की गई थी उसमें स्पष्ट बताया गया था कि वह छ: वर्ष के अन्दर क़त्ल के द्वारा मारा जाएगा और ईद के दिन से वह दिन मिला हुआ होगा। वह कैसी सफाई से पूरी हुई, यहां तक की फ़तह अली शाह डिप्टी कलक्टर इत्यदि सम्माननीय लोगों ने जो चार हज़ार के लगभग थे महज़रनामा (उपस्थित लोगों के हस्ताक्षर सहित एक लिस्ट) तैयार करके लिख दिया कि पूरी सफाई से यह भविष्यवाणी पूर्ण हो गई, हालांकि ये लोग विरोधी जमाअत में से थे, परन्तु फिर भी ये ख़ुदा से न डरने वाले नाम के मौलवी मानते नहीं। इन्ही के प्रतिष्ठित भाईयों के हाथ की लिखी हुई गवाहियां मौजूद हैं बल्कि उस महज़रनामा (उपस्थित लोगों की लिस्ट) में बहुत से हिन्दु भी हैं परन्तु फिर भी द्वेष एक ऐसी चीज़ है कि मनुष्यों को अन्धा कर देती है ये भविष्यवाणियां ऐसी हैं कि एक ईमानदार के उनको सुनकर आंसू जारी हो जाऐंगे परन्तु फिर भी ये लोग कहते हैं कि कोई भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। यह नहीं सोचते कि अन्त में हमने भी एक दिन मरना है। वे निशान जो उनको दिखाए गए यदि **नूह** की क़ौम को दिखाए जाते तो वह न डूबती और यदि **लूत** की क़ौम उन से सूचित होती तो उन पर पत्थर न बरसते, परन्तु ये लोग सूर्य को देखते हैं और कहते हैं कि रात है ये तो यहूदियों से भी बढ़ गए। ख़ुदा के निशानों को झुठलाना आसान

नहीं तथा किसी युग में इसका अंजाम अच्छा नहीं हुआ तो अब क्या अच्छा हो जाएगा। परन्तु इस युग में नास्तिकता फैल गई और दिल कठोर हो गए तथा नहीं डरते। मैं इन लोगों की किस से उपमा दूं। ये लोग उस अन्धे के समान है जो **सूर्य** के अस्तित्व से इन्कार करता है और अपने अन्धेपन से होशियार नहीं होता ये लोग उन यहूदियों और ईसाइयों की तरह हैं जो ख़ुदा के उन सैंकड़ों समर्थन और चमत्कार जो आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रकट हुए नहीं देखते तथा उहद की लड़ाई और हुदैविया के क़िस्से को प्रस्तुत करते हैं और हज़रत ईसा के बारे में भी यहूदियों का यही हाल है।

वर्तमान समय में एक यहूदी की पुस्तक प्रकाशित हुई हैं जो इस समय मेरे पास मौजूद है मानो वह मुहम्मद हुसैन या सनाउल्लाह की लिखी हुई है। वह अपनी पुस्तक में लिखता है कि उस व्यक्ति अर्थात् ईसा से एक चमत्कार भी प्रकटन में नहीं आया न उसकी कोई भविष्यवाणी सच्ची निकली। वह कहता था कि दाऊद का तख़्त मुझे मिलेगा कहां मिला। वह कहता था कि बारह द्वारा स्वर्ग में बारह तख्त पाऐंगे, कहां बारह को वे तख़्त मिले। यहूदा इस्कियूति तीस रुपये लेकर उस से अवज्ञाकारी हो गया और हवारियों में से काटा गया और पतरस ने तीन बार उस पर लानत भेजी। क्या वह तख़्त के योग्य रहा और कहता था कि इस युग के लोग अभी नहीं मरेंगे कि मैं वापस आ जाऊंगा, कहां वापस आया। फिर यहूदी लिखता है कि इस व्यक्ति के झूठा होने पर यही पर्याप्त है कि मलाकी नबी की पुस्तक में हमें ख़बर दी गई थी कि सच्चा मसीह जो यहूदियों में आने वाला था वह हरगिज़ नहीं आएगा जब तक इल्यास नबी दोबारा

दुनिया में न आ जाए। तो इल्यास आकाश से कहां उतरा फिर इस जगह बहुत शोर मचाता है और लोगों के सामने अपील करता है कि देखो मलाकी नबी की पुस्तक में भविष्यवाणी तो यह थी कि स्वयं इल्यास दुनिया में दोबारा आ जाएगा और यह व्यक्ति यूहन्ना को (जो मुसलमानो में भी यह्या के नाम से प्रसिद्ध है) इल्यास बताता है मानो उसका मसील (समरूप) ठहराता है परन्तु ख़ुदा ने तो हमें मसील की ख़बर नही दी। उसने तो स्पष्ट तौर पर कहा था कि स्वयं इल्यास दोबारा आ जाएगा और हम क़यामत को यदि पूछे भी जाएं तो यही किताब ख़ुदा के सामने प्रस्तुत कर देंगे कि तूने कहां लिखा था कि मसीह मौऊद से पूर्व इल्यास का मसील भेजा जाएगा और उन लेखों के बाद हज़रत मसीह के बारे बहुत गालियां देती है। किताब मौजूद है जो चाहे देख ले।

अब बताओ कि इस यहूदी और मौलवी मुहम्मद हुसैन और मियां सनाउल्लाह का दिल परस्पर **समान** हैं या नहीं। मेरी किसी भविष्यवाणी के विरुद्ध होने के बारे में कितना झूठ बोलते हैं हालांकि एक भी भविष्यवाणी झूठी नहीं निकली, बल्कि समस्त भविष्यवाणियां सफाई से पूरी हो गई। शर्त वाली भविष्यवाणियां शर्त के अनुसार पूरी हुईं और होंगी और जो भविष्यवाणियां बिना शर्त थीं जैसा कि लेखराम के बारे में भविष्यवाणी वे उसी प्रकार पूरी हो गईं। यह तो मेरी भविष्यवाणियों की अटल वास्तविकता है परन्तु जो उस यहूदी विद्वान ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों पर ऐतराज़ किए हैं वे बहुत बड़े ऐतराज़ हैं बल्कि वे ऐसे कठोर हैं कि उनका तो हमें भी उत्तर नहीं आता। और यदि मौलवी सनाउल्लाह या मौलवी

मुहम्मद हुसैन या कोई पादरी सज्जनों में से उन ऐतराज़ों का उत्तर दे सके तो हम एक सौ रुपया नक़द बतौर इनाम उसके सुपुर्द करेंगा। ख़ुदा कहला कर भविष्यवाणियों का यह हाल, इस से तो हमें भी आश्चर्य है। ऐसी भविष्यवाणियों पर तो नस्ख (निरास्त होना) भी जारी नहीं हो सकता ताकि समझा जाए कि वह निरास्त हो गई थीं। हां अजाब के वादे की भविष्यवाणियां जैसा कि आथम की भविष्यवाणी या अहमद बेग के दामाद की भविष्यवाणी ऐसी भविष्यवाणियां हैं जिन की क़ुर्आन और तौरात की दृष्टि से देर भी हो सकती है और उन का स्थग़न (टलना) उनके झूठे होने को अनिवार्य नहीं क्योंकि ख़ुदा अपने अज़ाब के वादे को रोकने पर अधिकार रखता है जैसा कि मुसलमानों और ईसाइयों की यही आस्था है। क्योंकि यूनुस नबी की भविष्यवाणी जो अज़ाब के लिए थी उसके साथ तोबः इत्यदि की कोई शर्त नहीं थी तब भी अज़ाब टल गया और कोई मुसलमान या ईसाई नहीं कह सकता कि यूनुस झूठा था। देखो किताब यूना नबी और दुर्रे मन्सूर।

अब कितने आश्चर्य का स्थान है कि मेरे विरोधी मुझ पर वह ऐतराज़ करते हैं जिसकी दृष्टि से उनको इस्लाम ही से हाथ धोना पड़ता है। यदि उनके दिल में संयम होता तो ऐसे ऐतराज़ कभी न करते जिनमें दूसरे नबी अधिक भागीदार हैं। फिर आश्चर्य यह कि हज़ारों भविष्यवाणियों पर जो बिल्कुल सफाई से पूरी हो गईं उन पर दृष्टि नहीं डालते और यदि कोई एक भविष्यवाणी अपनी मूर्खता से समझ में न आए तो उसे बार-बार प्रस्तुत करते हैं। क्या यह ईमानदारी है। यदि उनको सच की अभिलाषा होती तो उनके लिए फैसला करने का तरीका आसान था कि वे स्वयं क़ादियान में आते और मैं उनके

आने-जाने का ख़र्च भी दे देता और उनको बतौर मेहमानों के रखता। तब वे दिल खोलकर अपनी पूरी तसल्ली कर लेते। दूर बैठकर पूरी सच्चाई की पूछताछ किए बिना ऐतराज़ करना मूर्खता या द्वेष के अतिरिक्त इसका अन्य क्या कारण हो सकता है। इसी प्रकार के मूर्ख एक बार पांच सौ के लगभग हज़रत मसीह से मुर्तद हो गए थे कि इस व्यक्ति की भविष्यवाणियां सही नहीं निकलीं। और वास्तव में यहूदा इस्कियूति के मुर्तद होने का भी यही कारण था कि खुले तौर पर हथियार भी ख़रीदे गए थे परन्तु बात सब कच्ची रही और दाऊद के तख़्त वाली भविष्यवाणी पूरी न हुई। अन्ततः यहूदा खिन्न होकर मुर्तद हो गया। मसीह को यह भी ख़बर न हुई कि यह बेईमान हो जाएगा और अकारण उसके लिए भी स्वर्ग के तख़्त का वादा किया। इसी प्रकार कुछ विरोधियों ने हुदैबिया के सफर पर ऐतराज़ किया कि यह भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई और इतना लम्बा सफर बताता था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तबीयत का रुझान इसी ओर था कि उनको काबः के तवाफ़ के लिए इजाज़त दी जाएगी जैसा कि भविष्यवाणी थी। इस पर कुछ बदक़िस्मत मुर्तद हो गए और हज़रत उमर रज़िः कुछ दिन आज़मायश में रहे और अन्ततः इस ग़लती की माफी के लिए कई नेक कार्य किए जैसा कि उनके कथन से स्पष्ट है। बदकिस्मत लोगों के लिए ये नमूने मौजूद हैं परन्तु फिर भी इस समय के मुर्ख विरोधी दुर्भाग्य की ओर ही दौड़ते हैं और दुर्भाग्य सर पर सवार है, रुकते नहीं। क्या-क्या ऐतराज़ बना रखे हैं। उदाहरणतया कहते हैं कि मसीह मौऊद का दावा करने से पहले बराहीन अहमदिया में ईसा अलैहिस्सलाम के आने का इक़रार मौजूद

है। हे मुर्खों! अपना अंजाम क्यों खराब करते हो। उस इक़रार में कहां लिखा है कि यह ख़ुदा की वह्यी से वर्णन करता हूं और मुझे कब इस बात का दावा है कि मैं अन्तर्यामी हूं। जब तक मुझे ख़ुदा ने इस ओर ध्यान न दिलाया और बार-बार न समझाया कि तू मसीह मौऊद है और ईसा मृत्यु पा गया है तब तक मैं उसी आस्था पर क़ायम था जो तुम लोगों की आस्था है। इसी कारण से पूर्ण सादगी से मैंने हज़रत मसीह के दोबारा आने के बारे में बराहीन में लिखा है। जब ख़ुदा ने मुझ पर असल वास्तविकता खोल दी तो मैं इस आस्था से रुक गया मैंने पूर्ण विश्वास के साथ जो मेरे दिल पर छा गया और मुझे प्रकाश से भर दिया उस रस्मी आस्था को न छोड़ा। हालांकि उसी बराहीन में मेरा नाम ईसा रखा गया था और मुझे खातमुल-खुलफ़ा ठहराया गया था और मेरे बारे में कहा गया था कि तू ही सलीब को तोड़ेगा और मुझे बताया गया था कि तेरी ख़बर क़ुर्आन और हदीस में मौजूद है और तू ही इस आयत का चरितार्थ है कि-

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ بِالۡہُدٰی وَ دِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡہِرَہٗ
عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّہٖ وَ لَوۡ کَرِہَ الۡمُشۡرِکُوۡنَ (अस्सफ़्फ- 10)

तथापि यह इल्हाम बराहीन अहमदिया में खुले-खुले तौर पर दर्ज था। ख़ुदा की नीति ने मेरी नज़र से गुप्त रखा और इसी कारण से इसके बावजूद कि बराहीन अहमदिया में साफ और स्पष्ट तौर पर मुझे मसीह मौऊद ठहराया गया था परन्तु फिर भी मैंने इस भूल के कारण जो मेरे दिल पर डाला गया हज़रत ईसा के दोबारा आने की आस्था बराहीन अहमदिया में लिख दी। तो मेरी पूरी सादगी और भूल पर यह प्रमाण है कि बराहीन अहमदिया में दर्ज ख़ुदा की वह्यी तो

मुझे मसीह मौऊद बनाती थी परन्तु मैंने उस पारम्परिक आस्था को बराहीन में लिख दिया। मैं स्वयं आश्चर्य करता हूं कि मैने खुली-खुली वह्यी के बावजूद जो बराहीन अहमदिया में मुझे मसीह मौऊद बनाती थी इसी पुस्तक में यह परम्परागत आस्था क्योंकर लिख दी।

फिर मैं लगभग बारह वर्ष तक जो एक लम्बा समय है इस से सर्वथा बेखबर और लापरवाह रहा कि ख़ुदा ने मुझे ज़ोर शोर से बराहीन में मसीह मौऊद ठहरा दिया है और मैं हज़रत ईसा के दोबारा आगमन की परम्परागत आस्था पर जमा रहा। जब बारह वर्ष गुज़र गए तब वह समय आ गया कि मुझ पर असल वास्तविकता खोल दी जाए। तब निरन्तरता से इस बारे में इल्हाम आरंभ हुए कि **तू ही मसीह मौऊद** है।

तो जब इस बारे में ख़ुदा की वही चरमोत्कर्ष पर पहुंची और मुझे आदेश हुआ कि فاصدع بما تومر अर्थात् जो तुझे आदेश होता है वह खोलकर लोगों को सुना दे और मुझे बहुत से निशान दिए गए तथा मेरे दिल में प्रकाशमान दिन की तरह विश्वास बिठा दिया गया, तब मैंने लोगों को यह सन्देश सुना दिया। ख़ुदा की यह नीति मेरी सच्चाई का एक प्रमाण था और मेरी सादगी और बनावट न होने पर एक निशान था। यदि यह कारोबार मनुष्य का होता और इसकी बुनियाद मानवीय योजना होती तो मैं बराहीन अहमदिया के समय में ही यह दावा करता कि मैं मसीह मौऊद हूं, परन्तु ख़ुदा ने मेरी नज़र को फेर दिया। मैं बराहीन की उस वह्यी को न समझ सका कि वह मुझे मसीह मौऊद बनाती है। यह मेरी सादगी थी जो मेरी सच्चाई पर एक महान प्रमाण था अन्यथा मेरे विरोधी मुझे बताएं कि मैंने

इसके बावजूद कि बराहीन अहमदिया में मसीह मौऊद बनाया गया था बारह वर्ष तक यह दावा क्यों न किया और क्यों बराहीन में ख़ुदा की वह्यी के विरुद्ध लिख दिया। क्या यह बात ध्यान देने योग्य नहीं जो प्रकटन में आई। क्या यह बेईमानी का तरीका नहीं कि बराहीन अहमदिया की उस इबादत को तो प्रस्तुत करते हैं जहां मैंने मामूली और पारम्परिक आस्था की दृष्टि से मसीह के दोबारा आगमन का वर्णन किया है और यह प्रस्तुत नहीं करते कि उसी बराहीन अहमदिया में मसीह मौऊद होने का दावा भी मौजूद है यह एक बारीक तर्क है जो ख़ुदा ने बराहीन अहमदिया में मेरे लिए तैयार कर रखा है। एक शत्रु भी गवाही दे सकता है कि बराहीन अहमदिया के समय में मैं इस से बेखबर था कि मै मसीह मौऊद हूं। तभी तो मैंने उस समय यह दावा न किया। तो वे इल्हाम जो मेरी अज्ञानता के समय में मुझे मसीह मौऊद ठहराते हैं उनके बारे में कैसे सन्देह हो सकता है कि वे मनुष्य का मनगढ़त झूठ हैं। क्योंकि यदि वे मेरा बनाया हुआ झूठ होते तो मैं उसी बराहीन में उनसे लाभ प्राप्त करता और अपना दावा प्रस्तुत न करता तथा क्योंकर संभव था कि मैं उसी बराहीन में यह भी लिख देता कि ईसा अलैहिस्सलाम दोबारा संसार में आएगा। इन दोनों, एक-दूसरे के विपरीत विषयों का एक ही पुस्तक में जमा होना और मेरा उस समय मसीह मौऊद होने का दावा न करना एक न्यायवान जज को इस राय को व्यक्त करने के लिए विवश करता है कि वास्तव में मेरे दिल को ख़ुदा की उस वह्यी की ओर से लापरवाही रही जो मेरे मसीह मौऊद होने के बारे में बराहीन अहमदिया में मौजूद थी। इसलिए मैंने इन परस्पर विपरीत बातों को बराहीन में जमा कर दिया।

यदि बराहीन अहमदिया में केवल यह वर्णन होता कि वही ईसा अलैहिस्सलाम दोबारा संसार में आएगा और मेरे मसीह मौऊद होने के बारे में कुछ वर्णन न होता तो यद्यपि एक जल्दबाज़ इस कलाम से कुछ लाभ उठा सकता था और कह सकता था कि बराहीन अहमदिया से बारह वर्ष बाद उस पहली आस्था को क्यों छोड़ दिया गया। यद्यपि ऐसा कहना भी व्यर्थ था क्योंकि अंबिया और मुल्हम लोग केवल वह्यी के सच्चाई के ज़िम्मेदार होते हैं अपने विवेचन के झूठ और घटना के विपरीत निकलने से वे पकड़े नहीं जा सकते। क्योंकि वह उनकी अपनी राय है न कि ख़ुदा का कलाम। फिर भी जन सामान्य के आगे यह धोखा प्रस्तुत किया था सकता था परन्तु अब तो ऐसे अधम आरोप को कदम रखने का स्थान नहीं। क्योंकि उसी बराहीन अहमदिया में दावे की अभिव्यक्ति से बारह वर्ष पूर्व जगह-जगह मुझे मसीह मौऊद ठहराया गया है। और बुद्धिमान के आगे मेरी सच्चाई के लिए यह अतयन्त स्पष्ट प्रमाण है।

अतः बराहीन अहमदिया में हज़रत ईसा के दोबारा आगमन का वर्णन एक मूर्ख को उस समय धोखा दे सकता था जबकि बराहीन अहमदिया में मेरे मसीह मौऊद होने के बारे में कुछ वर्णन न होता, परन्तु वह वर्णन तो ऐसा स्पष्ट था कि लुधियाना के मौलवियों मुहम्मद अब्दुल अज़ीज़ और अब्दुल्लाह ने उसी समय में ऐतराज़ किया था कि यह व्यक्ति अपना नाम **ईसा** रखता है और ईसा के बारे में जितनी भविष्यवाणियां है वे सब अपनी ओर सम्बद्ध करता है और उन का उत्तर मौलवी मुहम्मद हुसैन ने अपने रीव्यू में दिया था कि यह आरोप व्यर्थ है क्योंकि उसी बराहीन में हज़रत ईसा के दोबारा आगमन का

इक़रार भी मौजूद है।

अतः मैं ख़ुदा की नीतियों पर क़ुर्बान हूं कि कैसे उत्तम तौर पर पहले से मेरे बरी होने का सामान बराहीन अहमदिया ने तैयार कर रखा। यदि बराहीन अहमदिया में हज़रत ईसा के दोबारा आने का कुछ भी वर्णन न होता तो वह शोर जो बर्षों बाद पड़ा और कुफ्र के फ़त्वे तैयार हुए यह शोर उसी समय पड़ जाता। और यदि बराहीन अहमदिया में केवल हज़रत मसीह के दोबारा आने का वर्णन होता और मेरे मसीह मौऊद होने के इल्हाम उसमें वर्णन न होते तो मुर्खों के हाथ में एक तर्क आ जाता कि बराहीन अहमदिया में तो हज़रत ईसा के दोबारा आने का इक़रार था और फिर बारह वर्ष के पश्चात् उसके आने से इन्कार क्यों किया गया। परन्तु एक ओर ख़ुदा की वह्यी का बराहीन अहमदिया में मुझे मसीह मौऊद ठहराना और एक ओर इसके विरुद्ध मेरी क़लम से परम्परागत आस्था के तौर पर मसीह के दोबारा आने का वर्णन होना यह ऐसी बात है कि बुद्धिमान इस से समझ सकता है कि यह ख़ुदा की विशेष नीति है। अतः ख़ुदा की नीति ने मुझे इस ग़लती का करने वाला करके कि मैने ईसा के दोबारा आने की उसी किताब में चर्चा कर दी, जहां मेरे मसीह मौऊद होने की चर्चा थी। मेरी सादगी और झूठ न बांधने को प्रकट कर दिया, अन्यथा क्या सन्देह था कि वह सब इल्हाम जो बराहीन अहमदिया में लिखे हैं जो मुझे मसीह मौऊद बनाते हैं वे सब झूठ गढ़ने पर चीरतार्थ होते। और यह बात तो कोई सद्बुद्धि स्वीकार नहीं करेगी कि मसीह मौऊद होने का जो दावा बराहीन अहमदिया से बारह वर्ष पश्चात् प्रस्तुत किया गया उसकी योजना इतने समय पहले बना रखी थी। अतः उसी पुस्तक

में जिसमें मेरे मसीह मौऊद होने की चर्चा है हज़रत ईसा के दोबारा आने की भी चर्चा होती। यही मेरी सादगी और इफ़्तिरा न करने पर एक जीवित गवाह है।

अफसोस कि हमारे विरोधियों की बुद्धि कुछ ऐसी मारी गई है कि वे प्रत्येक बात की एक टांग ले लेते है और दूसरी छोड़ देते हैं। आथम ईसाई के वर्णन के समय शर्त का नाम नहीं लेते और उस का भविष्यवाणी के अनुसार मर जाना और क़ब्र में दाखिल हो जाना जो पहले से वर्णन किया गया था ज़ुबान पर नहीं लाते। तो जिन घटनाओं से सिद्ध होता है कि आथम ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दज्जाल कहने से रुजू किया उन घटनाओं का नाम नहीं लेते। क्या मजाल कि उन घटनाओं की ओर संकेत भी करे।, सब खा जाते हैं। और जब अहमद बेग के दामाद की चर्चा करते हैं तो लोगों को हरग़िज़ नहीं बताते कि उस भविष्यवाणी का एक भाग समय सीमा के अन्दर पूरा हो चुका है अर्थात् अहमद बेग समय सीमा के अन्दर मर गया। और दूसरा भाग प्रतीक्षा योग्य है। और यह भी नहीं बताते कि अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी के बारे में और यह कि शर्त वाली थी जैसा कि इल्हाम تـوبی تـوبی انّ البـلاء عـلیٰ عقبـك से प्रकट होता है जो कई बार प्रकाशित हो चुका था और स्पष्ट है कि ऐसी मृत्यु के बाद जो अहमद बेग की मृत्यु थी डर संलग्न होना एक स्वाभाविक बात थी तो उसी डर से दूसरे भाग के पूरा होने में विलम्ब हो गया जैसा कि आज़ाब के वादे वाली भविष्यवाणियों में ख़ुदा की आदत है। परन्तु ये अशुभ चिन्तक विरोधी इन बातों की कभी चर्चा भी नहीं करते और यहूदियों की तरह असल स्थिति को बिगाड़ कर

ऐसे तौर से वर्णन करते हैं जिस से मुर्खों के दिलों में सन्देह पैदा कर दें बल्कि इन लोगों ने तो यहूदियों के भी कान काटे क्योंकि ये लोग तो बात-बात में झूठ से काम लेते हैं जैसा कि मौलवी सनाउल्लाह ने मुद्द गावं की बहस में यही कार्रवाई की और धोखा देकर कहा कि देखो इस व्यक्ति ने अपनी एक भविष्यवाणी में लिखा था कि लड़का पैदा होगा परन्तु लड़की पैदा हुई और बाद में लड़का पैदा होकर मर गया और भविष्यवाणी झूठी निकली।

अब इन भले मानुसों से कोई पूछे कि यदि तुम्हारे बयान में कोई बेईमानी और झूठ नहीं तो तुम वह प्रकाशित किया हुआ इल्हाम प्रस्तुत करो जिसमें ख़ुदा ख़बर देता हो कि अब की बार अवश्य लड़का पैदा होगा या यह ख़बर देता हो कि लड़की के बाद पैदा होने वाला वही मौऊद लड़का है न कि कोई और। यदि हमने यह विचार भी किया हो कि शायद यह लड़का वही हो तो हमारा विचार क्या चीज़ है जब तक खुली-खुली ख़ुदा की वह्यी न हो। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने नफ़्स के विचार से यह गुमान किया था कि मेरी हिजरत यमामा की ओर होगी परन्तु वह विचार सही न निकला और अन्त में मदीना की तरफ हिजरत हुई। और यदि भविष्यवाणी में यह अवश्य था कि पहले गर्भ से ही वह लड़का पैदा होगा तो ख़ुदा की वह्यी में यह शब्द होने चाहिए थे परन्तु क्या कोई दिखा सकता है कि वह्यी में कोई ऐसा शब्द था देखो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में बनी इस्राईल के कई नबियों ने भविष्यवाणियां की थीं कि वह पैदा होगा परन्तु बहुत से नबियों के आने के बाद सब के अन्त में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवतरित हुए। अब

क्या कोई ऐतराज़ कर सकता है कि उन नबियों की भविष्यवाणियां झूठी निकली क्योंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मूसा के बाद पूरे दो हज़ार वर्ष गुज़रने के बाद पैदा हुए। हालांकि तौरात की भविष्यवाणी की दृष्टि से यहूदी सोचते थे कि वह नबी शीघ्र पैदा हो जाएगा। और ऐसा न हुआ बल्कि बीच में कई नबी आए। तो ऐसे आरोप या तो पागल करते हैं या बहुत ही दुष्ट मनुष्य जिसको ख़ुदा का डर नहीं।

यही बातें मौलवी सनाउल्लाह ने मुद्द के स्थान पर मुबाहसे में प्रस्तुत की थीं इन बातों से प्रत्येक ख़ुदा से डरने वाला समझ सकता है कि इन मौलवियों की नौबत कहां तक पहुंच गई है। कि वे पक्षपात के जोश से मिन्हाज़-ए-नुबुव्वत (नुबुव्वत की पद्धति) की ओर उस मापदण्ड को जो नबियों की पहचान के लिए निर्धारित है दृष्टिगत नहीं रखते और उनका प्रत्येक आरोप सर्वथा झूठ और शैतानी योजना होती है। यदि ये सच्चे है तो क़ादियान में आकर किसी भविष्यवाणी को झूठा तो सिद्ध करें और प्रत्येक भविष्यवाणी के लिए एक-एक सौ रूपया इनाम दिया जाएगा और आने-जाने का किराया अलग। परन्तु इस जांच-पड़ताल के समय सच और झूठ का मापदण्ड मिन्हाज़-ए-नुबुव्वत को बनाएं। मैं निस्सन्देह कहता हूं यदि मेरे चमत्कार और भविष्यवाणियां उन के नज़दीक सही नहीं तो उनको समस्त नबियों का इन्कार करना पड़ेगा और अन्त में उनकी मौत कुफ्र पर होगी।

अफसोस कि ये लोग ख़ुदा से नहीं डरते उनके दामन में झूठ की गन्दगी के ढेर के ढेर हैं। ईसाइयों और यहूदियों का अनुकरण करते हैं ईसाई कहां करते थे कि यदि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के लिए पवित्र क़ुर्आन में विजय की भविष्यवाणी की गई थी तो आपने युद्ध क्यों किए और शत्रुओं का बहानों और यत्नों से क़त्ल क्यों किया। आज इस प्रकार के आरोप ये प्रस्तुत कर रहें हैं उदाहरणतया कहते हैं कि अहमद बेग की लड़की के लिए उनकी दिलजोई के लिए बहानों से क्यों कोशिश की गई और क्यों अहमद बेग की और ऐसे पत्र लिखे गए। परन्तु अफसोस कि ये दोनों अर्थात् ईसाई और ये नए यहूदी यह नहीं समझते कि भविष्यवाणियों में वैध कोशिश को अवैध नहीं कहा गया। जिस व्यक्ति को ख़ुदा यह ख़बर दे कि अमुक रोगी अच्छा हो जाएगा उसको मना नहीं है कि वह दवा भी करे क्योंकि शायद दवा के द्वारा अच्छा होना प्रारब्ध हो। अतः ऐसी कोशिश करना न ईसाइयों और यहूदियों के नज़दीक मना है न इस्लाम में। मौलवी सनाउल्लाह ने इसी मुद्द के मुबाहसे में यह आरोप भी प्रस्तुत किया है कि जो अपमान की भविष्यवाणी मुहम्मद हुसैन, जाफर ज़टल्ली और उनके दूसरे दोस्त के बारे में की गई थी वह पूरी नहीं हुई। यदि ये लोग ऐसे आरोप न करते तो फिर यहूदियों से समानता कैसे होती। मेरे नज़दीक आवश्यक था कि ऐसे आरोप होते। हे भले मानस जिस हालत में इसी मुक़द्दमे के बीच में मौलवी मुहम्मद हुसैन का वह पत्र पकड़ा गया जो कुफ्र के फ़त्वे के विरुद्ध है। तो क्या एक अलिमाना हैसियत की दृष्टि से उसका अपमान और अनादर नहीं हुआ। अर्थात् मेरे मुकाबले पर तो उसने इशाअतुस्सुन्नः में महदी मौऊद का इन्कार कुफ्र ठहराया और शोर मचाया कि यह व्यक्ति इस्लाम की मान्य आस्था के विपरीत है और सच यही है कि महदी मौऊद प्रकट होगा और मसीह आकाश से उतरेगा। फिर सरकार

को प्रसन्न करने के लिए महदी का इन्कार कर दिया। उसकी वह पत्रिका पकड़ी गई और उस पर उसी के भाईयों का कुफ्र का फ़त्वा भी लगाया गया। अब कहो कि इस कपट से भरी कार्रवाई से उसका सम्मान हुआ या अपमान। अपमान केवल इसी का नाम नहीं कि भरे बाज़ार में किसी के सर पर जूते पड़ें बल्कि जो व्यक्ति मौलवी और मुत्तकी (संयमी) होने का दावा करता है उसका छलपूर्ण आचरण यदि सिद्ध हो जाए तो इस से बढ़कर उसका कोई अपमान नहीं मुनाफ़िक़ से अधिक अपमानित और कोई नहीं होता

إِنَّ الْمُنَافِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَن تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا

(अन्निसा - 146)

यह कितना स्याही का टीका है कि लोगों के सामने वर्णन करना कि महदी का आना सच है और इन्कार कुफ्र है। और खूब लड़ाइयां होंगी तथा सरकार को प्रसन्न करने के लिए यह कहना कि यह सब झूठ है। यदि अब भी अपमान नहीं हुआ तो हमें इक़रार करना पड़ेगा कि आप लोगों के सम्मान एक भुरभुरी ज़मीन से भी अधिक मज़बूत है कि किसी दुराचार से उनमें अन्तर नहीं आता। रहा सम्मान जाफर ज़टल्ली का, तो इन लोगों का कोई स्थाई अस्तित्व नहीं ये सब मौलवी मुहम्मद हुसैन के प्रतिबिम्ब हैं वह इनका वकील जो हुआ जबकि उनके वकील का अपमान सिद्ध हो गया तो क्या इनका अपमान पीछे रह गया। प्रतिबिम्ब (छाया) असल का हमेशा पीछे होता है जबकि असल वृक्ष ही गिर पड़ा तो छाया क्योंकर खड़ी रह सकती है। अब भी यदि किसी को सन्देह हो तो मौलवी मुहम्मद हुसैन के दोनों बयान मेरे पास मौजूद हैं। एक बयान तो क़ौम को खुश करने के लिए और

दूसरा बयान सरकार को खुश करने के लिए वे दोनों अपनी आँखें से देख ले और फिर स्वयं इन्साफ करे कि मौलवी कहलाकर और एक ख़ुदा को मानने वालों का वकील बन कर यह कपटाचारियों जैसी कार्रवाई। क्या यह सम्मान का कारण है या अपमान का।

हमने तो इस युग में यहूदी देख लिए और हम ईमान लाए कि आयत غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ इसी बात की ओर संकेत करती थी कि इस क़ौम में भी मग़ज़ूब अलैहिम यहूदी अवश्य पैदा होंगे तो वे हो गए और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी पूरी हो गई। परन्तु यह उम्मत क्या ऐसी ही दुर्भाग्यशाली है कि इनकी तकदीर में यहूदी बनना ही लिखा था। इस कृत्य को हम कृपालु ख़ुदा की ओर कभी सम्बद्ध नहीं कर सकते कि धिक्कारे हुए यहूदी बनने के लिए तो यह उम्मत और मसीह, बनी इस्राईल से आए। ऐसी कार्रवाई से तो इस उम्मत की नाक कटती है और इस उपाधि के योग्य नहीं रहती कि उसको उम्मते मरहूम कहा जाए। तो इस उम्मत का यहूदी बनना जैसा कि आयत

(अलफ़ातिहा - 7) غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ

से समझा जाता है इस बात को चाहता है कि غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ यहूदियों के मुकाबले पर आया था उसका मसील (स्वरुप) भी इस उम्मत में से आए। इसकी ओर तो इस आयत का संकेत है-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

(अलफ़ातिहा - 6,7)

अफसोस कि वह हदीस भी इसी युग में पूरी हुई जिस में लिखा था कि मसीह के युग के उलेमा उन सब लोगों से अधिक बुरे होंगे

जो पृथ्वी पर रहते होंगे और पहले यहूदियों पर हम क्या अफसोस करे वे तो आरोप के समय ख़ुदा की किताब को प्रस्तुत करते थे यद्यपि कि मायने नहीं समझते थे परन्तु ये लोग केवल मनगढ़त बातें प्रस्तुत करते हैं और यहूदी तो केवल ईसा के मामले में तथा उनकी भविष्यवाणियों के बारे में ऐसे सुदृढ़ आरोप रखते हैं कि हम भी उनका उत्तर देने में हैरान हैं सिवाए इसके कि कह दें कि ईसा अवश्य नबी है क्योंकि क़ुर्आन ने उसको नबी ठहराया है और कोई तर्क उनकी नुबुव्वत पर क़ायम नहीं हो सकता बल्कि नुबुव्वत के खण्डन पर कई तर्क क़ायम हैं। क़ुर्आन का यह उन पर उपकार है कि उनको भी नबियों के रजिस्टर में लिख दिया। इसी कारण से हम उन पर ईमान लाए कि वह सच्चे नबी हैं और चुने हुए हैं। और उन झूठे आरोपों से निर्दोष है जो उन पर और उनकी मां पर लगाए गए हैं। पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध होता है कि उन झूठे बड़े आरोप दो थे।

(1) प्रथम यह कि उनकी पैदायश नऊज़ुबिल्लाह लानती है। अर्थात् अवैध तौर पर पैदा हुए।

(2) द्वितीय यह कि उनकी मृत्यु भी लानती है क्योंकि वह सलीब द्वारा मरे हैं और तौरात में लिखा था कि जो व्यभिचार से पैदा हो वह लानती है वह स्वर्ग में हरगिज़ दाखिल नहीं होगा और उसका ख़ुदा की ओर रफा नहीं होगा। और ऐसा ही यह भि लिखा था कि जो लकड़ी पर लटका दिया जाये अर्थात जिसकी सलीब के द्वारा मौत हो वह भी लानती है और उसका भी खुदा की तरफ रफा नहीं होगा ये दोनों आरोप बहुत कठोर थे। ख़ुदा ने पवित्र क़ुर्आन में इन दोनों आरोपों का एक ही स्थान पर उत्तर दिया है और वह यह है

وَّ بِكُفْرِهِمْ وَ قَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا وَّ قَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَ مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ وَ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ

(अन्निसा - 157-158)

इस आयत में दोनों वाक्यों का उत्तर है और आयत का ख़ुलासा यह है कि न तो ईसा की पैदायश अवैध है और न वह सलीब पर मरा बल्कि धोखे से समझ लिया गया कि वह मर गया है। इसलिए वह मक़्बूल है और उसका अन्य नबियों की तरह ख़ुदा की तरफ रफा हो गया है। अब कहां है वे मौलवी जो आकाश पर हज़रत ईसा का शरीर पहुंचाते हैं। यहां तो सब झगड़ा उनकी रूह के बारे में था शरीर से उसका कुछ संबंध नहीं।

अत: पवित्र क़ुर्आन ने हज़रत मसीह को सच्चा ठहराया है परन्तु अफ़सोस से कहना पड़ता है कि उनकी भविष्यवाणियों पर यहूदियों के कड़े आरोप हैं जिन का हम किसी प्रकार निवारण नहीं कर सकते। केवल क़ुर्आन के सहारे से हमने मान लिया है और सच्चे दिल से स्वीकार किया है और इसके अतिरिक्त हमारे पास उनकी नुबुव्वत पर कोई भी तर्क नहीं हैं। ईसाई तो उनकी खुदाई को रोते हैं परन्तु यहां उनकी नुबुव्वत भी सिद्ध नही हो सकती अफसोस किस के सामने यह मातम ले जाएं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तीन भविष्यवाणियां स्पष्ट तौर पर झूठी निकलीं और आज कौन पृथ्वी पर है जो इस गुत्थी को हल कर सके उन लोगों पर अफ़सोस है जो मेरे मामले में सच को झूठ बना रहे हैं। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़ुदा तआला की बड़ी कृपा है कभी वह व्यक्ति लोगों के सामने

शर्मिन्दा नहीं होगा जो इस मक्बूल नबी का सच्चा आज्ञाकारी है। मैं उन मूर्खों को क्या कहूं और क्योंकर उनके दिल में सच्चाई का प्रेम डाल दूं जो भांडों की तरह फिरते हैं और हसी-ठट्ठा उन का काम है और उपहास करना उनका आचरण है। सैकड़ों निशान सूर्य के समान चमक रहें है, परन्तु उनके नज़दीक अब तक कोई निशान प्रकट नहीं हुआ। मैने सुना है बल्कि मौलवी अब्दुल्लाह अमृतसरी की हस्ताक्षर की हुई तहरीर (लेख) मैंने देखी है जिसमें वह यह दरख्वास्त करता है कि मैं इस प्रकार के फैसले के लिए दिल से इच्छुक हूं कि दोनों सदस्य अर्थात् मैं ओर वह यह दुआ करे कि जो व्यक्ति हम दोनों में से झूठा है वह सच्चे के जीवन में ही मर जाए और यह भी इच्छा व्यक्त की है कि वह ऐजाज़ुलमसीह के समान पुस्तक तैयार करे जो ऐसी ही सरस-सुबोध हो और उन्हीं उद्येश्यों पर आधारित हो। तो यदि मौलवी सनाउल्लाह साहिब ने ये इच्छाएं दिल से प्रकट की है छल के तौर पर नहीं तो इस से उत्तम क्या है कि वह इस उम्मत पर इस फूट के समय में बहुत ही उपकार करेंगे कि वह मर्दे मैदान बन कर इन दोनों माध्यमों से सच और झूठ का फैसला कर लेंगे। यह तो उन्होंने अच्छा प्रस्ताव निकाला अब इस पर क़ायम रहें तो बात है।

यदि एक झूठा दुनिया से कूच कर जाए तथा शेष लोगों की हिदायत हो जाए तो ऐसे मुकाबले वाला नबी का प्रतिफल पाएगा। परन्तु हम मौत के मुबाहल: में अपनी ओर से कोई चेलेन्ज नही कर सकते, क्योंकि सरकार का समझौता ऐसे चेलेन्ज से हमें रोकता है हां मौलवी सनाउल्लाह साहिब और दूसरे विरोधियों को मना नहीं कि ऐसे चेलेन्ज से हमें उत्तर देने के लिए विवश करें चाहे वह मौलवी

सनाउल्लाह हों या अन्य कोई ऐसा मौलवी हो जो प्रसिद्ध लोगों में से और अपनी जमाअत में सम्मान रखता हो जिसके बारे में कम से कम पचास प्रतिष्ठित लोग उसके विज्ञापन पर सत्यापन की गवाही अंकित कर दें और चूंकि मौलवी सनाउल्लाह साहिब अपने पत्र के अनुसार ऐसे चेलेन्ज के लिए तैयार बैठे मालूम होते हैं। तो हमें इस से कोई इन्कार नहीं कि वह ऐसा चेलेन्ज दें बल्कि हमारी ओर से उनको इजाज़त है क्योंकि उनका चेलेन्ज ही फैसले के लिए पर्याप्त है। परन्तु शर्त यह होगी कि कोई मौत क़त्ल की दृष्टि से न हो बल्कि केवल बीमारी के द्वारा हो। उदाहरणतया ताऊन से या हैज़ा से या अन्य किसी बीमारी से। ताकि ऐसी कार्रवाई अधिकारियों के लिए बेचैनी का कारण न ठहरे। हम यह भी दुआ करते रहेंगे कि ऐसी मौतों से दोनों पक्ष सुरक्षित रहें। झूठे को केवल वह मौत आए जो बीमारी की मौत होती है और यही मार्ग दूसरे पक्ष का ग्रहण करना होगा। और याद रहे कि हमारी क़त्ल की भविष्यवाणी एक विशेष भविष्यवाणी थी जो लेखराम के बारे में थी। उसमे ख़ुदा ने यही प्रकट किया था कि वह क़त्ल के द्वारा मरेगा और ऐसा ही प्रकाशित किया गया और मैं विचार करता हूं कि उसके क़त्ल किये जाने का भेद यह था कि उसने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और समस्त नबियों के बारे में बहुत अधिक गालियां दी थीं और ख़ुदा ने देखा कि उसकी गालियां चरमसीमा तक पहुंच गई हैं तथा उसने गालियां देनें में किसी नबी को नहीं छोड़ा, तो अन्त में वही ज़ुबान की छुरी साक्षात् होकर उस पर पड़ी। यह महान निशान था और पृथ्वी पर यह बड़ा गुनाह किया गया कि ऐसी चमकदार भविष्यवाणियों से दुनिया के लोगों ने

इन्कार कर दिया।

अत: यदि मौलवी सनाउल्लाह साहिब ऐसे चेलेन्ज के लिए तैयार हों तो केवल लिखित पत्र पर्याप्त न होगा बल्कि उनको चाहिए कि एक छपा हुआ विज्ञापन इस विषय का प्रकाशित करे★ कि इस व्यक्ति को (इस स्थान पर मेरा नाम स्पष्टता के साथ लिखें) मैं महा झूठा, दज्जाल और काफ़िर समझता हूं और जो कुछ यह व्यक्ति मसीह मौऊद होने और साहिब-ए-इल्हाम और साहिब-ए-वह्यी होने का दावा करता है इस दावे का मैं झूठा होना विश्वास करता हूं और हे ख़ुदा मैं तेरे पास दुआ करता हूं कि यदि यह मेरी आस्था सही नहीं है और यदि यह व्यक्ति वास्तव में मसीह मौऊद है तथा वास्तव में ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए हैं तो मुझे इस व्यक्ति की मौत से पहले मौत दे। और यदि मैं इस आस्था से सच्चा हूं और यह व्यक्ति वास्तव में दज्जाल, बेईमान, क़ाफिर और मुर्तद है और हज़रत मसीह आकाश पर जीवित मौजूद हैं तो किसी अज्ञात समय में फिर आऐंगे तो इस व्यक्ति को मार दे ताकि फित्न: और फूट दूर हो तथा इस्लाम को एक दज्जाल, गुमराह करने वाले तथा पथभ्रष्ट करने वाले से हानि न पहुंचे। आमीन पुन: आमीन।

इस से पहले इस प्रकार के मुबाहल: पुस्तक फतह रहमानी के पृष्ठ-27 में मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी भी कर चुके हैं और इसके बाद थोड़े दिनों में ही मेरी ज़िन्दगी में ही क़ब्र में दाखिल हो

★**हाशिया :-** यह भी लिख दें कि इस मुकाबले के लिए मैं पहल करता हूँ और मेरी ओर से पूरे ज़ोर के साथ यह चैलेन्ज है अन्यथा केवल अभद्र तथा गोल-मोल बातों पर ध्यान न दिया जायेगा। इसी से।

गए और मेरी सच्चाई को अपने मरने से सिद्ध कर गए। परन्तु मौलवी सनाउल्लाह यदि चाहे स्वयं आज़मा लें उनको ग़ुलाम दस्तगीर से क्या काम। क्योंकि वह स्वयं ही इसके लिए अपनी तैयारी भी व्यक्त करते हैं।

यह चेलेन्ज जो वास्तव में एक मुबाहल: का विषय है इसको शब्द-व-शब्द जो कथित नमूने के अनुसार हो लिखना होगा जो ऊपर मैंने लिख दिया है। एक शब्द कम या अधिक न करना होगा और यदि कोई विशेष परिवर्तन करना चाहें तो व्यक्तिगत पत्रों के द्वारा उसका फैसला करना होगा। फिर मुबाहल: के ऐसे विज्ञापन पर कम से कम पचास प्रतिष्ठित लोगों के हस्ताक्षर अंकित होने चाहिएं और इस लेख का विज्ञापन की सात सौ प्रतियां देश में प्रकाशित होनी चाहिएं और बीस विज्ञापन रजिस्ट्री द्वारा मुझे भी भेज दें। मुझे कुछ आवश्यकता नहीं कि मै उन्हें मुबाहले के लिए चेलेन्ज करुं या उनके मुकाबले पर मुबाहल: करुं। उनका अपना मुबाहल: जिस के लिए उन्होने तैयारी व्यक्त की है मेरी सच्चाई के लिए पर्याप्त है। क्योंकि ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया के समय से जिसके लिखने पर लगभग 23 वर्ष गुज़र चुके हैं मेरे लिए यह निशान स्थापित कर रखा है। मैं इकरार करता हूं कि यदि मैं इस मुक़ाबले में पराजित रहा तो मेरी जमाअत को चाहिए जो अब एक लाख से भी अधिक है कि सब मुझ से विमुख होकर अलग़ हो जाएं। क्योंकि जब ख़ुदा ने मुझे झूठा ठहरा कर तबाह किया तो मैं झूठा होने की हालत में किसी पेशवाई और इमामत को नहीं चाहता बल्कि इस हालत में एक यहूदी से भी अधिक निकृष्ट हूंगा। और प्रत्येक के लिए शर्म और नंग का स्थान।

जो व्यक्ति ऐसे चेलेन्ज से उपद्रव को दूर करेगा बशर्ते कि वह सच्चा निकलेगा तो दुनिया में बड़े सम्मान के साथ उसका नाम अंकित रहेगा। और जो व्यक्ति दज्जाल, बेईमान और झूठा होगा तो उसकी मौत से प्रसिद्ध कहावत के अनुसार कि खस कम जहां पाक (अर्थात् कूड़ा उठा तो सफाई हो गई) दुनिया को आराम प्राप्त होगा। इससे अधिक मैं क्या लिख सकता हूं। और यदि कोई अवश्यक बात मुझ से रह गई है जिसे इन्साफ चाहता है तो मुझे सूचना दी जाए मैं उसे खुशी से स्वीकार करुंगा बशर्ते कि व्यर्थ न हो और उससे हील: और बहाने की दुर्गंध न आए और तक़्वे की बुनियाद पर हो न कि दुनियादारों की चालबाज़ी के रंग में। ख़ुदा तआला जानता है कि मैं चाहता हूं कि किसी प्रकार सच खुल जाए। यद्यपि मैं ख़ुदा के निशानों को ऐसा देख रहा हूं जैसा कि कोई सूर्य को देखता है और मैं ख़ुदा की उस वह्यी पर ऐसा ही ईमान लाता हूं जैसा कि पवित्र क़ुर्आन पर। परन्तु मैं प्रत्येक पहलू से इन्कारी पर समझने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करना चाहता हूं। हे मेरे ख़ुदा। तू जो हमारे कारोबार को देख रहा है और हमारे दिलों पर तेरी नज़र है तथा तेरी गहरी निगाहों से हमारे रहस्य छुपे हुए नहीं। तू हम में और विरोधियों में फैसला कर दे और वह जो तेरी दृष्टि में सच्चा है उसको व्यर्थ न कर कि सच्चे के व्यर्थ होने से एक संसार व्यर्थ होगा। हे मेरे शक्तिमान ख़ुदा। तू नज़दीक आजा और अपनी अदालत की कुर्सी पर बैठ और ये प्रतिदिन के झगड़े काट दे। हमारी ज़ुबाने लोगों के सामने हैं और हमारे दिलों की वास्तविकता तेरे सामने प्रकट है। मैं क्योंकर कहूं और मेरा दिल क्योंकर स्वीकार करे कि तू सच्चे को अपमान के साथ कब्र में

उतारेगा। और लोफरों जैसी ज़िन्दगी गुज़ारने वाले कैसे विजय प्राप्त करेंगे। मुझे तेरी हस्ती की क़सम है कि तू हरगिज़ ऐसा नहीं करेगा और मौलवी सनाउल्लाह साहिब ने वास्तविकता के विरुद्ध ऐतराज़ और झूठी क़समों से मुद्द के जल्से में मेरा अपमान किया है वे मेरी समस्त शिकायतें ख़ुदा तआला के सामने हैं। मुझे इस झुठलाने का ग़म भी नहीं,क्योंकि जब वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को भी महा झूठा ठहराते है तो यदि मुझे भी महा झूठा कहें तो उन पर क्या अफसोस करना चाहिए। क्योंकि वह कहते है कि ख़ुदा के इस प्रशन पर कि क्या तूने ही कहा था कि मुझे ओर मेरी मां को ख़ुदा करके माना करो। ईसा ने झूठ बोला अर्थात् ऐसा उत्तर दिया जो सर्वथा झूठ था। क्योंकि उन्होने कहा कि जब तक मैं अपनी उम्मत में था तो उन पर गवाह था और जब तू ने मृत्यु दे दी तो फिर तू उन का निगरान था। मुझे क्या मालूम कि मेरे पीछे क्या हुआ। स्पष्ट है कि उस व्यक्ति से अधिक झूठा कौन हो सकता है जो क़यामत के दिन जब अदालत के तख़्त पर ख़ुदा बैठेगा उसके सामने झूठ बोलेगा। क्या इस से अधिक बुरा कोई और झूठा होगा कि वह व्यक्ति जो क़यामत से पहले दोबारा दुनिया में आएगा और चालीस वर्ष दुनिया में रहेगा और ईसाइयों के साथ लड़ाइयां करेगा और सलीब को तोड़ेगा और सुअरों को क़त्ल करेगा और समस्त ईसाइयों को मुसलमान कर देगा। वही क़यामत को इन समस्त घटनाओं से इन्कार करके कहेगा कि मुझे ख़बर नहीं कि मेरे बाद क्या हुआ और इस प्रकार से ख़ुदा के सामने झूठ बोलेगा और ज़ाहिर करेगा कि मुझे उस समय से ईसाइयों की हालत और उनके धर्म की कुछ भी ख़बर नहीं जब से तूने मुझे मृत्यु दे दी। देखे यह

कैसा गन्दा झूठ है और फिर ख़ुदा के सामने। इस प्रकार से हज़रत मसीह कज्ज़ाब ठहरते हैं या नहीं। पवित्र क़ुर्आन खोलो और आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي को अन्त तक पढ़ जाओ और फिर कहो कि क्या तुम ने ईसा अलैहिस्सलाम को कज्ज़ाब ठहराया या नहीं।

परन्तु इस पर क्या अफ़सोस करें क्योंकि आप लोगों के नज़दीक तो ख़ुदा भी झूठा है। ख़ुदा तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي में स्पष्ट तौर पर वर्णन कर दी और स्पष्टतापूर्वक हज़रत ईसा का यह बहाना प्रस्तुत कर दिया कि मेरी मृत्यु के बाद ये लोग बिगड़े हैं। तो ख़ुदा समझा रहा है कि यदि हज़रत ईसा की मृत्यु नहीं हुई तो ईसाई भी अब तक नहीं बिगड़े। क्योंकि ईसाइयों का सीधे मार्ग पर रहना केवल उनके जीवन तक ही सम्बद्ध रखा गया था और ईसाइयों की गुमराही का लक्षण हज़रत ईसा की मृत्यु को ठहराया गया था अब बताओ इस स्थिति में आप के नज़दीक ख़ुदा क्योंकर सच्चा ठहर सकता है जिसके बयान पर विशवास नहीं किया गया।

ऐसा ही आयत-

مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (आले इम्रान 145)

में सब नबियों की मृत्यु एक संयुक्त शव्द से जो خَلَتْ (ख़लत) है ख़ुदा ने प्रकट की थी और हज़रत ईसा के लिए कोई विशेष शब्द प्रयोग नहीं किया था यह भी नऊज़ुबिल्लाह आप लोगों के नज़दीक ख़ुदा का एक झूठ है। यह वही आयत है जिसके पढ़ने से हज़रत अबू बक्र रजि. ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु सिद्ध की थी। अबू बक्र की भी यह मन्तिक खूब थी कि

इसके बावजूद कि ईसा आकाश पर जीवित बैठा है फिर वह लोगों के सामने यह आयत पढ़ता है। यह किस प्रकार की तसल्ली देता है। क्या उसे मालूम नहीं कि ईसा तो आकाश पर जीवित बैठा है और फिर वह दोबारा आएगा और चालीस वर्ष रहेगा। ईसा की वह आयु और सर्वश्रेष्ठ रसूल की आयु★ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى (अन्नजम-23) और सहाबा भी बहुत समझदार आदमी थे जो इस आयत के सुनने से चुप हो गए और किसी ने अबू बकर को उत्तर न दिया कि हज़रत आप यह कैसी आयत पढ़ रहे हैं जो हमें और भी निराश करती है। ईसा तो आकाश पर जीवित और दोबारा आने वाला तथा हमारा प्यारा नबी हमेशा के लिए हमसे अलग। यदि ईसा इस प्रकृति के नियम से बाहर और हज़ारों वर्षों की आयु पाने वाला और पुनः आने वाला है तो हमारे नबी को यह नेमत क्यों न दी गई और सच तो यह है कि अबू बकर रजि: तथा स्मस्त सहाबा ने जो उस समय उपस्थित थे उनमें से एक भी ग़ायब न था। इस आयत के यही अर्थ समझे थे कि सब नबी मृत्यु पा चुके हैं और मालूम होता है कि कुछ एक दो कम समझ सहाबा को जिनकी दिरायत उत्तम नहीं थी, ईसाइयों के कथन सुनकर जो आस पास रहते थे पहले कुछ यह विचार था कि ईसा आकाश पर जीवित हैं जैसा कि अबु हुरैर: जो मुर्ख था और दिरायत अच्छी नहीं रखता था परन्तु जब हज़रत अबू बकर ने जिन को ख़ुदा ने क़ुर्आन का ज्ञान प्रदान किया था यह आयत पढ़ी तो समस्त सहाबा पर समस्त नबियों की मृत्यु सिद्ध हो गयी और वे इस आयत से बहुत प्रसन्न हुए और उनका यह आघात जो उन के प्यारे नबी सल्लल्लाहो

★ तब तो यह एक खोटा विभाजन है।

अलैहि वसल्लम की मृत्यु का उन के दिल पर था जाता रहा तथा मदीना की गलियों कूचों में यह आयत पढ़ते फिर। इसी अवसर पर हस्सान बिन साबित ने शोक गीत(मर्सियः) के तौर पर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वियोग में ये शेर भी बनाए। शेर –

कुन्तस्सवादा लिनाज़िर- फ़अमिअलैकन्नाज़िरु
मनशाअ बादका फलयमुत-फ़अलैका कुन्तो उहाज़िरु।

अर्थात् तू हे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी आंखों की पुतली था। मैं तो तेरी जुदाई में(वियोग) से अंधा हो गया अब जो चाहे मेरे ईसा हो या मूसा। मुझे तो तेरी ही मौत का धड़का था अर्थात् तेरे मरने के साथ हमने विश्वास कर लिया कि दूसरे समस्त नबी मर गए हमें उनकी कुछ परवाह नहीं।

शे'र का एक चरण-

अजब था इश्क़ उस दिल में मुहब्बत हो तो ऐसी हो।

फिर आप लोग ख़ुदा तआला को इस प्रकार से झूठा ठहराते हैं कि ख़ुदा तो कहता है कि सलीब की घटना के बाद हमने ईसा और उसकी मां को एक टीले पर जगह दी जिसमें साफ पानी बहता था अर्थात् झरने जारी थे, बहुत आराम की जगह थी तथा स्वर्ग के समान थी जैसा कि फ़रमाता है

وَّ اٰوَیۡنٰہُمَاۤ اِلٰی رَبۡوَۃٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ مَعِیۡنٍ (अलमोमिनून 51)

अर्थात् हमने सलीब की घटना के बाद जो एक बड़ा संकट था ईसा और उसकी मां को एक बड़े टीले पर जगह दी जो बड़े आराम की जगह और पानी रूचिकद था अर्थात् कशमीर का क्षेत्र।

अब यदि आप लोगों को अरबी भाषा का कुछ भी ज्ञान है तो

आप समझ सकते हैं कि اٰوَیۡ का शब्द उसी अवसर पर आता है कि जब किसी आने वाले संकट से बचा कर शरण दी जाती है। यही मुहावरा सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन में तथा आरबिक समस्त कथनों में और हदीसों में मौजूद हैं और ख़ुदा तआला के कलाम से सिद्ध है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अपनी सम्पूर्ण आयु में केवल सलीब का ही संकट आया था और हदीस से सिद्ध है कि मरयम की सम्पूर्ण आयु में इसी घटना से बहुत शोक पहुंचा था। तो यह आयत बुलन्द आवाज़ से पुकार रहीं है कि इस सलीब की घटना के बाद ख़ुदा तआला ने हज़रत ईसा को इस विपत्ति से मुक्ति देकर उस दुष्ट देश से किसी दूसरे देश में पहुंचा दिया जहां स्वच्छ जल के झरने बहते थे और ऊंचा टीला था। अब प्रश्न यह है कि क्या आकाश पर भी कोई झरनों वाला टीला है जिस पर ख़ुदा तआला ने सलीबी घटना के बाद हज़रत मसीह को जा बिठाया और मां को भी। हज़रत मसीह के जीवन-चरित्र पर विचार करके कोई उदाहरण तो प्रस्तुत करो कि किसी संकट के बाद उन्हे ऐसे देश में स्थान दिया गया हो जो आराम-स्थल और स्वर्ग-सहश हो और बड़ा टीला हो समस्त संसार के बुलन्द और झरने जारी हों तो आपके विचार की दृष्टि से नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा तआला स्पष्ट तौर पर झूठा ठहरता है कि वह तो सलीबी घटना के बाद टीले का वर्णन करता है जिसमें ईसा और उसकी मां को जगह दी गई और आप लोग अकारण उसे आकाश पर बिठाते हैं तथा केवल बेकार। भला बताओ तो सही कि नबी होकर इतने समय तक बेकार क्यों बैठ रहा है और फिर आप लोग और मौलवी सनाउल्लाह जो इस आयत से इन्कार करके उसे दूसरे

आकाश पर पहुंचाते हैं। इस बात का कुछ उत्तर नहीं दे सकते। कि जीवित व्यक्ति मुर्दों की रुहों में क्यों जा बैठा वे लोग तो इस संसार से बाहर हो गए हैं और दूसरे लोक में पहुंच गए। क्या वह भी दूसरे लोक में पहुच गया है

ख़ुदा पर यह भी झूठ है कि जैसे ख़ुदा ने यहूदियों का मतलब नहीं समझा और प्रश्न दूसरा उत्तर दूसरा की कहाबत अपने ऊपर चरितार्थ की। यहूदी तो कहते थे कि मसीह की रुह का ख़ुदा की और रफ़ा नहीं हुआ और ख़ुदा उनका यह उत्तर देता है कि मैंने उसके साथ जीवित दूसरे आकाश पर उठा लिया तथा फिर किसी समय मारुगा। भला यह क्या उत्तर हुआ। प्रश्न तो यह था कि मरने के बाद ईसा का रफा नहीं हुआ और नऊज़ुबिल्लाह वह लानती है। इस प्रश्न का उत्तर तो यह था कि अभी तो ईसा नहीं मरा जब मरेगा तो मैं अपनी ओर उसकी रुह★ उठा लूंगा। यह उल्टा उत्तर जो दिया गया यह तो विवादित बात से कुछ संवध नहीं रखता। इसी प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे मे आप लोगों का यह गुमान है कि उन्होंने झूठ बोला जो यह कहा कि मैं ईसा को मुर्दों की रुहों में देख आया हूं जो इस दुनिया से बाहर हो गए हैं एक शरीर रखने वाला व्यक्ति रुहो में कैसे बैठ गया और रुह के कब्ज होने के बिना

★**हाशिया :-** यहूदी हज़रत मसीह की बेहोशी की अवस्था से बेख़बर नहीं थे यही संदेह था जो उन पर डाला गया। अत: क्योंकि वह ख्याल करते थे कि ईसा सलीब पर मृत्यु पा गये इसलिए वह उनकी रफ़ा रूहानी के कायाल न थे और न अब तक क़ायल हैं। उन मुकाबले पर विवादित विषय केवल रफ़ा रूहानी है क्योंकि शारीरिक रफ़ा उनिके निकट मुक्ति का आधार नहीं। इसी से।

दूसरे लोक में क्योंकर पहुंच गया। यह विचित्र ईमान है कि ख़ुदा ने तो अपने कथन से गवाही दी कि ईसा मर गया वह गवाही स्वीकार नहीं की और फिर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने कर्म अर्थात् देखने से गवाही दी कि मैं मुर्दा रुहों में उसे देख आया हूं वह गवाही भी अस्वीकार की जाती है और फिर इस्लाम का दावा और फिर अहले हदीस होने की शेखी। ईसा से तो मेराज की रात में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुछ बातें भी न हुईं। मूसा से बातें हुई। पवित्र क़ुर्आन में है कि मूसा की मुलाकात में सन्देह न कर। तो यह कैसा झूठ है जो ख़ुदा और रसूल दोनों पर बांधा है।

फिर कहते हैं कि ईसा के संबंध में है وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ (अज़्ज़ुखरुफ 62) जिन लोगों का क़ुर्आन का यह ज्ञान है उन से डरना चाहिए कि नीम (अधूरा) मुल्ला ईमान का खतरा। हे सज्जनो! क्या आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम عِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ नहीं है जो फरमाते हैं- بُعِثْتُ اَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ और ख़ुदा तआला फरमाता है اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَ انْشَقَّ الْقَمَرُ (अलकमर 2) यह कैसी बदबूदार मूर्खता है जो यहां ساعة से क़यामत समझते हैं। **अब मुझ से समझो** कि यहां ساعة से अभिप्राय वह अज़ाब है जो हज़रत ईसा के बाद तीतूस रूमी के हाथ से यहूदियों पर आया था और स्वयं ख़ुदा तआला ने पवित्र-क़ुर्आन में सूरह बनी इस्राईल में इस ساعة की ख़बर दी है इस आयत की व्याख्या इस आयत में है कि- مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ (अज़्ज़ुखरुफ 60) अर्थात् ईसा के समय सख़्त अज़ाब से क़यामत का नमूना यहूदियों को दिया गया और उनके लिए वह ساعة हो गयी क़ुर्आन के मुहावरे की दृष्टि

से ساعة अज़ाब ही को कहते हैं। तो ख़बर दी गई थी कि यह ساعة हज़रत ईसा के इन्कार से यहूदियों पर उतरेगी। अतः वह निशान प्रकटन में आ गया और वह ساعة यहूदियों पर उतर गई तथा उस युग में ताऊन भी उन पर बड़ी तीव्रता से पड़ी और वास्तव में उनके लिए वह घटना क़यामत थी जिस के समय लाखों यहूदी मिट गए और हज़ारों ताऊन से मर गए तथा शेष बड़े अपमान के साथ बिखर गए। क़यामत-ए-कुब्रा (बड़ी क़यामत) तो समस्त लोगों के लिए क़यामत होगी परन्तु यह विशेष तौर पर यहूदियों के लिए क़यामत थी इस पर एक और अनुकूलता पवित्र क़ुर्आन में यह है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि-

اِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ بِهَا ۔ (अज़्ज़ुख़रुफ 62)

अर्थात् हे यहूदियो! ईसा के साथ तुम्हें पता लग जाएगा कि क़यामत क्या चीज़ है उसके समान तुम्हें दी जाएगी। अर्थात् مَثَلًا لِّبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ वह क़यामत तुम पर आएगी इसमें सन्देह न करो। बिल्कुल स्पष्ट है कि वास्तविक क़यामत जो अब तक नहीं आई उसके बारे में उचित न था कि ख़ुदा कहता कि उस क़यामत में सन्देह न करो, तुम उसको देखोगे उस युग के यहूदी तो सब मर गए और आने वाली क़यामत उन्होंने नहीं देखी। क्या ख़ुदा ने झूठ बोला। हां तीतूस रूमी के हाथ से यहूदियों को देखनी पड़ी और फिर ताऊन के द्वारा उसको देख लिया। यह ख़ुदा की किताबों में अज़ाब का पुराना वादा चला आता था जिसका बाइबल में वर्णन पाया जाता है। पवित्र क़ुर्आन में इसके लिए विशेष आयत उतरी। यही वादा पवित्र क़ुर्आन और पहली किताबों में मौजूद है और इसी से यहूदियों को चेतावनी

हुई, अन्यथा दूर की क़यामत से कौन डरता है। क्या इस समय के मौलवी उस क़यामत से डरते हैं, हरगिज़ नहीं और जैसा कि अभी मैंनें वर्णन किया है कि यह ساعة का शब्द क़यामत से कुछ विशेष नहीं और क़ुर्आन ने इसको क़यामत से विशेष रखा है। अफसोस कि अधूरा मुल्ला जिनकी आख़िरत खराब है अपनी मूर्खता से ऐसे ऐसे मायने कर लेते हैं जिनसे असल मतलब समाप्त हो जाता है। अंतिम क़यामत से यहूदियों को क्या भय था परन्तु करीब के अज़ाब की भविष्यवाणी निस्सन्देह उनके दिलों पर प्रभाव डालती थी।

अफसोस कि सरल स्वभाव एकान्तवासी (हुज्रानशीन) मौलवियों की नज़र सीमित है उनको मालूम नहीं कि पहली किताबों में इसी साअत का वादा था जो तीतूस के समय यहूदियों पर आई और पवित्र क़ुर्आन स्पष्ट कहता है कि ईसा की ज़ुबान पर उन पर लानत पड़ी और बड़े अज़ाब की घटना को साअत के शब्द से वर्णन करना न केवल पवित्र क़ुर्आन का मुहावरा है बल्कि यही मुहावरा पहली अकाशीय किताबों में पाया जाता है और बड़ी प्रचुरता के साथ पाया जाता है। तो न मालूम कि इन सरल स्वभाव मौलवियो ने कहां से और किस से सुन लिया कि ساعة का शब्द हमेशा क़यामत पर ही बोला जाता है। अफसोस ये लोग जानवरों के समान हो गए। कदम-कदम पर अपनी ग़लतियों से अपमानित होते हैं फिर भी ग़लतियों को नहीं छोड़ते। क्या ग़लतियों की कोई सीमा भी है। ये लोग क़ुर्आन के आशय को हरगिज़ नहीं समझते आकाश पर तो हज़रत ईसा को शरीर के साथ चढ़ा दिया परन्तु जो आरोप यहूदियों का था उसका कुछ उत्तर न दिया। ख़ुदा जो फ़रमाता है कि यहूदी कहते थे-

(अन्निसा- 158) اِنَّا قَتَلۡنَا الۡمَسِيۡحَ عِيۡسَى ابۡنَ مَرۡيَمَ

और उत्तर देता है कि नहीं बल्कि हमने उसको उठा लिया यह किस बात का खण्डन है क्या केवल क़त्ल का।

तो सुनो कि यहूदियों का बार-बार यह शोर मचाना कि हमने ईसा को सलीब द्वारा मार दिया उनका इस से यह मतलब था कि वह लानती है और उसकी रुह मूसा तथा आदम की तरह ख़ुदा की ओर नहीं उठाई गई। तो ख़ुदा का उत्तर यह चाहिए था कि नहीं, वास्तव में उसकी रुह का रफ़ा हुआ शरीर का आकाश पर उठाना या न उठाना विवादित बात न थी। तो नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा की यह खूब समझ है कि इन्कार तो रुह के रफ़ा से है जो ख़ुदा की ओर होता है किन्तु ख़ुदा इस आरोप का यह उत्तर देता है कि मैंने ईसा को पार्थिव शरीर के साथ जीवित दूसरे आकाश पर बिठा दिया। खूब उत्तर है और अभी मरना तथा रुह क़ब्ज़ होना शेष है। ख़ुदा जाने इसके बाद रुहानी रफ़ा हो या न हो जो मूल झगड़े की बात है।

इसी प्रकार से लोग बुद्धि के परे मेरी कुछ भविष्यवाणियों का झूठा निकलना अपने ही दिल से बात बनाकर यह भी कहा करते हैं कि जब कुछ भविष्यवाणियां झूठी हैं या विवेचना की गलती है तो फिर मसीहियत के दावे का क्या विश्वास शायद वह भी ग़लत हो। इसका प्रथम उत्तर तो यही है कि झूठों पर ख़ुदा की लानत। और मौलवी सनाउल्लाह ने मुद्द गांव में बहस के समय यही कहा था कि सब भविष्यवाणियां झूठी निकली इसलिए हम उनको बुलाते हैं और ख़ुदा की क़सम देते हैं कि वे इस जांच-पड़ताल के लिए क़ादियान में आएं और समस्त भविष्यवाणियों की पड़ताल करें और हम क़सम

खाकर वादा करते हैं कि प्रत्येक भविष्यवाणी के बारे में जो नुबुव्वत की पद्धति की दृष्टि से झूठी सिद्ध हो तो एक-एक सौ रुपया उनको भेंट करेंगे, अन्यथा एक विशेष लानत का मैडल उनके गले में रहेगा और हम आने-जाने का खर्च भी देंगे तथा कुल भविष्यवाणियों की पड़ताल करनी होगी ताकि भविष्य में कोई झगड़ा शेष न रह जाए। और इसी शर्त से रुपया मिलेगा और सबूत देना हमारा दायित्व होगा।

स्मरण रहे कि पुस्तक 'नुज़ूलुल मसीह' में डेढ़ सौ भविष्यवाणियां मैंने लिखी हैं तो मानो झूठा होने की स्थिति में पन्द्रह हज़ार रुपया मौलवी सनाउल्लाह साहिब ले जाएंगे और घर-घर भीख मांगने से मुक्ति होगी। बल्कि हम अन्य भविष्यवाणियां भी सबूत के साथ उनके सामने प्रस्तुत कर देंगे और उसी के वादे के अनुसार प्रति भविष्यवाणी एक सौ रुपया देते जाएंगे। इस समय मेरी जमाअत एक लाख से अधिक है। यदि मैं कथित मौलवी साहिब के लिए अपने मुरीदों से एक-एक रुपया भी लूंगा तब भी एक लाख रुपया हो जाएगा वह सब उनको भेंट होगा। जिस हालत में वह दो- दो आना के लिए घर-घर खराब होते फिरते हैं और ख़ुदा का प्रकोप उतरा है तथा मुर्दों के कफ़न या उपदेश के पैसों पर गुज़ारा है यह एक लाख रुपया प्राप्त हो जाना उनके लिए एक स्वर्ग है परन्तु यदि मेरे इस बयान की ओर ध्यान न दें तथा इस पड़ताल के लिए कथित शर्तों की पाबन्दी जिसमें सत्यापन एवं झुठलाने की दोनों शर्तें हैं, क़ादियान में न आए तो फिर लानत है उस बकवास पर जो उन्होंने मुबाहसा के साथ गांव मुद्द में की और अत्यन्त निर्लज्जतापूर्वक झूठ बोला। अल्लाह तआला फ़रमाता है-

لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ (बनी इस्राईल- 37)

परन्तु उन्होंने जानकारी तथा पूर्ण पड़ताल के बिना आम लोगों के सामने झुठलाया, क्या यही ईमानदारी है। वह मनुष्य कुत्तों से अधिक बुरा होता है जो अकारण भोंकता है और वह जीवन लानती है जो निर्लज्जता से गुज़रता है।

कुछ लोगों का विचार है कि यदि किसी इल्हाम के समझने में ग़लती हो जाए तो शान्ति समाप्त हो जाती है और सन्देह पड़ जाता है कि शायद उस नबी या रसूल या मुहद्दिस ने अपने दावे में भी धोखा खाया हो। यह विचार सर्वथा भ्रम है और जो लोग आधे पागल होते हैं वे ऐसी ही बातें किया करते हैं और यदि उनकी यही आस्था है तो उनको समस्त नबियों की नुबुव्वत से हाथ धो बैठना चाहिए क्योंकि कोई नहीं जिसने कभी न कभी अपने विवेचन में ग़लती न खाई हो। उदाहरणतया हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम जो ख़ुदा बनाए गए उनकी अधिकांश भविष्यवाणियां ग़लती से भरी हुई हैं। जैसे यह दावा कि मुझे दाऊद का तख्त मिलेगा इस दावे के इसके अतिरिक्त क्या मायने थे कि किसी संक्षिप्त इल्हाम पर भरोसा करके उनको यह विचार पैदा हुआ कि मैं बादशाह बन जाऊंगा। दाऊद की सन्तान से तो थे ही और कहने को राजकुमार (शहज़ादा)। इस वाक्य से मालूम होता है कि आपको तख़्त और बादशाहत की बहुत इच्छा थी और इस ओर यहूदी भी प्रतीक्षा में थे कि कोई उनसे पैदा हो ताकि उनकी बादशाहत दोबारा स्थापित करे और उनको रोमियों के आज्ञापालन करने से मुक्ति दे।

तो वास्तव में ऐसा दावा कि दाऊद का तख़्त फिर स्थापित

होगा। यहूदियों की बिल्कुल यही मनोकामना थी और प्रारंभ में इस बात से प्रसन्न होकर बहुत से यहूदी आपके पास एकत्र हो गए थे। किन्तु इसके पश्चात् कुछ ऐसे संयोगों का सामना हुआ कि यहूदियों ने समझ लिया कि यह व्यक्ति इस भाग्य और क़िस्मत का आदमी नहीं। इसलिए उनसे अलग हो गए तथा कुछ दुष्ट लोगों ने रुमी सरकार के गवर्नर के पास भी यह सूचना पहुँचा दी कि यह व्यक्ति दाऊद के तख़्त का दावेदार है। जब हज़रत मसीह ने तुरन्त पहलू बदल लिया और फ़रमाया कि मेरी बादशाहत आसमानी है ज़मीन की नहीं। परन्तु यहूदी अब तक ऐतराज़ करते हैं कि यदि आसमानी बादशाहत थी तो आपने हवारियों को यह आदेश क्यों दिया था कि कपड़े बेचकर हथियार खरीद लो। अतः इसमें सन्देह नहीं कि हज़रत मसीह के विवेचन में ग़लती थी और संभव है कि यह शैतानी भ्रम हो जिसके बाद आपने रुजू कर लिया, क्योंकि अंबिया ग़लती पर क़ायम नहीं रखे जाते और मैंने शैतानी भ्रम केवल इंजील के लेख से कहा है क्यंकि इंजील से सिद्ध है कि कभी-कभी आपको शैतानी इल्हाम भी होते थे।★ परन्तु आप उन इल्हामों को रद्द कर देते थे और ख़ुदा तआला आपको शैतान के स्पर्श से बचा लेता था जैसा कि इस्लाम की हदीसों में आपकी ये विशेषताएं लिखी हैं और आप हमेशा सुरक्षित रहे कभी आपने शैतान का अनुकरण नहीं किया।

एक दुष्ट यहूदी अपनी पुस्तक में लिखता है कि एक बार एक

★नोट:- जर्मनी के तीन पादरियों ने शैतान के वार्तालाप के, जिसका वर्णन इंजील में है, यही अर्थ किए हैं। इसी से।

अनजान स्त्री पर आप आशिक हो गए, परन्तु जो बात शत्रु के मुँह से निकले वह विश्वसनीय नहीं।★आप ख़ुदा के मान्य एवं प्रिय थे। पापी हैं वे लोग जो आप पर ये झूठे आरोप लगाते हैं। हां आपने विवेचन की ग़लती से दाऊद के तख़्त की अभिलाषा की थी परन्तु वह अभिलाषा पूरी नहीं हुई और प्रसिद्ध कहावत के अनुसार कि - बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले न भीख, आप तो दाऊद के तख़्त से वंचित रहे, किन्तु वह ख़ुदा का चुना हुआ नबियों का सरदार जिसने संसार की बादशाहत से मुंह फेर कर कहा था कि اَلْفَقْرُ فَخْرِیْ अर्थात कंगाली मेरा गर्व है, उसे ख़ुदा ने बादशाहत दे दी। उसने कहा था कि मैं एक दिन फ़ाक: चाहता हूं और एक दिन रोटी। परन्तु ख़ुदा ने उसको कंगाली और भूखा रहने से बचाया। यह विशेष कृपा है।

हज़रत मसीह के विवेचन जो अधिकतर ग़लत निकले इसका कारण शायद यह होगा कि प्रारंभ में आपके जो इरादे थे वे पूरे न हो सके। निष्कर्ष यह कि इन बातों से नुबुव्वत में कुछ विघ्न नहीं आया। नबी के साथ सैकड़ों प्रकाश होते हैं जिन से वह पहचाना जाता है और जिनसे उसके दावे की सच्चाई खुलती है। तो यदि कोई विवेचन ग़लत हो तो मूल वादे में कोई अन्तर नहीं आता। उदाहरण के तौर पर आंख यदि दूर के फासले से मनुष्य को यदि बैल समझे तो यह नहीं कह सकते कि आँख का अस्तित्व बे फायदा है या उसका देखना विश्वसनीय नहीं। तो नबी के लिए उसके दावे और शिक्षा का ऐसा उदाहरण है जैसा कि करीब से आँख वस्तुओं को देखती है और

★ ईसाई भी ऐसी बकवास आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में किया करते थे और एक बार हज़रत मूसा पर भी ऐसा आरोप लगाया था (इसी से)

उनमें ग़लती नहीं करती तथा कुछ विवेचनात्मक बातों में ग़लती का ऐसा उदाहरण है कि जैसे बहुत दूर की वस्तुओं को आँख देखती है तो कभी उनको पहचानने में ग़लती कर जाती है। इसी आधार पर हम कह सकते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जो यहूदियों की भलाई के लिए अपनी बादशाहत का विचार था। इसलिए आयत-

إِلَّا إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِيْ أُمْنِيَّتِهِ (अलहज-53)

शैतान ने आपको धोखा दिया और दाऊद के तख़्त का लालच दिल में डाल दिया। परन्तु चूंकि मुक़र्रब (सानिध्य प्राप्त) और ख़ुदा के प्रिय थे। इसलिए वे शैतानी भ्रम स्थापित न रह सके और आप ने शीघ्र समझ लिया कि मेरी आसमान की बादशाहत है न कि ज़मीन की। अतः हज़रत मसीह का यह विवेचन ग़लत निकला। असल वह्यी सही होगी परन्तु समझने में ग़लती खाई। अफसोस है कि जितनी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के विवेचन में ग़लतियां हैं उसका उदाहरण किसी नबी में भी नहीं पाया जाता। शायद ख़ुदाई के लिए यह भी एक शर्त होगी परन्तु क्या हम कह सकते हैं कि उनके बहुत से ग़लत विवेचनों और ग़लत भविष्यवाणियों के कारण उनकी पैग़म्बरी संदिग्ध हो गई है, हरगिज़ नहीं। असल बात यह है कि जिस विश्वास को नबी के दिल में उनकी नुबुव्वत के बारे में बिठाया जाता है वे तर्क तो सूर्य के समान चमक उठते हैं और इतनी निरन्तरता से एकत्र होते हैं कि वह बात बहुत स्पष्ट हो जाती है और फिर कुछ दूसरे भागों में यदि विवेचन की ग़लती हो भी तो वह उस विश्वास के लिए हानिप्रद नहीं होती जैसा कि जो वस्तुएं मनुष्य के करीब लाई जाएं और आंखों के करीब की जाएं तो मनुष्य की आँख उनके पहचानने में ग़लती नहीं

खाती और निश्चित आदेश देती है कि यह आमुक वस्तु है और इस मात्रा में है और वह आदेश सही होता है और ऐसी देखने की गवाही को अदालतें स्वीकार करती हैं परन्तु यदि कोई वस्तु करीब न लाई जाए और जैसे आधा मील या 1/4 मील से किसी मनुष्य को पूछा जाए कि वह सफेद वस्तु क्या चीज़ है तो संभव है कि एक सफेद कपड़े वाले मनुष्य को एक सफेद घोड़ा समझे या एक सफेद घोड़े को मनुष्य समझ ले। तो ऐसा ही नबियों और रसूलों को उनके दावे के बारे में तथा उनको शिक्षाओं के बारे में बहुत निकट से दिखाया जाता है और उसमें इतनी निरन्तरता होती है जिसमें कुछ सन्देह शेष नहीं रहता परन्तु कुछ आशिक बातों में जो अहम उद्देश्यों में से नहीं होतीं उनको कश्फ़ी दृष्टि दूर से देखती है और उनमें कुछ निरन्तरता नहीं होती, इसलिए कभी उनके पहचानने में धोखा भी हो जाता है। तो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने अपनी भविष्यवाणियों में धोखे खाए वे उसी रंग में खाए थे। परन्तु नुबुव्वत के दावे में उन्होंने धोखा नहीं खाया। क्योंकि वह नुबुव्वत की वास्तविकता करीब से उनको दिखाई गई और बार-बार दिखाई गई।

मौलवी सनाउल्लाह साहिब को यह भी एक धोखा लगा हुआ है कि वे परस्पर विरोधी हदीसों को प्रत्येक के सामने प्रस्तुत कर देते हैं। यही धोखा उनके बुजुर्ग मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब को लगा हुआ है और प्रत्येक स्थान में हज़रत मसीह के जीवन-मरण के बारे में कोई चर्चा आए तो तुरन्त हदीसों का एक ढेर प्रस्तुत कर देते हैं कि देखो सही बुखारी, सही मुस्लिम, जामिअ तिरमिज़ी, सुनन इब्ने माजा, सुनन अबी दाऊद, सुनन निसाई, मुस्नद इमाम अहमद तिबरानी,

मौजिमुल कबीर, नईम इब्ने हम्मोद, मुस्तदरिक हाकिम, सही इब्ने ख़ुज़ैमः, नवादिरुल उसूल तिरमिज़ी, अबू दाऊद तियालसी, अहमद मुस्नद फ़िरदौस, इब्ने आसकिर, किताबुल वफ़ा इब्ने जौजी, शरह सुन्नत बग्वी, इब्ने जरीर, बैहकी अरव्बाहल महदी, मुस्नद अबी याला इत्यादि हदीस की पुस्तकें। इनमें यही लिखा है कि ईसा अवतरित होगा, यद्यपि बैतुल मुक़द्दस में या दमिश्क में या अफ़ीक़ में या मुसलमानों की सेना में इसका कोई फैसला नहीं और यह हौवा है जो आजकल प्रस्तुत किया जाता है और विचित्रतम यह है कि इन पुस्तकों में से कुछ ऐसी दुर्लभ हैं कि इन लोगों के बाप ने भी नहीं देखी होंगी परन्तु उनके नाम सुना देते हैं ताकि कम से कम समझा जाए कि बड़े मौलवी साहिब हैं जो इतनी पुस्तकें जानते हैं। अफसोस ये लोग बेईमान हैं हम तो अब यहूदियों का नाम लेने से भी शर्मिन्दा हैं, क्योंकि इस्लाम में ही ऐसे यहूदी मौजूद हैं।

अभी थोड़े दिन गुज़रे हैं कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब ने अंग्रेज़ी सरकार को महदी के बारे में एक पुस्तक प्रस्तुत करके प्रसन्न कर दिया है जिस में लिखा है कि महदी के बारे में कोई हदीस सही सिद्ध नहीं हुई और ज़मीन का इनाम भी पाया है मालूम नहीं कि किस के बदले में। परन्तु सेवा तो यही है कि महदी के अस्तित्व पर मिटाने का कलम फेर दिया है। अब बताओ आकाश से मसीह किस की सेना में उतरेगा जबकि महदी नहीं है। इतनी पुस्तकें जिनकी अभी मैंने चर्चा की है वे तो इसी उद्देश्य से प्रस्तुत की जाती हैं कि महदी की सहायता के लिए मसीह आएगा अब जब महदी का ही अस्तित्व नहीं तो क्यों आएगा। ख़लीफ़ा तो कुरैश में से होना चाहिए। अतः वह तो

न रहा। देखो हम इन्साफ से कहते हैं कि उपरोक्त कथित पुस्तकों में जो हदीसें है उनकी दो टांगे थीं। एक टांग महदी वाली तो वह मौलवी मुहम्मद हुसैन ने तोड़ दी। अब दूसरी टांग मसीह के आकाश से उतरने की हम तोड़ देते हैं। क्योंकि दो भागों में से जब एक भाग झूठ हो जाए तो वह इस बात को अनिवार्य हुआ कि दूसरा भाग भी झूठ है। ईसा के लिए तो ख़िलाफ़त मान्य नहीं क्योंकि वह कुरैश में से नहीं और महदी का तो स्वयं मौलवी साहिब ने अन्त कर दिया। तो फिर ईसा को दोबारा पृथ्वी पर आने का क्यों कष्ट दिया जाए। उनको दो हज़ार वर्ष से बेकार रहने की आदत है और तबियत आराम तलब। अब अकारण फिर कष्ट देना अनुचित है।

इसके अतिरिक्त इन हदीसों के मध्य इतना विरोधाभास है कि यदि एक हदीस के विरुद्ध दूसरी हदीस तलाश करो तो तुरन्त मिल जाएगी। फिर इस से पवित्र क़ुर्आन के रोशन तर्कों को छोड़ना और ऐसी परस्पर विपरीत हदीसों के लिए ईमान नष्ट करना किसी अज्ञानी का काम है न कि बुद्धिमान का।

फिर यह भी सोचो कि यदि क़ुर्आन की विरोधी होकर हदीसें कुछ चीज़ हैं तो नमाज़ की हदीसों को तो सबसे अधिक महत्व होना चाहिए था और निरन्तरता के रंग में वे होनी चाहिए थीं। परन्तु वे भी आप लोगों के विवाद और फूट से रिक्त नहीं हैं। यह भी सिद्ध नहीं होता कि हाथ कहां बांधने चाहिए और रफ़ा यदैन और रफ़ा न करना और इमाम के पीछे फातिहा और आमीन बिलजहर इत्यादि के झगड़े भी अब तक सामाप्त होने में नहीं आए और कुछ-कुछ की हदीसों को तो रद्द कर रहे हैं। यदि एक वहाबी हनिफियों की मस्जिद में जाकर

रफ़ा यदैन करे और इमाम के पीछे फातिहा पढ़े और सीने पर हाथ बांदे आमीन ज़ोर से कहे तो यद्यपि इस अमल के समर्थन में चार सौ सही हदीसें सुनादें तब भी वह अवश्य मार खा कर आएगा। इस से सिद्ध होता है कि प्रारंभ से ही हदीसों को बहुत श्रेष्ठता नहीं दी गई और इमाम आज़म जो इमाम बुखारी से पहले गुज़र तुके हैं बुखारी की हदीसों की कुछ परवाह नहीं करते और उनका युग अधिक निकट का था। चाहिए था कि वे हदीसें उनको पहुँचती। इसलिए उचित है कि हदीस के लिए क़ुर्आन को न छोड़ा जाए अन्यथा ईमान हाथ से जाएगा- اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا (यूनुस -37) फिर यदि हकम (निर्णयकर्ता) का फैसला न भी माना जाए तो फिर वह हकम किस चीज़ का।

इसके अतिरिक्त यदि बहुत ही नर्मी करें तो इन हदीसों को गुमान का दर्जा दे सकते हैं और यही हदीस विदों का मत है। और ज़न्न वह है जिसके साथ झूठ की संभावना लगी हुई है फिर ईमान की बुनियाद केवल ज़न्न (गुमान) पर रखना और ख़ुदा के निश्चित एवं अटल कलाम को पीठ पीछे डाल देना कौन सी बुद्धिमता और ईमानदारी है। हम यह नहीं कहते कि समस्त हदीसों को रद्दी की तरह फेंक दो अपितु हम कहते हैं कि उनमें से वे स्वीकार करो जो क़ुर्आन के विपरीत और विरुद्ध न हों ताकि मर न जाओ। किसी हदीस से यह सिद्ध नहीं कि ईसा की आयु दो हज़ार वर्ष या तीन हज़ार वर्ष होगी। अपितु एक सौ बीस की आयु लिखी है। अब बताओ कि क्या एक सौ बीस वर्ष अब तक समाप्त हुए अथवा नहीं। किसी मर्फूअ मुत्तासिल हदीस में यह कहां लिखा है कि हज़रत ईसा छत फाड़कर आकाश

पर चढ़ गए थे और लानती बनाने के लिए उनका कोई हवारी या कोई शत्रु नियुक्त किया गया था। यदि हवारी था तो तौरात के अनुसार सलीब के कारण एक ईमानदार को मलऊन बनाया गया। क्या यह बुरा कार्य ख़ुदा की ओर सम्बन्ध हो सकता है। और यदि कोई और यहूदी था तो वह सलीब के समय चुप क्यों रहा। और क्या उसकी पत्नी तथा दूसरे रिश्तेदार मर गए थे और क्या वह गूंगा था जो अपने बरी होने के लिए तसल्ली न कर सका।

इसके अतिरिक्त मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब जो एकेश्वरवादियों के वकील कहलाते हैं आपने इशाअतुस्सुन्नः में जिसमें उन्होंने बराहीन अहमदिया का रीव्यू लिखा है लिखते हैं कि जिन लोगों को कश्फ़ द्वारा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उपस्थिति होती है वे मुहद्दिसों की अलोचना के पाबन्द नहीं हो सकते। कुछ हदीसें जो मुहाद्दिसों के नज़दीक सही हैं वे अपने कश्फ़ के अनुसार उनको बनावटी ठहराते हैं और कुछ हदीसें जो मुहद्दिसों के नज़दीक बनावटी हैं वे उनके बारे में अपने कश्फ़ की गवाही से सही होने का विश्वास रखते हैं। फिर जबकि यह बात है तो फिर वह जो मसीह मौऊद और हकम होने का दावा करता है मौलवी साहिब उस पर क्यों इतने नाराज़ हैं कि उसका कश्फ़ दूसरों के कश्फ़ के बराबर भी नहीं मानते हालांकि वह क़ुर्आन के अनुसार है। जब क़ुर्आन और कश्फ़ का परस्पर एक दूसरे की मदद करना हो गया अपितु कुछ हदीसों ने भी इसका समर्थन किया तो फिर उसके कथन को स्वीकार करना चाहिए अन्यथा मसीह मौऊद का नाम हकम रखने का क्या फायदा।

कुछ चालाक मौलवी कहते हैं कि यदि कोई आकाश से भी

उतरे और यह कहे कि अमुक-अमुक हदीस जो तुम मानते हो सही नहीं है तो हम कभी स्वीकार न करेंगे और उसके मुँह पर तमाचा मारेंगे। इसका उत्तर यही है कि हां हज़रात आपके अस्तित्व पर यही आशा है। परन्तु हम सादर निवेदन करते हैं कि फिर वह हकम का शब्द जो मसीह मौऊद के बारे में सही बुखारी में आया है उसके तनिक अर्थ तो करें। हम तो अब तक यही समझते थे कि हकम उसको कहते हैं कि मतभेद दूर करने के लिए उसका आदेश स्वीकार किया जाए और उसका फैसला यद्यपि वह हज़ार हदीस को भी बनावटी ठहराए अन्तिम समझा जाए। जो व्यक्ति ख़ुदा की ओर से आएगा वह आपके तमांचे खाने को तो नहीं आएगा। ख़ुदा तआला उसके लिए स्वयं रास्ता निकाल देगा। जिस व्यक्ति को ख़ुदा ने कश्फ़ और इल्हाम प्रदान किया और उसके हाथ पर बड़े-बड़े निशान प्रकट किए और क़ुर्आन के अनुसार एक मार्ग उसको दिखा दिया तो फिर वह कुछ काल्पनिक हदीसों के लिए उस रोशन और निश्चित मार्ग को क्यों त्याग देगा। और क्या उस पर अनिवार्य नहीं है कि ख़ुदा ने जो कुछ उसे दिया है उस पर अमल करे। और यदि ख़ुदा की पवित्र वह्यी से हदीसों का कोई निबन्ध विरोधी पाए और अपनी वह्यी को क़ुर्आन से अनुकूल पाए तथा कुछ हदीसों को भी उसके समर्थक देखे तो ऐसी हदीसों को छोड़ दे और उन हदीसों को स्वीकार करे जो क़ुर्आन के अनुसार हैं और उसकी वह्यी के विरुद्ध नहीं।

मुझे आश्चर्य है कि ऐडवोकेट साहिब किस प्रकार की तबीयत रखते हैं कि यह तो स्वयं मानते हैं कि पहले वली ऐसे गुज़रे हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उपस्थिति से सही हदीस को

ग़लत ठहराते थे। परन्तु आप को शर्म आती है कि यह पद मसीह मौऊद को भी जो हकम है प्रदान करें। और आश्चर्य यह कि आप के अनुयायी किस प्रकार के हैं कि उनको यह नहीं पूछते कि दूसरे वलियों के तो ये अधिकार हैं फिर हकम को इन मतभेदों के कारण काफ़िर ठहराते हो और क्यों ख़ुदा से नहीं डरते। मैं आश्चर्य करता हूं कि वृद्धावस्था के कारण मौलवी मुहम्मद हुसैन की स्मरण शक्ति पर कैसे पत्थर पड़ गए याद न रहा कि इशाअ तुस्सुन्नः में क्या लिखा है और अब क्या कहते हैं। साहिब मन! इक़रार के बाद कोई क़ाज़ी इन्कार नहीं सुन सकता। आप तो इकरार कर चुके हैं कि अहले कश्फ़ और वार्तालापों का मुक़ाम बुलन्द है। उनके लिए आवश्यक नहीं है कि अकारण मुहद्दिसों की अलोचना का आज्ञापालन करें। अपितु मुहद्दिसों ने तो मुर्दों से रिवायत की है और अहले क़श्फ ज़िन्दा हय्यु-क़य्यूम से सुनते हैं। फिर आप का उस व्यक्ति के बारे में क्या गुमान है जिसका नाम हकम रखा गया है। क्या यह पद उसको प्राप्त नहीं जो आप दूसरों के लिए प्रस्तावित करते हैं। फिर मौलवी सनाउल्लाह साहिब कहते हैं कि आप को मसीह मौऊद की भविष्यवाणी का विचार दिल में क्यों आया। अन्ततः वह हदीसों से ही लिया गया फिर हदीसों की ओर निशानियां क्यों स्वीकार नहीं की जाती। ये सीधे-सादे या तो इफ़्तिरा से ऐसा कहते हैं और या केवल मूर्खता से और हम इसके उत्तर में ख़ुदा तआला की क़सम खा कर वर्णन करते हैं कि मेरे इस दावे की बुनियाद हदीस नहीं बल्कि क़ुर्आन और वह वह्यी है जो मुझ पर उतरी। हां समर्थन के तौर पर हम वे हदीसें भी प्रस्तुत करते हैं जो पवित्र क़ुर्आन के अनुसार हैं और मेरी वह्यी के विरुद्ध नहीं। तथा दूसरी हदीसों को हम रद्दी के

समान फेंक देते हैं। यदि हदीसों का दुनिया में अस्तित्व भी न होता तब भी मेरे इस दावे को कुछ हानि न पहुँचती थी। हां ख़ुदा ने मेरी वह्यी में जगह-जगह पवित्र क़ुर्आन को प्रस्तुत किया है। अतः तुम बराहीन अहमदिया में देखोगे कि इस दावे के बारे में कोई हदीस वर्णन नहीं की गई। ख़ुदा तआला ने जगह-जगह मेरी वह्यी में क़ुर्आन को प्रस्तुत किया है। मैं अब विचार करता हूं कि मौलवी सनाउल्लाह साहिब ने कुछ मौजा मुद्द के मुबाहसे में धोखा देने के तौर पर ऐतराज़ प्रस्तुत किए थे सब का पर्याप्त उत्तर हो चुका है। हां याद आया कि उन्होंने एक यह भी विचार प्रस्तुत किया था कि जो सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण की हदीस जो महदी के प्रकट होने की निशानी है जो दारे क़ुत्नी और पुस्तक इक्मालुद्दीन में मौजूद है उसमें क़मर (चन्द्रमा) का ग्रहण तेरहवीं तिथि से पहले किसी ऐसी तिथि में होगा जिसमें चन्द्रमा को कमर कह सकते हों। अतः स्मरण रहे कि यह भी यहूदियों के समान अक्षरांतरण है। ख़ुदा ने क़मर के ग्रहण के लिए अपनी सुन्नत के अनुसार तीन रातें निर्धारित कर रखी हैं। और ऐसा ही सूर्य के लिए तीन दिन निर्धारित हैं और हदीस में स्पष्ट वर्णन है कि उस युग में जब महदी पैदा होगा क़मर (चन्द्रमा) का ग्रहण उसकी पहली रात में होगा जो प्रकृति के नियम में उसके ग्रहण के लिए निर्धारित है सूर्य का ग्रहण उसके बीच के दिन में होगा जो उसके ग्रहण के लिए अल्लाह की सुन्नत में निर्धारित है। इस सीधे अर्थ को छोड़ना और दूसरी और बहकते फिरना यदि दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है।

इसके अतिरिक्त अरब के नज़दीक वह रात जिसमें हिलाल को क़मर कहा जाता है कोई विशिष्ट रात नहीं जिसमें मतभेद

न हो। कुछ कहते हैं कि एक रात हिलाल रहता है दूसरी रात क़मर आंरभ होता है। कुछ तीसरी रात के चन्द्रमा को क़मर कहते हैं। कुछ के नज़दीक सात रात तक हिलाल ही है तो इस स्थिति में भविष्यवाणी के प्रकट होने के लिए कोई विशेष रात निश्चित नहीं रहती।

और यह कहना कि अल्लाह की सुन्नत के अनुसार सूर्य चन्द्र ग्रहण होना कोई विलक्षण बात नहीं। यह दूसरी मूर्खता है। इस भविष्यवाणी का मूल उद्देश्य यह नहीं है कि किसी विलक्षण चमत्कार का वादा किया जाए अपितु मूल उद्देश्य एक निशानी को वर्णन करना है जिसमें दूसरा भागीदार न हो।

अतः हदीस में यह निशानी वर्णन की गई है कि जब वह सच्चा महदी दावा करेगा तो उस युग में क़मर रमज़ान के महीने में अपने ग्रहण को पहली रात में ग्रहण लगेगा और ऐसी घटना पहले कभी सामने नहीं आई होगी और किसी झूठे महदी के समय रमज़ान के महीने में और उन तिथियों में कभी चन्द्र और सूर्य ग्रहण नहीं हुआ और यदि हुआ है तो उसको प्रस्तुत करो अन्यथा जब कि यह स्थिति अपनी सर्वांगपूर्णता की दृष्टि से स्वयं विलक्षण है। तो क्या आवश्यकता कि अल्लाह की सुन्नत के विरुद्ध कोई और अर्थ किए जाएं। उद्देश्य तो एक निशानी का बताना था तो वह प्रमाणित हो गई। यदि प्रमाणित नहीं तो इस घटना का इतिहास के पृष्ठ से कोई उदाहरण तो प्रस्तुत करो। और स्मरण रहे कि कदापि प्रस्तुत न कर सकोगे।

उर्दू नज़्म

क्यों नहीं लोगों तुम्हें हक़ का ख्याल,
दिल में आता है मेरे सौ सौ उबाल।

आँख तर है दिल में मेरे दर्द है,
क्यों दिल पर मेरे इस क़दर यह गर्द है।

दिल हुआ जाता है हर दम बेक़रार,
किस बियाबां में निकालूं यह बुखार।

हो गए हम दर्द से ज़ेरो ज़बर,
मर गए हम, पर नहीं तुम को ख़बर।

आस्मां पर ग़ाफ़िलों एक ज़ोर है,
कुछ तो देखो गर तुम्हें कुछ होश है।

हो गया दीं कुफ्र के हम्लों से चूर,
चुप रहे कब तक ख़ुदा बन्दे ग़यूर।

इस सदी का बीसवां अब साल है,
शिर्क बिदअत से जहां पामाल है।

बदगुमां क्यों हो ख़ुदा कुछ याद है,
इफ़्तिरा की कब तलक बुनियाद है।

वह ख़ुदा मेरा, जो है जौहर शनास,
इक जहां को ला रहा है मेरे पास।

लानती होता है मर्दे मुफ्तरी,
लानती को कब मिले यह सर्वरी।

एक और बात रह गई जिसका वर्णन करना अनिवार्य है वह यह है कि मुद्द के मबाहसे में जब हमारे मुख़लिस दोस्त सय्यिद मुहम्मद सर्वर शाह साहिब ने 'ऐजाज़ुलमसीह' जो मेरी अरबी पुस्तक है बतौर निशान प्रस्तुत किया कि यह एक चमत्कार है और इसके उदाहरण पर विरोधी समर्थ नहीं हुए। तो मौलबी सनाउल्लाह साहिब ने मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी का हवाला देकर कहा कि उन्होंने ऐजाज़ुलमसीह की ग़लतियों के बारे में एक लम्बी लिस्ट तैयार की है। हम मानते हैं कि तैयार की होगी परन्तु वह ऐसी ही लिस्ट होगी जैसा कि पहले कथित मौलवी साहिब ने मेरे एक वाक्य पर ऐतराज़ किया था कि अजब का लाम सिला नहीं आता। और इस पर बहुत ज़ोर दिया था। और जब उनको कई पुराने उस्तादों और जाहिलियत के युग के शायरों के शेर अपितु कुछ हदीसें दिखलाई गईं जिनमें लाभ सिला आया था तो फिर मौलवी साहिब शर्म के कुएँ में ऐसे डूब गए कि कोई उनका साथी साहित्यकार भी उस कुएं से उनको निकाल न सका। यह उन्ही दिनों की बात है जब मौलवी साहिब के अपमान के लिए भविष्यवाणी की गई थी और विज्ञापन में लिखा गया था कि वह भविष्यवाणी दो प्रकार से पूरी हुई।

प्रथम यह कि मौलवी साहिब की कपटाचारियों जैसी आदत सिद्ध हो गई कि सरकार को तो यह तसल्ली देते हैं कि महदी कुछ चीज़ नहीं। समस्त हदीसें मजरुह (वह बयान जो जिरह में बिगड़ गया हो) हैं विश्वसनीय नहीं। कैसा महदी और कैसा मसीह जो आकाश से

उसकी सहायता के लिए आएगा। सब बातें निराधार हैं और इन बातों को प्रस्तुत करके बड़े इनाम के इच्छुक मालूम होते हैं। और यदि वह दिल से ऐसे महदी और ऐसे मुजाहिद ईसा का इन्कार करते तो हम भी उन पर बहुत प्रसन्न होते। क्योंकि सच बोलने वाला सम्मान योग्य होता है और इस स्थिति में यदि सरकार न केवल लायलपुर में कुछ भूमि अपितु बटाला उसकी जागीर में दे देती तो भी उनका अधिकार था। परन्तु हम इस पर राज़ी नहीं हैं और कदापि नहीं हो सकते कि एक व्यक्ति मात्र कपट के तौर पर सरकार के आगे महदी की कमज़ोर और मजरुह हदीसों की एक लिस्ट प्रस्तुत करके यह विश्वास कराना चाहता है कि मुसलमान ऐसे महदी तथा ऐसे ईसा के प्रतिक्षक नहीं हैं जो ईसाइयों के साथ लड़ेगा। और यह विश्वास दिलाता है कि मेरी तो यही आस्था है कि कोई ऐसा महदी नहीं आएगा जो ख़ून बहाने से क़यामत मचा देगा। और न ऐसा कोई मसीह जो आकाश से उतर कर उसका हाथ बटाएगा। और फिर गुप्त तौर पर अपनी क़ौम को यह कहता है कि ऐसे महदी से इन्कार करना कुफ्र है और विचित्रतर यह कि इन कार्यवाइयों से उसके सम्मान में कुछ अन्तर नहीं आया और न उसके अनुयायियों का कुछ सम्मान बिगड़ा।

अतः यही अपमान था जो मौलवी मुहम्मद हुसैन को प्राप्त हुआ, जिसमें जाफ़र जटली इत्यादि अनेक अनुयायी भागीदार हैं। चाहे निर्लज्जता से महसूस करें या न करें। और दूसरा अपमान ज्ञान के रंग में उनको प्राप्त हुआ कि अकारण लोगों ने शोर मचाया कि अजब का सिला लाम कदापि नहीं आता, बड़ी ग़लती की है। परन्तु मौलवी सनाउल्लाह का इरादा यह मालूम होता है कि ये क्या अपमान

हैं कोई और अपमान होना चाहिए था और कहते हैं कि उनको तो भूमि मिल गई हालांकि यही भूमि तो उनके अपमान की गवाह है। और दोरंगी पर अटल गवाह हैं जब तक वह भूमि उनके हाथ में है यह दोरंगी भी उस भूमि का एक फल समझी जाएगी। या यों समझ लो कि भूमि उसका फल है और तुम छान-बीन कर लो कि समस्त सफलता एक कपटपूर्ण कार्यवाही का परिणाम हैं इन लोगों के यदि गुप्त विश्वास देखने हों तो सिद्यीक हसन की पुस्तकें देखनी चाहिएं जिनमें वह नऊज़ुबिल्लाह महामहिम महारानी को भी महदी के सामने प्रस्तुत करता है और अत्यंत बुरे और घृष्टता के शब्दों से याद करता है जिसको हम यहां किसी प्रकार नक़ल नहीं कर सकते। उन पुस्तकों को जो चाहे देख ले। यह वही सिद्दीक़ हसन है जिसको मुहम्मद हुसैन ने मुजद्दिद बनाया हुआ था। भला क्योंकर और किस प्रकार से अपने मुजद्दिद की राय से उनकी राय अलग हो सकती है, कदापि नहीं। यह बात तो बुहत अच्छी है कि बर्तानवी सरकार की सहायता की जाए और जिहाद की ख़राब समस्या के विचार को दिलों से मिटा दिया जाए और ऐसे खून बहाने वाले महदी और खून बहाने वाले मसीह से इन्कार किया जाए। परन्तु काश यदि हार्दिक सच्चाई से मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब ये बातें सरकार के सामने प्रस्तुत करते तो निस्सन्देह हमारी नज़र में भी प्रशंसनीय ठहरते। परन्तु अब उनकी विरोधावासी पुस्तकों जो सरकार के सामने कुछ बयान हैं और अपने भाइयों के साथ हुजरे के अन्दर कुछ बयान। ये उनके कपटाचार पूर्ण तरीके को सिद्ध कर रहे हैं और कपटाचारी ख़ुदा के नज़दीक भी अपमानित होता है और सृष्टि के नज़दीक भी। ये लोग वास्तव में

कठिनाइयों में हैं। इनकी तो कई आस्थाएं सरकार के हित के विपरीत हैं। अब यदि कपटपूर्ण तरीका ग्रहण न करें तो क्या करें।

अतः मौलवी मुहम्मद हुसैन सहिब की अरबीदानी के हम आज से काइल नहीं अपितु उसी समय से हम क़ाइल हैं जब उन्होंने फ़रमाया था कि अजब का सिला लाम कदापि नहीं आता। ऐसे प्रचण्ड विद्वान ने यदि ऐजाज़ुलमसीह की ग़लतियों की एक लम्बी लिस्ट तैयार की हो तो हमें इससे कब इन्कार है अवश्य तैयार की होगी। मौलवी सनाउल्लाह साहिब को मालूम होगा कि अरबी के मुक़ाबले का पहला निशाना यही विद्वान साहिब हैं जिन को मैंने लिखा था कि हम आपको प्रति ग़लती पाँच रुपये इनाम दे सकते हैं बशर्ते कि प्रथम आप अपना अरबीदान होना सिद्ध कर दें और वह इस प्रकार से कि मेरे कंधे से कंधा बैठकर किसी आयत की तफ़्सीर एक भाग या दो भाग तक सरस अरबी में लिखें। तत्पश्चात् आप की ओर से कोई आवाज़ नहीं आई। प्रत्येक मनुष्य समझ सकता है कि ग़लती निकालना उस व्यक्ति का अधिकार है जो पहले अपनी योग्यता सिद्ध करे अन्यथा केवल बकवास है। यदि उदाहरणतया कोई व्यक्ति इमारत की कला से अनभिज्ञ मात्र हो और यह कहता फिरे कि इस देश के भवननिर्माता (मिस्त्री) अपने कार्य में ग़लती करते हैं तो क्या वह इस योग्य नहीं होगा कि उसको कहा जाए कि हे मूर्ख तू एक ईंट भी उचित प्रकार से लगा नहीं सकता तो उन भवन निर्माताओं पर क्यों ऐतराज़ करता है जिन के हाथ से बहुत सी इमारतें तैयार मौजूद हैं।

अब स्मरण रहे कि यद्यपि मैं अब तक अरबी में सत्रह के लगभग अद्वितीय पुस्तकें प्रकाशित कर चुका हूं जिनके मुकाबले में

इस दस वर्ष की अवधि में विरोधियों ने एक पुस्तक भी प्रकाशित नहीं की। परन्तु आज मुझे विचार आया कि चूंकि वे पुस्तकें केवल सरस-सुबोध अरबी में ही नहीं अपितु उनमें बहुत सी क़ुर्आनी वास्तविकताएं और अध्यात्मक ज्ञान हैं। इसलिए संभव है कि वे लोग यह उत्तर दें कि हम वास्तविकताओं और अध्यात्मिक ज्ञानों से अनभिज्ञ हैं। यदि केवल सरस अरबी में नज़्म (कविता) होती जैसे समान्य क़सीदे होते हैं तो हम निस्सन्देह उसका उदाहरण बना सकते, तथा यह भी विचार आया कि मौलवी सनाउल्लाह साहिब से यदि केवल पुस्तक 'ऐजाज़ुलमसीह' का उदाहरण मांगा जाए तो वह इस में अवश्य कहेंगे कि क्योंकर सिद्ध हो कि सत्तर दिन के अन्दर यह पुस्तक लिखी गई है। और यदि वह हुज्जत प्रस्तुत करे कि यह पुस्तक दो वर्ष में बनाई गई है और हमें भी दो वर्ष की मुहलत (छूट) मिले तो कठिन होगा कि हम सफाई से उनको सत्तर दिन का सबूत दे सकें। इन कारणों से उचित समझा गया कि ख़ुदा तआला से यह निवेदन किया जाए कि एक सादा क़सीदा बनाने के लिए रुहुलक़दुस से मुझे समर्थन दें। जिसमें **मुद्द के मुबाहसे** की चर्चा हो। ताकि इस बात के समझने के लिए परेशानी न हो कि वह क़सीदा कितने दिन में तैयार किया गया है। तौ मैंने दुआ की कि हे शक्तिमान ख़ुदा! मुझे निशान के तौर पर सामर्थ्य दे कि ऐसा क़सीदा बनाऊं और वह मेरी दुआ स्वीकार हो गई और रुहुलक़ुदुस से मुझे एक विलक्षण समर्थन मिला और वह क़सीदा मैंने पाँच दिन में ही समाप्त कर लिया। काश यदि कोई अन्य कार्य विवश न करता तो वह क़सीदा एक दिन में ही समाप्त हो

जाता काश यदि छपने में कुछ देर★ न लगती तो 9 नवम्बर 1902 ई० तक वह क़सीदा प्रकाशित हो सकता था।

यह एक महान निशान है जिस के गवाह स्वयं मौलवा सनाउल्लाह साहिब हैं। क्योंकि क़सीदे से स्वयं सिद्ध है कि उन के मुबाहसे के बाद बनाया गया है तथा मुबाहसा 29 और 30 अक्तूबर 1902 ई० को हुआ था और हमारे दोस्तों के वापस आने पर 8 नवम्बर 1902 ई० को इस क़सीदे का बनना आरंभ किया गया और 12 नवम्बर 1902 ई० को इस उर्दू इबारत सहित समाप्त हो चुका था। चूंकि मैं हार्दिक विश्वास से जानता हूं कि ख़ुदा के समर्थन का यह एक बड़ा निशान है ताकि वह विरोधी को शर्मिन्दा और निरुत्तर करे। इसलिए मैं इस निशान को दस हज़ार रुपये के इनाम के साथ मौलवी सनाउल्लाह और उसके सहायकों के सामने प्रस्तुत करता हूं कि यदि वे इसी मीआद (अवधि) में अर्थात पांच दिन में ऐसा क़सीदा इतने ही उर्दू निबंध सहित उत्तर के, कि वह भी एक निशान है, बना कर प्रकाशित कर दें तो मैं अविलम्ब दस हज़ार रुपया उनको दे दूंगा। छपवाने के लिए उनको एक सप्ताह की मुहलत देता हूं। ये कुल बारह दिन हैं और दो दिन डाक के लिए भी उनका अधिकार है। तो यदि इस तिथि से कि यह क़सीदा और उर्दू इबारत उनके पास पहुँचे चौदह दिन तक इतने ही शेर सरस-सुबोध जो इस मात्रा और संख्या से कम न हों, प्रकाशित कर दें तो मैं दस हज़ार रुपया उनको इनाम दे दूंगा। उनको अधिकार होगा कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब से मदद लें या किसी और साहिब से मदद लें। तथा इस

★ हाशिया - देर का एक यह भी कारण हुआ कि मुझे मुन्सिफ साहिब की अदालत में तिथि 7 नवम्बर 1902 ई० को बटाला में जाना पड़ा। असल लिखने का समय तो मात्र तीन दिन थे और दो दिन हानि के कारण और अधिक हो गए। (इसी से)

कारण से भी उनको कोशिश करनी चाहिए कि मेरे एक विज्ञापन में भविष्यवाणी के तौर पर ख़बर दी गई है कि अन्तिम दिसम्बर 1902 ई० तक कोई विलक्षण निशान प्रकट होगा। और यद्यपि वह निशान अन्य रुपों में भी प्रकट हो गया है परन्तु यदि मौलवी सनाउल्लाह तथा दूसरे सम्बोधितों ने इस मीआद के अन्दर इस क़सीदे और उस उर्दू निबन्ध का उत्तर न लिखा या न लिखवाया तो यह निशान उनके द्वारा पूरा हो जाएगा। इसलिए उन पर अनिवार्य है कि यदि वे मेरे कारोबार को मनुष्य की योजना समझते हैं★ तो मुकाबला करके इस निशान को किसी प्रकार रोक दें। और देखो मैं क़सम खा कर कहता हूँ यदि वह अकेले या दूसरों को सहायता से निर्धारित मीआद के अन्दर और क़सीदे और उर्दू इबारत के अनुसार तथा उनकी संख्या के अनुसार क़सीदा छपवा

★ **हाशिया:-** चूंकि गालियां और झुठलाना चरम सीमा तक पहुँच गया है जिनके पेपर मेरे पास एक बड़े थैले में सुरक्षित हैं। और ये लोग अपने विज्ञापनों में बार-बार पहले निशानों को झुठलाते और भविष्य में निशान मांगते हैं। इसलिए हम उनको ये निशान देतें हैं और ऐसा ही ईसाइयों ने भी मुझे सम्बोधित करके बार- बार लिखा है कि इंजील में है कि झूठे मसीह आएंगे। और इस प्रकार से उन्होंने मुझे झूठा मसीह ठहराया है। हालांकि स्वयं इन दिनों में विशेष तौर पर लन्दन में ईसाइयों में से झूठा मसीह पिगट नामक मौजूद है जो ख़ुदाई और मसीहियत का दावा करता है और इंजील की भविष्यवाणी को पूरा कर रहा है परन्तु भविष्य में यदि कोई झूठा ठहराना चाहे तो उस पर अनिवार्य है कि मेरे निशानों का मुकाबला करे। ईसाइयों में से भी बहुत से मुर्तद मौलवी होने का दावा करते हैं। यदि पादरी लोग इस झुठलाने में सच्चे हैं तो वे ऐसा क़सीदा उन मौलवियों से पाँच दिन तक बनवा कर मुझ से हज़ार रुपया लें और मिशन के कार्यों में खर्च करें। परन्तु जो व्यक्ति निर्धारित तिथि के पश्चात् कुछ बकवास करेगा या कोई लेख दिखाएगा उसका लेख किसी गन्दी नाली में फेंकने के योग्य होगा। (इसी से)

कर प्रकाशित करेंगे और वसूल करने की तिथि से बारह दिन के अन्दर डाक द्वारा मेरे पास भेज देंगे तो मैं केवल यही नहीं करुंगा कि दस हज़ार रुपया उनको इनाम दूंगा अपितु इस विजय से मेरा झूठा होना सिद्ध होगा। इस स्थिति में मौलवी सनाउल्लाह साहिब और उनके साथियों को अकारण के इफ़्तिराओं की आवश्यकता नहीं रहेगी और मुफ्त में उनकी विजय हो जाएगी। अन्यथा उनका अधिकार नहीं होगा कि फिर कभी मुझे झूठा कहें या मेरे निशानों को झूठलाएं। देखो मैं आकाश और पृथ्वी को गवाह रखकर कहता हूं कि आज की तिथि से इस निशान पर घेराव रखता हूं। यदि मैं सच्चा हूं और ख़ुदा तआला जानता हैं कि मैं सच्चा हूं तो कभी संभव नहीं होगा कि मौलवी सनाउल्लाह और उनके समस्त मौलवी पाँच दिन में ऐसा क़सीदा बना सकें और उर्दू निबंध का खण्डन लिख सकें क्योंकि ख़ुदा तआला उनकी कलमों को तोड़ देगा और उनके दिलों को मंद बुद्धि कर देगा और मौलवी सनाउल्लाह को इस कुधारणा की ओर मार्ग नहीं है कि वह यह कहे कि क़सीदा पहले से बना रखा था। क्योंकि वह तनिक आँख खोल कर देखें कि मुद्द के मुबाहसे का इसमें ज़िक्र है। अतः यदि मैंने पहले बनाया तब तो उन्हें मानना चाहिए कि मैं अंतर्यामी हूं। बाहरहाल यह भी एक निशान हुआ। इसलिए अब उनको किसी ओर भागने का मार्ग नहीं और आज वह इल्हाम पूरा हुआ जो ख़ुदा ने फ़रमाया था।

क़ादिर के कारोबार नमूदार हो गए,
काफिर जो कहते थे वह गिरफ़्तार हो गए।

और स्पष्ट रहे कि मौलवी सनाउल्लाह के द्वारा मेरे तीन निशान शीघ्र ही प्रकट होंगे-

(1) वह क़ादियान में समस्त भविष्यवाणियों की पड़ताल के लिए मेरे पास कदापि नहीं आएंगे। और सच्ची भविष्यवाणियों का अपनी कलम से सत्यापान करना उन के लिए मृत्यु होगी।

(2) यदि इस चेलेन्ज पर वह तैयार हुए कि झूठा सच्चे से पहले मर जाए तो वह अवश्य पहले मरेंगे।

(3) और सर्वप्रथम उस उर्दू निबन्ध और अरबी क़सीदे के मुकाबले से असमर्थ रह कर शीघ्र ही उनका गुनाहगार होना सिद्ध हो जाएगा।

और चूंकि इन दिनों में मौलवी मुहम्मद हुसैन ने साईं मेहर अली गोलड़ी के ज्ञान की अपने इशाअतुसुन्नः में बहुत ही प्रशंसा की है और अली हायरी साहिब शिया अपनी प्रशंसा में फूल रहे हैं। इसलिए मैं उनको भी इस मुकाबले के लिए बुलाता हूं। गालियां देने और ठट्ठा करने में इन लोगों की जीभ चालाक है। परन्तु अब मैं देखूंगा कि ख़ुदा से उनको कितनी सहायता मिल सकती है। मैंने इन लोगों के बारे में भी इस क़सीदे में कुछ लिखा होता इनके स्वाभिमान को कुछ हरकत दूं। यह एक अन्तिम फैसला है। शिया हुसैन से सहायता लें और गोलड़ी साहिब किसी अपने पीर से और मौलवी सनाउल्लाह और उनके साथी तो स्वयं मौलवी कहलाते हैं नाखूनों तक ज़ोर लगा लें।

मैंने इस क़सीदे में जो इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो के बारे में लिखा है या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में वर्णन किया है यह मानवीय कार्यवाही नहीं। पापी है वह मनुष्य जो अपने नफ़्स से कामिलों और सत्यनिष्ठों को गालियां देता है। मैं विश्वास रखता हूं कि कोई इन्सान हुसैन जैसे या हज़रत ईसा जैसे सत्यनिष्ठ को गालियां देकर एक रात

भी ज़िन्दा नहीं रह सकता और वईद مَنْ عَادَا وَ لِيًّا لِيْ हाथों हाथ उसको पकड़ लेता है। अतः मुबारक वह जो आकाश के हितों को समझता है और ख़ुदा की कूटनीतियों पर विचार करता है। और मेरी ओर से केवल दस हज़ार के इनाम का वादा नहीं अपितु वह दुष्ट जो गालियां देने से नहीं रुकता और उपहास करने से नहीं रुकता और अपमान करने की आदत को नहीं छोड़ता और प्रत्येक मज्लिस में मेरे निशानों से इन्कार करता है उसको चाहिए कि निर्धारित मीआद में इस निशान का उदाहरण प्रस्तुत करे। अन्यथा हमेशा के लिए और दुनिया के समाप्त होने तक निम्नलिखित लानतें उस पर आकाश से पड़ती रहेंगी। विशेष तौर पर मौलवी सनाउल्लाह सहिब जो स्वयं उन्होंने मेरे बारे में दावा किया है कि इस व्यक्ति का कलाम चमत्कार नहीं है। उनको डरना चाहिए कि खामोश रह कर इन लानतों के नीचे कुचले न जाएं और वे लानते ये हैं:-

1. लानत ----------
2. लानत ----------
3. लानत ----------
4. लानत ----------
5. लानत ----------
6. लानत ----------
7. लानत ----------
8. लानत ----------
9. लानत ---------
10. लानत ----------

ये पूरी दस हैं।

अब मैं अपने शक्तिमान, कृपालु, क़ुद्दूस और स्वाभिमानी ख़ुदा पर भरोसा करके क़सीदे को लिखता हूं और अपने समर्थक एवं उपकारी से सहायता चाहता हूं। हे मेरे प्यारे सामर्थ्यवान और हृदयों के रहस्यों के गवाह! मेरी सहायता कर और ऐसा कर कि यह तेरा निशान दुनिया में चमके और कोई विरोधी निर्धारित मीआद में इसका उदाहरण बनाने में समर्थ न हो। हे मेरे प्यारे ऐसा ही कर और बहुतों को इस निशान और इस सम्पूर्ण निबंध से हिदायत दे। आमीनः सुम्मा आमीन और वह क़सीदा यह है:-

(चमत्कारी कसीदः)

اَیَا اَرْضَ مُدٍّ★ قَدْ دَفَاکِ✲ مُدَمَّرُ
وَاَرْدَاکِ ضِلِّیْلٌ وَّ اَغْرَاکِ مُوْغِرُ

हे मुद्द की भूमी! एक मरे हुए ने तेरे घायल होने की अवस्था में तुझे मार दिया और बहुत गुमराह करने वाले ने तुझे मारा और एक क्रोध दिलाने वाले ने तुझे उकसाया।

دَعَوْتِ کَذُوْبًا مُّفْسِدًا صَیْدِیَ الَّذِیْ
کَحُوْتِ غَدِیْرٍ اَخْذُہٗ لَا یُعَذَّرُ

★ **हाशिया :-** मुद नाम अरबी भाषा का संज्ञावाचक नाम भी है। मुसलमान जिन जिन देशों में गए और जो जो उन्होंने नाम रखे प्रायः अरबी हैं।

✲ दफू के अर्थ हैं कमज़ोर को और कमज़ोर करना अतः मुद के लोग अपने वहमों के कारण पहले ही कच्चे ख्याल के थे सनाउल्लाह ने जाकर और झूठ बोल कर उन को कमज़ोर कर दिया और वह ख़ुद मुदमर था अर्थात मेरे आगे हलाक होने वाला। हलाक हुए ने इन नादानों को हलाक कर दिया। इसी से

अनुवाद- तू ने झूठे उपद्रवी, मेरे शिकार को बुला लिया जिसका पकड़ना तालाब की मछली की तरह बुरा काम नहीं

وَجَـاءَ كِ صَحْـبِیْ نَاصِحِـیْنَ كَاِخْـوَةٍ
یَقُوْلُـوْنَ لَاتَبْغُـوْا هَـوًی وَ تَصَـبَّرُوْا

अनुवाद- और मेरे मित्र तेरे पास आए जो भाईयों की तरह नसीहत करते थे और कहते थे कि लोभ-लालच की तरफ न झुको और सब्र करो।

فَظَـلَّ أُسَـارٰی كُـمْ اُسَـارٰ ی تَعَصُّـبٍ
یُرِیْـدُوْنَ مَـنْ یَّعْـوِیْ كَذِئْـبٍ وَّ یَخْـتِرُ

तो तुम में से वे लोग जो पक्षपात के कैदी थे उन्होने चाहा कि ऐसा व्यक्ति तालाश करें जो भेड़िए की तरह चीखे और छल करे।

فَجَـاءُوْا بِذِئْـبٍ بَعْـدَ جُهْـدٍ اَذَابَـهُمْ
وَ نَعْـنِیْ ثَنَـاءَ اللّٰهِ مِنْـهُ وَ نُظْهِـرُ

फिर बहुत प्रयास के पश्चात् एक भेड़िए को लाए और इस से हमारा अभिप्राय सनाउल्लाह है तथा हम प्रकट करते हैं।

فَلَمَّـا اَ تَاهُـمْ سَـرَّهُمْ مِّـنْ تَصَلُّـفٍ
وَقَـالَ افْرَحُـوْا اِنِّیْ كَمِـیٌّ مُّظَفَّـرُ

तो जब उनके पास आया तो शेखी वघार कर उनको प्रसन्न कर दिया और कहा तुम प्रसन्न हो जाओ मैं बहादुर विजयी हूं।

وَ قَـالَ اسْـتُرُوْا اَمْـرِیْ وَاِنِّیْ اَرُوْدُهُـمْ
اَخَـافُ عَلَیْـهِمْ اَنْ یَّفِـرُّوْا وَ یُدْبِـرُوْا

और कहा कि मेरे आने की बात गुप्त रखो कि मैं उनको तलाश कर रहा हूं तथा मैं डरता हूं कि वह भाग न जाएं।

وَاَرْضَـى اللِّئَـامَ اِذَا دَنَـا مِـنْ اَرْضِـهِمْ
عَـلَى النَّـارِ مَشَّـاهُمْ وَقَـدْ كَانَ يَبْطَـرُ

तथा लोगों को खुश किया जब उनकी ज़मीन से निकट हुआ। उन लोगों को आग पर चलाया और बहुत खुश हुआ।

تَكَلَّـمَ كَالْاَجْـلَافِ مِـنْ غَـيْرِ فِطْنَـةٍ
وَيَـأْتِيْـكَ بِالْاَخْبَـارِ مَـنْ كَانَ يَنْظُـرُ

अनुवाद- उसने नीच लोगों की तरह बुद्धिमता के बिना कलाम किया और देखने वालों से तू स्वयं सुन लेगा।

وَاِنْ كُنْـتَ فِي شَـكٍّ فَسَـلْ يَـا مُكَـذِّبِيْ
دَهَاقِـيْنَ مُـدٍّ وَّالْحَقِيْقَـةُ اَظْهَـرُ

और यदि तुझे सन्देह है तो मुद्द के ज़मीदारों से पूछ ले।

فَلَمَّـا الْتَقَـى الْجَمْعَـانِ لِلْبَحْـثِ وَالْوَغَـا
وَنُـوْدِيَ بَـيْنَ النَّـاسِ وَالْخَلْـقُ اُحْضِـرُوْا

तो जब दोनों पक्ष बहस के लिए एकत्र हो गए और लोगों में मुनादी कराई गई तथा लोग उपस्थित हो गए।

وَاَوْجَـسَ خِيْفَـةً شَـرِّهٖ بَعْـضُ رُفْقَـتِيْ
لِمَـا عَرَفُـوْا مِنْ خُبْـثِ قَـوْمٍ تَنَمَّـرُوْا

और गुप्त तौर पर मेरे कुछ साथियों के दिलों में भय हुआ, क्योंकि क़ौम की दरिन्दगी उन्होंने मालूम कर ली थी।

فَاُنْـزِلَ مِـنْ رَّبِّ السَّـمَاءِ سَـكِيْنَةٌ
عَـلٰى صُحْبَـتِيْ وَاللّٰهُ قَـدْ كَانَ يَنْصُـرُ

तो मेरे साथियों पर आकाश से तसल्ली उतारी गई और ख़ुदा सहायता कर रहा था।

وَاَعْطَاهُمُ الرَّحْمٰنُ مِنْ قُوَّةِ الْوَغٰی
وَ اَيَّدَهُمْ رُوْحٌ اَمِيْنٌ فَاَبْشَرُوْا

और ख़ुदा ने उनको लड़ाई की शक्ति दे दी और रुहुलक़ुदुस ने उनको सहायता दी तो वे ख़ुश हो गए।

وَ كَانَ جِدَالٌ يَطْرُدُ الْقَوْمَ بِالضُّحٰى
اِلٰى خِطَّةٍ اَوْمٰى اِلَيْهَا الْمَعْشَرُ

और लोग आठ बजे के लगभग बहस देखने के लिए रवाना हुए उस तकिए की तरफ,जिसकी तरफ गिरोह ने संकेत किया था।

تَحَرَّوْا لِهٰذَا الْبَحْثِ اَرْضًا شَجِيْرَةً
اِلَى الْجَانِبِ الْغَرْبِيِّ وَالْجُنْدُ جُمِّرُوْا

और बहस के लिए एक भूमि ग्रहण की गई जिसमें एक वृक्ष थे और वह स्थान गावं से पश्चिम की ओर था। हमारे कई मित्र वहां ठहर गए।

فَكَانَ ثَنَاءُ اللّٰهِ مَقْبُوْلَ قَوْمِهٖ
وَمِنَّا تَصَدّٰى لِلتَّخَاصُمِ سَرْوَرُ

अनुवाद- और सनाउल्लाह उसकी क़ौम की तरफ से मान्य था और हमारी तरफ से मौलवी सय्यद मुहम्मद सरवर शाह प्रस्तुत हुए।

كَاَنَّ مَقَامَ الْبَحْثِ كَانَ كَاَجْمَةٍ
بِهِ الذِّئْبُ يَعْوِى وَالغَضَنْفَرُ يَزْئَرُ

अनुवाद- जैसे बहस का स्थान एक ऐसे बन की तरह था जिसमें एक तरफ भेड़िया चीखता था और एक तरफ शेर दहाड़ता था।

وَقَامَ ثَنَاءُ اللّٰهِ يُغْوِىْ جُنُوْدَه
وَيُغْرِىْ عَلٰى صَحْبِىْ لِئَامًا وَّ يَهْذُرُ

अनुवाद- और सनाउल्लाह खड़ा हुआ अपनी जमाअत को बहका रहा था और मेरे दोस्तों पर भड़क रहा था।

وَ كَانَ طَوَى كَشْحًا عَلٰى مُسْتَكِنَّةٍ
وَ مَا رَادَ نَهْجَ الْحَقِّ بَلْ كَانَ يَهْجُرُ

अनुवाद- और उसने वैर को अपने सीने में ठान लिया तथा सच को तलाश न किया बल्कि बकवास करता रहा।

سَعٰى سَعْىَ فَتَّانٍ لِتَكْذِيْبِ دَعْوَتِىْ
وَ كَانَ يُدَسِّى مَا تَجَلّٰى وَ يَمْكُرُ

अनुवाद- उसे उपद्रव फैलाने वाले आदमी की तरह मेरे ख़ुदा की और बुलाने को झुठलाने का प्रयास किया और वह सच को छुपा रहा था और छल कर रहा था।

اَظْهَرَ مَكْرًا سَوَّلَتْ نَفْسُهٗ لَهٗ
وَلَمْ يَرْضَ طُوْلَ الْبَحْثِ فَالْقَوْمُ سُحِّرُوْا

अनुवाद- और एक छल उसने प्रकट किया जो उसके दिलों में पैदा हुआ और लम्बी बहस से इन्कार किया और क़ौम उसके धोखे में आ गई।

فَشَقَّ عَلٰى صَحْبِىْ طَرِيْقٌ اَرَادَه
وَقَدْ ظَنَّ اَنَّ الْحَقَّ يُخْفٰى وَيُسْتَرُ

अनुवाद- तो मेरे दोस्तों पर वह तरीका बुरा लगा जिसका उसने इरादा किया और उन्होने समझा कि इस से सच गुप्त रह जाएगा।

رَءَوْا بُرْجَ بُهْتَانٍ تُشَادُ وَ تُعْمَرُ
فَقَالُوْا لَحَاكَ اللّٰهُ كَيْفَ تُزَوِّرُ

अनुवाद- उन्होने झूठे आरोप का क़िला देखा जो बनाया जाता था तो

उन्होंने कहा कि ख़ुदा की डांट-डपट तुझ पर, तू कैसा झूठ बोल रहा है।

اَقَلُّ زَمَانِ الْبَحْثِ مِقْدَارُ سَاعَةٍ
فَلَمْ يَقْبَلِ الْحَمْقٰى وَصَحْبِيْ تَنَفَّرُوْا

कम से कम बहस का समय एक घंटा चाहिए तो मूर्खों ने स्वीकार न किया और मेरे दोस्त इस समय-सीमा से अप्रसन्न हुए।

رَضُوْا بَعْدَ تَكْرَارٍ وَّ بَحْثٍ بِثُلْثِهَا
وَفِي الصَّدْرِ حُزَّازٌ وَفِي الْقَلْبِ خَنْجَرُ

अन्त में कुछ बहस और बार-बार कहने के बाद सहमत हो गए कि बीस-बीस मिनट तक बहस हो और सीने क्रोध की जलन थी और दिल में खंजर था।

دَفَاهُمْ عَمَايَاتُ الْاُنَاسِ وَ حُمْقُهُمْ
رَأَوْا مُدَّ قَوْمٌ وَّالْمُدٰى قَدْ شَهَّرُوْا

क़ौम की मुर्खताओं ने उन्हे भुरभुरा कर दिया मुद्द गावं को उन्होंने ऐसी स्थिति में देखा कि छुरियां निकाली हुई थीं।

فَصَارُوْا بِمُدٍّ لِلرِّمَاحِ دَرِيَّةً
وَيَعْلَمُهَا اَحْمَدْ عَلِيُّ الْمُدَبِّرِ

तो मेरे दोस्त मुद्द में भालों के निशाने पर बन गए और इस बात को अहमद अली जो सभा का अध्यक्ष था खूब जानता था।

وَكَانَ ثَنَاءُ اللّٰهِ فِيْ كُلِّ سَاعَةٍ
يُأَجِّجُ نِيْرَانَ الْفَسَادِ وَ يُسْعِرِ

और सनाउल्लाह हर समय फसाद की आग भड़का रहा था।

أَرٰى مَنْطِقًا مَايَنْبَحُ الْكَلْبُ مِثْلَهُ
وَفِيْ قَلْبِهِ كَانَ الْهَوٰى يَتَزَخَّرُ

अनुवाद- ऐसी बातें की कि एक कुत्ता इस प्रकार आवाज़े नहीं निकालेगा और उसके दिल में इच्छा और लालच जोश मार रहा था।

وَ اِنَّ لِسَانَ الْمَرْءِ مَالَمْ يَكُنْ لَّهُ
اُصَاةٌ عَلٰى عَوْرَاتِهِ هُوَ مشعرُ

और मनुष्य की ज़ुबान जब तक उसके साथ बुद्धि न हो उसके गुप्त दोषों पर एक प्रमाण है।

يُكَلِّمُ حَتّٰى يَعْلَمَ النَّاسُ كُلُّهُمْ
جَهُوْلٌ فَلَا يَدْرِىْ وَ لَا يَتَبَصَّرُ

ऐसा मनुष्य क़लाम करता है यहां तक कि सब लोग जान लेते है कि यह मुर्ख आदमी है न बुद्धि है न विवेक।

وَلَوْلَا ثَنَاءُ اللّٰه مَازَالَ جَاهِلٌ
يَشُكُّ وَلَا يَدْرِىْ مَقَامِىْ وَيَحْصُرُ

और यदि सनाउल्लाह न होता तो एक मुर्ख मेरे बारे में सन्देह करता और मुझे प्रश्नो द्वारा तंग करता।

فَهٰذَا عَلَيْنَا مِنَّةٌ مِّنْ اَبِى الْوَفَا
اَرٰى كُلَّ مَحْجُوْبٍ ضِيَاءِىْ فَنَشْكُرُ

तो यह मौलवी सनाउल्लाह का हम पर उपकार है कि प्रत्येक लापरवाह को हमारे प्रकाश से सूचना दी अतः हम उसका आभार व्यक्त करते हैं।

اَرَى الْمَوْتَ يَعْتَامُ الْمُكَفِّرَ بَعْدَهٗ
بِمَاظَهَرَتْ آىُ السَّمَاءِ وَتَظْهَرُ

अब क़ाफिर कहने वाला जैसे मर जाएगा , क्योंकि हमारी विजय से ख़ुदा का निशान प्रकट हुआ।

وَلَمَّا اعْتَدَى الْاَمْرَتْسَرِیْ بِمَکَایِدٍ
وَاَغْرٰى عَلٰى صَحْبِیْ لِئَامًا وَّ کَفَّرُوْا

और जब सनाउल्लाह अपने छल-प्रपचों से सीमा से गुज़र गया और लोगों को मेरे दोस्तों पर उकसाया।

فَقَالُوْا لِیُوْسُفَ مَانَرَى الْخَیْرَ هٰهُنَا
وَلٰکِنَّهٗ مِنْ قَوْمِهٖ کَانَ یَحْذَرُ

तो उन्होनें मुंशी मुहम्मद यूसुफ़ को कहा कि इस प्रकार की बहस और बीस मिनट निर्धारित करते हैं हमें भलाई दिखाई नहीं देती परन्तु वह अपनी क़ौम से डरता था

هُنَاكَ دَعَوْا رَبًّا کَرِیْمًا مُّؤَیِّدًا
وَ قَالُوْا حَلَلْنَا اَرْضَ رُجْزٍ فَنَصْبِرُ

तब उन्होंने ख़ुदा के सामने दुआएं की और कहा कि हम गन्दी ज़मीन में दाखिल हो गए तो हम सब्र करते हैं।

فَمَا بَرِحُوْهَا وَالرِّمَاحُ تَنُوْشُهُمْ
وَلَا طَعْنَ رُمْحٍ مِثْلَ طَعْنٍ یُکَرَّر

तो वे उस ज़मीन से अलग न हुए और भाले उनको घायल कर रहें थे और कोई भाला उस कटाक्ष की तरह नहीं जो बार-बार कहा जाता है

وَ قَامَ ثَنَاءُ اللّٰهِ فِی الْقَوْمِ وَاعِظًا
فَصَارُوْا بِوَعْظِ الْغُوْلِ قَوْمًا تَنَمَّرُوْا

और सनाउल्लाह की क़ौम में उपदेश दिया तो एक मसान के उपदेश से वे चीते की तरह हो गए।

وَذَكَّرَهُمْ صَحْبِيْ مُكَافَاتَ كُفْرِهِمْ
وَهَلْ يَنْفَعَنْ اَهْلَ الْهَوٰى مَايُذَكَّر

और मेरे दोस्तों ने इन्कार का बदला याद दिलाया परन्तु भला हुआ तमाशा देखने वालों को कोई उपदेश लाभ दे सकता है।

تَجَنّٰى عَلَيَّ ابُو الْوَفَاءِ ابْنُ الْهَوٰى
لِيُبْعِدَ حمْقٰى مِنْ جَنَایَ وَيَزْجُرُ

सनाउल्लाह ने मुझ पर मीन-मेख शुरु की जो लोभ-लालच का बेटा था ताकि मुर्खों को मेरे फल से वंचित रखे।

وَخَاطَبَ مَنْ وَّافَاهُ فِيْ اَمْرِ دَعْوَتِيْ
وَقَالَ يَمِيْنُ اللّٰهِ مَكْرٌ تَخَيَّرُوْا

और प्रत्येक जो उसके पास आया उसको उसने सम्बोधित किया और कहा कि ख़ुदा की क़सम! यह तो एक छल है जो अपनाया गया है।

وَ اَقْسَمَ بِاللّٰهِ الْغَيُوْرِ مُكَذِّبًا
فَيَا عَجَبًا مِّنْ مُّفْسِدٍ كَيْفَ يَجْسُرُ

और उसने स्वाभिमानी ख़ुदा की क़सम खाई। तो आश्चर्य है कि उपद्रवी से कैसी दिलेरी कर रहा है।

فَطَائِفَةٌ قَدْ كَفَّرُوْنِيْ بِوَعْظِهِ
وَ طَائِفَةٌ قَالُوْا كَذُوْبٌ يُّزَوِّر

तो एक गिरोह ने उसके उपदेश से मुझे काफ़िर ठहराया और

एक गिरोह ने कहा कि यह व्यक्ति झूठ वर्णन कर रहा है

وَمَامَسَّـهُ نُـوْرٌ مِّـنَ الْعِلْـمِ وَالْهُـدٰی
فَیَـا عَجَبًـا مِّـنْ بَقَّـةٍ یَّسْتَنْسِـرُ

हालांकि सनाउल्लाह को ज्ञान और हिदायत से कुछ भाग प्राप्त नहीं तो आश्चर्य है उस मच्छर पर कि गिद्ध बनना चाहता है।

فَلَمَّـا اعْتَـدٰی وَاحَـسَّ صَحْـبِیْ اَنَّـهُ
یُصِـرُّ عَـلٰی تَكْذِیْبِـهٖ لَا یُقَصِّـرُ

तो जब वह हद से बढ़ गया और मेरे दोस्तों ने मालूम किया कि वह झुठलाने पर आग्रह कर रहा है और नहीं रुकता।

دَعَـوْهُ لِیَبْتَهْلَـنْ لِمَـوْتِ مُـزَوِّرٍ★
مُضِـلٍّ فَلَـمْ یَسْـكُتْ وَلَـمْ یَتَحَسَّـرُ

उसको बुलाया कि झुठे की मौत के लिए ख़ुदा के के आगे गिड़गिड़ाए और झूठा जो गुमराह करता है तो सनाउल्लाह अपने शोर से चुप न हुआ और न थका।

وَ كَـذَّبَ اِعْجَـازَ الْمَسِـیْحِ وَ ا یَـهُ
وَ غَلَّطَـهُ كِذْبًـا وَّ كَانَ یُـزَوِّرُ

और किताब ऐजाज़ुलमसीह जो मेरी किताब है उसने उसे झुठलाया और झूठ बोलकर उसे ग़लत ठहराया और झूठ बोला।

وَقِیْـلَ لِاِمْـلَاءٍ الْكِتَـابِ كَمِثْـلِهٖ
فَقَـالَ كَاَهْـلِ الْعُجْـبِ اِنِّیْ سَاَسْـطُرُ

और उसको कहा गया कि ऐजाज़ुलमसीह की तरह कोई किताब

★ ऐसा उस समय कहा जब सनाउल्लाह को तकज़ीब में इंतिहा तक देखा और ऐसे झूठ बोलते उसको देख भी लिया। इसी से।

लिख तो उसने अहंकार से कहा कि मैं लिखूंगा।

وَ اَنْکَـرَ اٰیَـاتِیْ وَاَنْکَـرَ دَعْـوَتِیْ
وَاَنْکَـرَ اِلْهَامِیْ وَقَـالَ مُـزَوِّر

और मेरे निशानों से इन्कार किया और मेरी दावत से इन्कार किया तथा मेरे इल्हाम से इन्कार किया और कहा कि एक झूठा व्यक्ति है।

وَ کَذَّبَـنِیْ بِالْبُخْـلِ مِـنْ کُلِّ صُـوْرَةٍ
وَ خَطَّـأَنِیْ فِیْ کُلِّ وَعْـظٍ اُذَکِّـر

अनुवाद- और उसने हर प्रकार से मुझे झूठा ठहराया तथा प्रत्येक उपदेश में जो मैंने किया मुझे गलती की तरफ सम्बद्ध किया

فَاُفْـرِدْتُّ اِفْـرَادَ الْحُسَـیْنِ بِکَرْبَـلَا
وَ فِی الْـحَیِّ صِرْنَـا مِثْـلَ مَـنْ کَانَ یُقْـبَرُ

तो वहां मैं अकेला रह गया जैसा कि हुसैन अरज़े कर बला में और उस क़ौम में हम ऐसे हो गए जैसा कि मुर्दा दफ़्न किया जाता है।

تَصَـدّٰی لِاِنْـکَارِیْ وَ اِنْکَارِاٰیَـتِیْ
وَ کَانَ لِحِقْـدٍ کَالْعَقَـارِبِ یَأْبُـرُ

मेरे इन्कार तथा मेरे निशानों के इन्कार के लिए सामने आया और वह शत्रुता से बिच्छुओं की तरह डंक मारता था

فَقَـدْ سَـرَّنِیْ فِیْ هٰـذِهِ الصُّـوْرِ صُـوْرَةٌ
لِیَدْفَـعَ رَبِّیْ کُلَّمَـا کَانَ یَحْشُـرُ

तो इन परिस्थितियों में मुझे एक तरीका अच्छा मालूम हुआ ताकि मेरा ख़ुदा उस तूफान को दूर कर दे जो उसने उठाया है।

فَاَلَّفْتُ هٰذَا النَّظْمَ اَعْنِیْ قَصِیْدَتِیْ
لِیُخْزِیَ رَبِّیْ کُلَّ مَنْ کَانَ یَهْذِرُ

तो मैंने यह नज़्म अर्थात् अपना यह कसीदः लिखा ताकि मेरा ख़ुदा उन लोगों को अपमानित करे जो बकवास करते हैं।

وَهٰذَا عَلٰی اِصْرَارِهٖ فِیْ سُؤَالِهٖ
فَکَیْفَ بِهٰذَا السُّئْلِ اُغْضِیْ وَاَنْهَر

और यह कसीदः उसके मुकाबले के आग्रह पर बनाया गया है तो मैं इतने प्रश्न के बावजूद कैसे दर गुज़र करुं और सवाल करने वाले को कैसे झिड़क दूं।

وَلَیْسَ عَلَیْنَا فِی الْجَوَابِ جَرِیْمَةٌ
فَنَهْدِیْ لَهٗ کَالْاَکْلِ مَا کَانَ یَبْذُرُ

और इस उत्तर में हम पर कोई गुनाह नहीं और हम उसको उपहार के तौर पर इस चीज़ का फल देते हैं जो उसने बोया था

فَاِنْ اَ كُ كَذَّابًا فَیَأْتِیْ بِمِثْلِهَا
وَ اِنْ اَ كُ مِنْ رَّبِّیْ فَیُغْشٰی وَیُحْصَرَ

तो यदि मैं झूठा हूं तो ऐसा कसीदः बना लाएगा और यदि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं तो उसकी समझ पर पर्दा डाल दिया जाएगा और रोका जाएगा।

وَهٰذَا قَضَاءُ اللّٰهِ بَیْنِیْ وَ بَیْنَهُمْ
لِیُظْهِرَ اٰیٰتِهٖ وَمَا کَانَ یُخْبِرُ

और यह ख़ुदा का फैसला है हममें और उन में ताकि अपने निशानों को प्रकट करे और उस निशान को प्रकट करे जिसकी पहले से सूचना दे रखी थी।

قَطَعْنَا بِهٰذَا دَابِرَالْقَوْمِ كُلِّهِمْ
وَ غَادَرَهُمْ رَبِّیْ كَغُصْنٍ تُجَذَّرُ

हम ने इस निशान से सब का फैसला कर दिया है और उनको मेरे रब्ब ने उन शाखओं की तरह कर दिया जो काट दी जाती हैं।

اَرٰی اَرْضَ مُدٍّ قَدْ اُرِیْدَ تَبَارُهَا
وَغَادَرَهُمْ رَبِّیْ كَغُصْنٍ تُجَذَّرُ

मैं मुद्द की ज़मीन देखता हूं कि उस की तबाही निकट आ गई और मेरे रब्ब ने उनको कटी टहनी की तरह कर दिया।

اَ یَامُحْسِنِیْ بِالْحُمْقِ وَالْجَهْلِ وَالرُّغَا
رُوَیْدَكَ لَا تُبْطِلْ صَنِیْعَكَ وَاحْذَر

हे मेरे उपकारी! अपनी मूर्खता,असभ्यता,और ऊंट की तरह बोलने से रुक जा और अपने उपकार को ग़लत न कर

اَتَشْتِمُ بَعْدَ الْعَوْنِ وَالْمَنِّ وَالنَّدٰی
اَتَنْسٰی نَدَی مُدٍّ وَّ مَا كُنْتَ تَنْصُر

क्या तू सहायता,उपकार तथा देने के बाद गालियां देगा। क्या तू उस उपकार को भुला देगा जो मुद्द के स्थान पर तू ने उपकार किया

تَرَی كَیْفَ اَغْبَرَتِ السَّمَاءُ بِآیِهَا
اِذَا الْقَوْمُ آذَوْنِیْ وَ عَابُوْا وَ غَبَّرُوْا

तू देखता है कि आकाश किस प्रकार निशानों की वर्षा करने लगा जब क़ौम ने मुझे दुख दिया और दोष निकाले और धूल उठाई।

فَلَا تَتَخَیَّرْ سُبُلَ غَیٍّ وَّ شَقْوَةٍ
وَلَا تَبْخَلَنْ بَعْدَ النَّوَالِ وَ فَكِّر

और गुमराह तथा दुर्भाग्य का मार्ग ग्रहण न कर और देने के

बाद कंजूसी न कर और सोच ले।

وَ لَا تَـأْ كُلُـوْا لَحْمِـىْ بِسَـبٍّ وَّ غِيْبَـةٍ
وَ لَحْمِـىْ بِوَجْـهِ الْحِـبِّ سَـمٌّ مُّدَمِّـر

और गाली और चुग़ली के साथ मेरा गोश्त मत खाओ तथा उस दोस्त के मुख की क़सम कि मेरा गोश्त ज़हर मारने वाला है।

بِاَجْنِحَـةِ الْاَشْـوَاقِ جِئْنَـا فِنَـائَ كُـمْ
بِمَـا قُدِّمَـتْ مِنْكُـمْ عَطَايَـا فَنَحْضُـرُ

हम शोक़ के बाज़ुओं के साथ तुम्हारे घर आए हैं क्योंकि तुम्हारे उपकार हम पर हैं इसलिए हम उपस्थित हुए हैं।

وَ اِنْ كُنْـتَ قَـدْ سَـائَ تْـكَ اَمْـرُ خِلَافَـتِىْ
فَسَـلْ مُرْسِلِىْ مَاسَـائَ قَلْبَـكَ وَاحْصُـرُ

और यदि तुझे मेरी खिलाफत बुरी मालूम हुई है तो फिर मेरे भेजने वाले को बड़े आग्रह से पूछ कि ऐसा क्यों किया।

اَ تُنْكِـرُنِىْ وَ اللّٰهُ نَـوَّرَ دَعْـوَتِىْ
أَتَلْعَـنُ مَـنْ هُـوْ مِثْـلَ بَـدْرٍ مُّنَـوَّرُ

क्या तू मेरा इन्कार करता है और ख़ुदा ने मेरी दावत को प्रकाशमान किया है। क्या तू ऐसे व्यक्ति पर लानत भेजता है जो चन्द्रमा के समान प्रकाशित है।

يُصَـدِّقُ اَمْـرِىْ كُلُّ مَـنْ كَانَ فِى السَّـمَا
فَمَـا اَنْـتَ يَـا مِسْـكِيْنُ اِنْ كُنْـتَ تَكْفُـرُ

मेरा सत्यापन तो सम्पूर्ण आकाश वाले करते हैं। तो हे कंगाल! तू क्या चीज़ है यदि इन्कार करे।

وَ اِنِّیْ قَتِیْلُ الْحِبِّ فَاخْشَوْا قَتِیْلَهٗ
وَلَا تَحْسَبُوْنِیْ مِثْلَ نَعْشٍ یُّنَکَّرُ

और मैं दोस्त का कुश्त:(भस्म) हूं। अत: तुम दोस्त के कुश्त: से डरो और मुझे उस जनाज़े की तरह न समझ लो जिसकी शक्ल बदल दी गई और पहचान न की जाए।

اَطُوْفُ لِمَرْضَاةِ الْحَبِیْبِ کَهَائِمٍ
وَّ اَسْعٰی وَاِنِّیْ مُسْتَهَامٌ وَّ مُغْبِرُ

मैं दोस्त की खुशी के लिए एक मार्ग से भटके हुए की तरह घूम रहा हूं और मैं दोड़ रहा हूं और इसमें भटक रहा हूं और बहुत भटकने से धूल में अरा हुआ हूं।

اَذَابَتْ مَحَبَّتُهٗ عِظَامِیْ جَمِیْعَهَا
وَ هَبَّتْ عَلٰی نَفْسِیْ رِیَاحٌ تُکَسِّرُ

उसके प्रेम ने मेरी हड्डियों को गला दिया और मेरे नफ़्स पर उसकी तीव्र हवा चली जो तोड़ने वाली थी।

ذَرُوْا حِرْصَ تَفْتِیْشِیْ فَاِنِّیْ مُغَیَّبٌ
غُبَارٌ عِظَامِیْ قَدْ سَفَتْهَا صَرَاصِرُ

मेरी वास्तविक्ता पहचानने का विचार त्याग दो कि मैं तुम्हारी दृष्टि से ग़ायब हूं और मेरी हड्डियां एक ऐसी धूल है कि जिनको तीव्र हवाएं उड़ा कर ले गईं।

اِذَا مَا انْقَضٰی وَقْتِیْ فَلَا وَقْتَ بَعْدَهٗ
لَدَیْنَا مَعِیْنٌ لَّا یُحَاکِیْهِ اٰخَرُ

जब मेरा समय गुज़र जाएगा तो उसके बाद कोई समय नहीं हमारे पास वह साफ पानी है कि उसका उदाहरण नहीं।

دُعَاءِیْ حُسَامٌ لَاّ یُؤَخَّرُوَقْعُہٗ
وَصَوْلِیْ عَلٰی اَعْدَاءِ رَبِّیْ مُفَقِّرُ

मेरी दुआ एक तलवार है कि कोई उसके प्रहार को रोक नहीं सकता और मेरा प्रहार मेरे ख़ुदा के दुश्मनों पर एक कठोर तलवार है

وَ اِنِّیْ اُبَلِّغُ عَنْ مَّلِیْکِیْ رِسَالَۃً
وَاِنِّیْ عَلَی الْحَقِّ الْمُنِیْرِ وَ نَیِّرِ

और मैं अपने बादशाह का सन्देश पहुंचा रहा हूं और प्रकाशमान सच्चाई हूं तथा सूर्य हूं।

تَصَدّٰی لِنَصْرِ الدِّیْنِ فِیْ وَقْتِ عُسْرَۃٍ
نَذِیْرٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَالْاٰنَ یُنْذِرُ

धर्म की सहायता के लिए ख़ुदा की ओर से तंगी के समय एक डराने वाला खड़ा हुआ तो अब वह डरा रहा है।

مَکِیْنٌ اَمِیْنٌ مُقْبِلٌ عِنْدَ رَبِّہٖ
مُخَلِّصُ دِیْنِ الْحَقِّ مِمَّا یُحَسِّرُ

वह ख़ुदा के नज़दीक अमीन निवासी है और सच्चे धर्म को कमज़ोर करने वाली आपदाओं से बचाने वाला है।

وَمِنْ فِتَنٍ یُّخْشٰی عَلَی الدِّیْنِ شَرُّھَا
وَمِنْ مِّحَنٍ کَانَتْ کَصَخْرٍ تُکَسِّرُ

और ऐसे उपद्रवों से मुक्ति प्रदान करता है जिसका भय था और ऐसी विपत्तियों से जो पत्थर की तरह तोड़ने वाली हैं।

اُرِیْءُ اٰیَۃً عُظْمٰی وَ جِئْتُ اَرُوْدُکُمْ
فَھَلْ فَاتِکٌ اَوْ ضَیْغَمٌ اَوْ اَغْبَرَ

देखो मैं एक महान निशान दिखाता हूं और तुम्हें ढूंड रहा हूँ।

क्या कोई दिलेर है या शेर है या भेड़िया है।

وَ قَالَ ثَنَاءُ اللّٰهِ لِیْ اَنْتَ کَاذِبٌ
فَقُلْتُ لَکَ الْوَیْلَاتُهٗ أَنْتَ سَتُحْسَرُ

और मुझे मौलवी सनाउल्लाह ने कहा कि तू झूठा है मैंने कहा कि तुझ पर कोलाहल मचा है तू शीघ्र ही नंगा किया जाएगा।

تَعَالَوْا جَمِیْعًا وَّانْحِتُوْا اَقْلَامَکُمْ
وَ اَمْلُوْا کَمِثْلِیْ اَوْ ذَرُوْنِیْ وَخَیِّرُوْا

सब आ जाओ कलमें तैयार करो, मेरे समान लिखो या मुझे छोड़ दो और मुझे मुख़्तार (अधिकृत) समझ लो।

وَ اَعْطَیْتُ آیَاتٍ فَلَا تَقْبَلُوْنَهَا
فَلَا تَلْطَخُوْا اَرْضِیْ وَ بِالْمَوْتِ طَهِّرُوْا

मैंने निशान दिए और तुम उनको स्वीकार नहीं करते। अत: मेरी ज़मीन को किसी गन्दगी से ग्रस्त न करो और मरने से पवित्र कर दो।

وَ خَیْرُ خِصَالِ الْمَرْءِ خَوْفٌ وَّ تَوْبَةٌ
فَتُوْبُوْا اِلَی اللّٰهِ الْکَرِیْمِ وَاَبْشِرُوْا

और मनुष्य की उत्तम आदत भय और तौब: है। तो ख़ुदा की तरफ तौब: करो और खुश हो जाओ।

سَئِمْنَا تَکَالِیْفَ التَّطَاوُلِ مِنْ عِدَا
فَتُوْبُوْا اِلَی اللّٰهِ الْکَرِیْمِ وَاَبْشِرُوْا

हमने अत्याचार के कष्ट दुश्मनों से उठाए और अत्याचार की रातें लम्बी हो गईं। हे ख़ुदा! सहायता कर।

وَجِئْنَـاكَ كَالْمَـوْتٰى فَـاَحْيِ اُمُوْرَنَـا
نَخِـرُّ اَمَامَـك كَالْمَسَـاكِيْنِ فَاغْفِـرُ

और हम मुर्दों की तरह तेरे पास आएं है तो हमारे कामों को जीवित कर। हम हम तेरे आगे कंगालों की तरह गिरते हैं। अत: हमें क्षमा कर दे।

اِلٰهِـىْ فَدَتْـكَ النَّفْـسُ اِنَّـكَ جَنَّـتِىْ
وَمَـا اَنْ اَرٰى خُـلْدًا كَمِثْلِـكَ يُثْمِـرُ

हे ख़ुदा मेरी जान तुझ पर क़ुर्बान, तू मेरा स्वर्ग है और मैंने ऐसा कोई स्वर्ग नहीं देखा जो तेरे जैसा फल लाए।

طُرِدْنَـا لِوَجْهِـكَ مِـنْ مَّجَالِـسِ قَوْمِنَـا
فَاَنْـتَ لَنَـا حِـبٌّ فَرِيْـدٌ وَّ مُؤْثَـرُ

हे मेरे ख़ुदा तेरे मुहं के लिए हम अपनी क़ौम की मज्लिसों से रद्द कर दिए गए। तू हमारा अद्धितीय मित्र है जो सब पर अपनाया गया।

اِلٰهِـىْ بِوَجْهِـكَ اَدْرِكِ الْعَبْـدَ رَحْمَـةً
وَلَيْـسَ لَنَـا بَـابٌ سِـوَاكَ وَمَعْـبَرُ

हे मेरे ख़ुदा अपने मुहं के सदक़े अपने बन्दे की ख़बर ले और हमारे लिए तेरे अतिरिक्त न कोई दरवाज़ा और न कोई गुज़रने का स्थान है।

اِلٰى اَيِّ بَـابٍ يَـا اِلٰهِـىْ تَـرُدُّنِىْ
وَمَـنْ جِئْتُـهُ بِالرِّفْـقِ يَـزْرِ وَيَصْعَـرُ

हे मेरे ख़ुदा! तू किस के दरवाज़े की तरफ मुझे लौटाएगा और मैं जिसके पास नर्मी के साथ जाऊं वह गालियां देता और मुंह फेर लेता है।

صَبَرْنَا عَلٰی جَوْرِ الْخَلَا ئِقِ کُلِّھِمْ
وَ لٰکِنْ عَلٰی ھَجْرٍ سَطَا لَا نَصْبِرُ

हमने स्मस्त संसार का अत्याचार सहन किया परन्तु तेरे वियोग की हमारे अन्दर सहनशक्ति नहीं।

تَعَالَ حَبِیْبِیْ اَنْتَ رَوْحِیْ وَرَاحَتِیْ
وَاِنْ کُنْتَ قَدْ اٰنَسْتَ ذَنْبِیْ فَسَتِّرُ

आ मेरे दोस्त तू मेरा चैन और आराम है और यदि तूने मेरा कोई गुनाह देखा है तो क्षमा कर।

بِفَضْلِکَ اِنَّا قَدْ عُصِمْنَا مِنَ الْعِدَا
وَاِنَّ جَمَالَکَ قَاتِلِیْ فَاْتِ وَانْظُرُ

तेरे फ़ज़्ल (कृपा) से हम दुश्मनों से बचाए गए परन्तु तेरे सौन्दर्य ने हमें क़त्ल कर दिया। तो आ और देख।

وَ فَرِّجْ کُرُوْبِیْ یَا اِلٰھِیْ وَ نَجِّنِیْ
وَ مَزِّقْ خَصِیْمِیْ یَانَصِیْرِیْ وَ عَفِّرِ

हे मेरे ख़ुदा! मेरे ग़म दूर कर और हे मेरे मददगार मेरे शत्रु के टुकड़े-टुकड़े कर और धूल में मिला।

وَجَدْنَاکَ رَحْمَانًا فَمَا الْھَمُّ بَعْدَہٗ
رَأَیْنَاکَ یَاحِبِّیْ بِعَیْنٍ تُنَوَّرُ

हमने तुझे रहमान (कृपालु) पाया तो इसके पश्चात् कोई ग़म न रहा। हमने तुझे देखा उस आंख से जो रोशन की जाती है।

اَنَا الْمُنْذِرُ الْعُرْیَانُ یَا مَعْشَرَ الْوَرٰی
اُذَکِّرُکُمْ اَیَّامَ رَبِّیْ فَاَبْصِرُوْا

हे लोगो! मैं एक खुला डराने वाला आया हूं, तुम्हें ख़ुदा के

दिन याद दिलाता हूं।

بَـلَاءٌ عَلَيْكُـمْ وَالْعِـلَاجُ اِنَابَـةٌ
وَبِالْحَـقِّ اَنْذَرْنَـا وَبِالْحَـقِّ نُنْـذِرُ

तुम पर एक विपत्ति है उसका इलाज तौब: करना और प्रत्येक गुनाह से बचना है। हमने सच्चे तौर पर सतर्क कर दिया और कर रहे हैं।

دَعُـوْا حُـبَّ دُنْيَاكُـمْ وَحُـبَّ تَعَصُّـبٍ
وَمَـنْ يَّشْـرَبِ الصَّهْبَـاءَ يُصْبِـحْ مُسَـكَّرُ

संसार का प्रेम और पक्षपात का प्रेम त्याग दो और जो व्यक्ति रात को शराब पिएगा वह प्रात: काल नशे का कष्ट उठाएगा।

وَ كَمْ مِّـنْ هُمُـوْمٍ قَـدْ رَأَيْنَـا لِاَجْلِكُـمْ
وَ نَضْـرَمُ فِيْ الْقَلْـبِ اضْطِرَامًا وَّ نَضْجَرُ

और हमने तुम्हारे लिए बहुत से ग़म सहन किए और अब भी हमारे दिल में तुम्हारे लिए आग है जिसको हम छुपाए हुए हैं।

اَصِيْـحُ وَقَـدْ فَاضَـتْ دُمُوْعِـىْ تَأَلُّمًـا
وَ قَلْـبِىْ لَكُـمْ فِىْ كُلِّ اٰنٍ يُوَغَّـرُ

मैं आवाज़ देता हूं और मेरे आंसू दर्द से जारी हैं और मेरा दिल प्रतिक्षण तुम्हारे लिए गर्म किया जाता है।

فَسَـلْ اَيُّهَـا الْقَـارِىْ اَخَـاكَ اَبَـا الْوَفَـا
لِمَـا يَخْـدَعُ الْحَمْقٰـى وَقَـدْ جَـاءَ مُنْـذِر

अत: हे पाठक! तू अपने भाई सनाउल्लाह से पूछ क्यों मूर्खों को धोखा दे रहा है और डराने वाला आ गया।

اَلَا رُبَّ خَصْمٍ قَدْ رَأَيْتُ جِدَالَهُ
وَمَا إِنْ رَأَيْنَا مِثْلَهُ مَنْ يُّزَوِّرُ

सावधान हो! मैंने बहुत बहस करने वाले देखें हैं परन्तु उस जैसा धोखेबाज़ मैंने कोई नहीं देखा।

عَجِبْتُ لِمَبْحَثِهِ اِلٰى ثُلْثِ سَاعَةٍ
اَكَانَ مَحَلُّ الْبَحْثِ اَوْ كَانَ مَيْسِر

मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने बहस का समय बीस मिनट निर्धारित किया। क्या वह बहस थी या कोई जुएबाज़ी थी?

اَمُكَفِّرِ مَهْلًا كُلَّمَا كُنْتَ تَذْكُرُ
وَ اَمْلِ كَمِثْلِيْ ثُمَّ اَنْتَ مُظَفَّرُ

हे मेरे क़ाफिर कहने वाले! पिछली सब बातें छोड़ दे और मेरे समान कसीद: लिख फिर तू विजयी है।

رَضِيْتُ بِاَنْ تَخْتَارَ فِي النَّمْقِ رُفْقَةً
وَ اِنَّا عَلٰى اِمْلَاءِ هِمْ لَا نُعَيِّرِ

मैनें यह भी स्वीकार किया कि यदि तू मुक़ाबले से गिरे तो अपने साथी बना ले और हम उनके लिखने में कोई डांट-डपट नहीं करेंगे।

فَمَا الْخَوْفُ فِيْ هٰذَا الْوَغَا يَا اَبَاالْوَفَ
لِيُمْلِ حُسَيْنٌ اَوْ ظَفَرْ اَوْ اَصْغَر

अत: हे सनाउल्लाह! इस लड़ाई में तुझे क्या डर है। चाहिए कि मुहम्मद हुसैन इसका उत्तर लिखे या क़ाज़ी ज़फरुद्दीन या असग़र अली।

وَ اِنِّيْ اَرٰى فِيْ رَأْسِهِمْ دُوْدَ نَخْوَةٍ
فَاِنْ شَاءَ رَبِّيْ يُخْرِجَنَّ وَ يَجْذُرُ

और मैं उनके सर में अहंकार के कीड़े देखता हूं और यदि ख़ुदा चाहे तो वे वह कीड़े निकाल देगा और जड़ से उखाड़ देगा।

وَ اِنْ كَانَ شَأْنُ الْاَمْرِ اَرْفَعَ عِنْدَكُمْ
فَاَيْنَ بِهٰذَا الْوَقْتِ مَنْ شَانَ جَوْلَر

तो यदि यह कार्य इन लोगों के हाथ से तेरे नज़दीक बढ़कर है तो इस समय मेहर अली शाह कहां है जिसने गोलड़ा को बदनाम किया।

اَمَيْتٌ بِقَبْرِ الْغَيِّ لَايَنْبَرِىْ لَنَا
وَ مَنْ كَانَ لَيْثًا لَا مَحَالَةَ يَزْئَرُ

क्या वह मुर्दा है कि अब बाहर नहीं निकलेगा और शेर तो अवश्य नारा लगाता है।

وَ اِنْ كَانَ لَايَسْطِيْعُ اِبْطَالَ اٰيَتِىْ
فَقُلْ خُذْ مَزَامِيْرَ الضَّلَالَةِ وَازْمُر

और यदि वह मेरे इस निशान को झूठा नहीं कर सकता तो कह कि तंबूर इत्यादि बजाया कर कि तुझे ज्ञान से क्या काम।

اَغَلَّطَ اِعْجَازِىْ حُسَيْنٌ بِعِلْمِهِ
وَهَيْهَاتَ مَاحَوْلُ الْجَهُوْلِ أَتَسْخَرُ

क्या मेरी किताब एजाज़ुल मसीह की मुहम्मद हुसैन ने ग़लतियां निकालीं और यह कहां हो सकता है और मुहम्मद हुसैन को क्या शक्ति है जो हसी कर रहा है?

وَ اِنْ كَانَ فِىْ شَيْءٍ بِعِلْمٍ حُسَيْنُكُمْ
فَمَالَكَ لَا تَدْعُوْهُ وَالْخَصْمُ يَحْضُرُ

और यदि तुम्हारा मुहम्मद हुसैन कुछ चीज़ है तो उसे क्यों नहीं बुलाता और दुश्मन कठोर पकड़ रहा है।

وَ نَحْسَبُه كَالْحُوْتِ فَأْتِ بِنَظْمِهٖ
مَتٰى حَلَّ بَحْرًا نَقْتَنِصْهُ وَ نَأْسِرُ

और हम तो उसे एक मछली की तरह समझते हैं। अतः उसकी नज़्म प्रस्तुत कर। जब वह शेर की बहरों में से किसी बहर में दाखिल होगा तो हम उसको शिकार कर लेंगे और पकड़ लेंगे।

وَ اِنْ يَّأْتِنِىْ اَصْبَحْهُ كَأْسًا مِنَ الْهُدٰى
فَاَحْضِرْهُ لِلْاِمْلَاءِ اِنْ كَانَ يَقْدِرُ

यदि वह मेरे पास आएगा तो उसी समय सुबह हिदायत का प्याला पिलाऊंगा। तो उस को लिखने के लिए उपस्थित कर यदि वह लिखने की शक्ति रखता है।

اِذَا مَا ابْتَلَاهُ اللّٰه بِالْاَرْضِ سُخْطَةً
بِلَا بِلَ قَالُوْا مُكْرَمٌ وَّ مُعَزَّر

जब ख़ुदा ने अप्रसन्नता के तौर पर उसको लाइलपुर में ज़मीन दी तो विरोधियों ने कहा कि इसका बड़ा सम्मान है।

وَمَا الْعِزُّ اِلاَّ بِالتَّوَرُّعِ وَالتُّقٰى
وَ بُعْدٍ مِّنَ الدُّنْيَا وَ قَلْبٍ مُّطَهَّر

और सम्मान तो सयंम के साथ होता है तथा संसार को त्यागने और दिल पवित्र करने में।

وَ اِنَّ حَيَاةَ الْغَافِلِيْنَ لَذِلَّةٌ
فَسَلْ قَلْبُهُ زَادَ الصَّفَا اَوْ تَكَدَّر

और लापरवाही का जीवन एक अपमान है। अतः उस से पूछ कि क्या पहले की अपेक्षा उस का दिल साफ़ है या दुनिया की मालिनता में व्यस्त है।

اِذَا نَحْــنُ بَارَزْنَــا فَاَيْــنَ حُسَــيْنُكُمْ
وَ اِنْ كُنْــتَ تَحْمَــدُهُ فَاَعْلِــنْ وَاَخْــبِرُ

जब हम मैदान में आए तो तुम्हारा हुसैन कहां होगा और यदि तू उसकी प्रशंसा करता है तो उसको ख़बर दे दे।

اَ تَحْسَــبُهُ حَيًّــا وَ تَــاللّٰهِ اِنَّــنِیْ
اَرَاهُ كَمَــنْ يُّــدْنٰى وَيُفْــنٰى وَيُقْــبَرَ

क्या तू उसको जीवित समझता है और ख़ुदा की क़सम! मैं देखता हूं उस व्यक्ति के समान जो भस्म है और मर गया और क़ब्र में दाखिल हो गया।

وَلَوْشَــاءَ رَبِّیْ كَانَ يَبْغِــیْ هِدَايَــتِیْ
وَلَــوْ شَــاءَ رَبِّیْ كَانَ مِمَّــنْ يُبَصَّــرُ

और यदि मेरा ख़ुदा चाहता तो वह हिदायत स्वीकार करता और यदि मेरा ख़ुदा चाहता तो वह मुझे पहचान लेता।

وَ مَــا اِنْ قَنَطْنَــا وَالرَّجَــاءُ مُعَظَّــمُ
كَذٰلِــكَ وَحْیُ اللّٰهِ يُــدْرِیْ وَ يُخْــبِرُ

और हम उसके ईमान से निराश नहीं हुए बल्कि आशा बहुत है इसी प्रकार ख़ुदा की वह्यी ख़बर दे रही है।

وَاِنَّ قَضَــا ءَ اللّٰهِ مَايُخْطِيــءُ الْفَــتٰى
لَهُ خَافِيَــاتٌ لاَّ يَرَاهَــا مُفَكِّــرُ

और ख़ुदा का आदेश मार्ग के मर्द को भूलता नहीं। उसके लिए छुपे हुए राज़ हैं कि कोई फिक्र करने वाला उनको देख नहीं सकता।

سَیُبْدِیْ لَکَ الرَّحْمٰنُ مَقْسُوْمَ حِبِّکُمْ
سَعِیْدٌ فَلَا یُنْسِیْهِ یَوْمٌ مُّقَدَّرُ

तुझ पर ख़ुदा तआला तेरे मित्र मुहम्मद हुसैन की क़िस्मत प्रकट कर देगा। सईद है। अत: प्रारब्ध के दिन उसे भूलेगा नहीं।

وَ یُحْیٰی بِاَیْدِی اللّٰہِ وَاللّٰہُ قَادِرٌ
وَ یَأْتِیْ زَمَانُ الرُّشْدِ وَالذَّنْبُ یُغْفَر

और ख़ुदा के हाथों से जीवित किया जाएगा और ख़ुदा सामर्थ्यवान है और हिदायत का समय आएगा और गुनाह क्षमा कर दिया जाएगा।

فَیَسْقُوْنَهُ مَآءَ الطَّهَارَةِ وَالتُّقٰی
نَسِیْمُ الصَّبَا تَأْتِیْ بِرَیَّا یُّعَطِّر

अत: पवित्रता तथा शुद्धता का पानी उसे पिलाएंगे और सुबह की समीर खुशबू लाएगी और सुगंधित कर देगी।

وَ اِنَّ کَلَامِیْ صَادِقٌ قَوْلُ خَالِقِیْ
وَمَنْ عَاشَ مِنْکُمْ بُرْهَةً فَسَیَنْظُرُ

और मेरा कलाम सच्चा है तथा मेरे ख़ुदा का कथन है और जो व्यक्ति तुम में से कुछ समय जीवित रहेगा वह देख लेगा।

اَ تَعْجَبُ مِنْ هٰذَا فَلَا تَعْجَبَنْ لَّهُ
کَلَامٌ مِّنَ الْمَوْلٰی وَ وَحْیٌ مُّطَهَّرُ

क्या तू उस से आश्चर्य करेगा। अत: कुछ आश्चर्य न कर। यह ख़ुदा का कलाम है और पवित्र वह्यी है।

وَمَا قُلْتُهُ مِنْ عِنْدِ نَفْسِیْ کَرَاجِمٍ
أُرِیْتُ وَمِنْ اَمْرِالْقَضَا اَتحَیَّرُ

और मैने अपने ही दिल से अटकल से बात नहीं की बल्कि मुझे क़श्फ़ी तौर पर दिखाया गया और मैं उससे हैरान हूं।

اَقَلْبُ حُسَیْنٍ یَّھْتَدِیْ مَنْ یَّظُنُّهُ
عَجِیْبٌ وَّ عِنْدَ اللّٰہِ ھَیِّنٌ وَّ اَیْسَرُ

क्या मुहम्मद हुसैन का दिल हिदायत पर आ जाएगा यह कौन सोच सकता है? विचित्र बात है और ख़ुदा के नज़दीक सरल और आसान बात है।

ثَلٰثَةُ اَشْخَاصٍ بِهٖ قَدْ رَاَیْتُھُمْ
وَ مِنْھُمْ اِلٰھِیْ بَخْشُ فَاسْمَعْ وَ ذَکِّرِ

उसके साथ तीन आदमी और हैं। एक उनमें से इलाही बख़्श एकाउन्टेण्ट मुल्तानी है। अतः सुन और सुना दे।

لَعَمْرُكَ ذُقْنَا دُوْنَ ذَنْبٍ رِمَاحَھُمْ
فَمَا سَرَّنَا اِلاَّ دُعَاءٌ یُّکَرَّرُ

तेरी क़सम हमारे बिना गुनाह के उनके भालों का स्वाद चखा तो हमें यही अच्छा लगा कि उसके पक्ष में दुआ करते हैं।

مَتٰی ذُکِّرُوْا یَغْتَمُّ قَلْبِیْ بِذِکْرِھِمْ
بِمَا کَانَ وَقْتٌ بِالْمُلَا قَاةِ نُبْشِرُ

जब उनकी चर्चा की जाती है तो मेरा दिल शोक ग्रस्त हो जाता है क्योंकि याद आता है कि एक दिन हम मिलने से प्रसन्न होते थे।

اَاُرْضِعْتَ مِنْ غُوْلِ الْفَلَا یَا اَبَا الْوَفَا
فَمَالَكَ لَا تَخْشٰی وَلَا تَتَفَکَّرُ

क्या तुझे झूठ का दूध पिलाया गया? हे सनाउल्लाह! तुझे क्या हो गया न डरता है न विचार करता है।

تَرَكْتُمْ سَبِيْلَ الْحَقِّ وَالْخَوْفِ وَالْحَيَا
وَجُزْتُمْ حُدُوْدَ الْعَدْلِ وَاللّٰهُ يَنْظُرُ

तुमने सच्चाई और भय और लज्जा के मार्ग को छोड़ दिया और इन्साफ से बाहर हो गए और अल्लाह देखता है।

وَ كَيْفَ تَرٰى نَفْسٌ حَقِيْقَةَ وَحْيِنَا
يُصِرُّ عَلٰى كِذْبٍ وَّ بِالسُّوْءِ يَجْهَرُ

ऐसा आदमी हमारी वह्यी की वास्तविकता को क्या जानता है जो झूठ पर हठधर्मी करता है और खुली गालियां देता है।

وَ اِنْ كُنْتُ كَذَّابًا كَمَا هُوَ زَعْمُكُمْ
فَكِيْدُوْا جَمِيْعًا لِيْ وَلَا تَسْتَأْخِرُوْا

और यदि मैं तुम्हारे निकट झूठा हूं तो मेरी बरबादी के लिए तुम सब कोशिश करो और पीछे मत हटो।

وَ اِنَّ ضِيَائِيْ يَبْلُغُ الْاَرْضَ كُلَّهَا
اَ تُنْكِرُهَا فَاسْمَعْ وَ اِنِّيْ مُذَكِّرُ

और मेरा प्रकाश संसार में फैल जाएगा। क्या तू इन्कार करता है। तो सुन रख मैं स्मरण कराता हूं।

عَقَرْتَ بِمُدٍّ صُحْبَتِيْ يَا اَبَاالْوَفَا
بِسَبٍّ وَّ تَوْهِيْنٍ فَرَبِّيْ سَيَقْهَرُ

हे सनाउल्लाह! तुने मुद्द में हमारे मित्रों को दुख पहुंचाया गाली से और अपमान से। अत: मेरा ख़ुदा शीघ्र ही विजयी हो जाएगा।

جَـلَا لَـكَ رَبِّیْ اَبْتَغِـیْ لَا جَـلَا لَـتِیْ
وَ اَنْـتَ تَـرَی قَلْـبِیْ وَ عَزْمِـیْ و تُبْصِـر

हे मेरे ख़ुदावन्द! मैं तेरा प्रताप चाहता हूं न कि अपनी महानता, तू मेरे दिल को और मेरे संकल्प को देख रहा है।

اِلَیْـكَ اَرُدُّ محَامِـدِیْ رُدَّتُ كُلَّهَـا
وَ مَـا اَنَـا اِلاَّ مِثْـلُ ذَرْقٍ یُّعَفَّـرُ

मैं तेरी ओर उन समस्त प्रशंसाओं को लौटाता हूं जिनका मैं संकल्प करता हूं और मैं नहीं हूं परन्तु एक परवाने के समान जो मिट्टी में मिलाया जाता है।

وَ قَالُـوْا عَـلَی الْحَسَـنَیْنِ فَضَّـلَ نَفْسَـهُ
اَقُـوْلُ نَعَـمْ وَاللّٰه رَبِّیْ سَـیُظْهِرُ

और उन्होंने कहा कि उस व्यक्ति ने इमाम हसन-व-हुसैन से स्वयं को अच्छा समझा। मैं कहता हूं कि हां और मेरा ख़ुदा शीघ्र प्रकट कर देगा।

وَلَـوْ كُنْـتُ كَذَّابًـا لَمَـا كُنْـتُ بَعْـدَهُ
كَمِثْـلِ یَهُـوْدِیٍّ وَّ مَـنْ یَّتَنَصَّـر

और यदि मैं झूठा होता तो फिर इसके बाद मैं एक यहूदी और एक मुर्तद ईसाई की तरह भी न होता।

وَلٰكِنَّـنِیْ مِـنْ اَمْـرِ رَبِّیْ خَلِیْفَـةٌ
مَسِـیْحٌ سَـمِعْتُمْ وَعْـدَهُ فَتَفَكَّـرُوْا

परन्तु मैं अपने ख़ुदा के आदेश से ख़लीफ़ा और मसीह मौऊद हूं। अब तुम विचार कर लो।

فَمَا شَأْنُ مَوْعُوْدٍ وَّمَا فِيْهِ عِنْدَ كُمْ
مِنَ الْقَوْلِ قَوْلِ نَبِيِّنَا فَتَدَبَّرُوْا

अतः मसीह मौऊद की क्या शान है और तुम्हारे पास उसके बारे में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या कथन है?

حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ عِنْدَ كُمْ تَقْرَءُوْنَهُ
فَلَا تَكْتُمُوْا مَا تَعْلَمُوْنَ وَاَظْهِرُوْا

तुम्हारे पास एक सही हदीस है जिसे तुम पढ़ते हो तो जो कुछ तुम जानते हो उसे छुपाओ मत और प्रकट करो।

وَمَنْ يَّكْتُمَنَّ شَهَادَةً كَانَ عِنْدَهُ
فَسَوْفَ يَرٰى تَعْذِيْبَ نَارٍ تُسَعَّر

और जो व्यक्ति इस गवाही को छुपाएगा जो उसके पास है तो शीघ्र ही वह आग का आज़ाब देखेगा जो खूब भड़काई जाएगी।

فَلَا تَجْعَلُوْا كِذْبًا عَلَيْكُمْ عُقُوْبَةً
وَ دَعْ يَاثَنَاءَ اللّٰهِ قَوْلًا تُزَوِّرُ

अतः तुम झूठ को अपने लिए विपत्ति का माध्यम न बनाओ। हे सनाउल्लाह! तू झूठ बोलना छोड़ दे।

تَرَكْتَ طَرِيْقَ كِرَامِ قَوْمٍ وَّ خُلْقَهُمْ
هَجَوْتَ بِمُدٍّ عَامِدًا لِّتُحَقِّرُ

तूने शरीफ़ (शालीन) लोगों के आचरण और मार्ग को छोड़ दिया और तू ने मुद्द गांव में जानबूझ कर हमारी निन्दा की ताकि तू तिरस्कार करे।

وَ شَتَّانَ مَابَيْنَ الْكِرَام وَبَيْنَكُمْ
وَ اِنَّ الْفَتٰى يَخْشَى الْحَسِيْبَ وَيَحْذَر

और कहां शालीन और कहां तुम लोग। और नेक इन्सान ख़ुदा से डरता है और बुराई से बचता है।

تَرَكْنَاكَ حَتّٰى قِيْلَ لَا يَعْرِفُ الْقِلٰى
فَجِئْتَ خَصِيْمًا اَ يُّهَا الْمُسْتَكْبِرُ

हमने तो तुझे छोड़ दिया था यहां तक कि तुम लोग कहते थे कि अब क्यों कुछ लिखते नहीं। तू अब स्वयं मुक़ाबले के लिए आया है हे अहंकारी!

اَلَا اَ يُّهَا اللَّعَّانُ مَالَكَ تَهْجُرُ
وَ تَلْعَنُ مَنْ هُوَمُرْسَلٌ وَّ مُوَقَّرُ

हे लानत करने वाले! तुझे क्या हो गया कि व्यर्थ बक रहा है और तू उस पर लानत कर रहा है जो ख़ुदा का चुना हुआ और ख़ुदा की ओर से सम्मान प्राप्त है।

شَتَمْتَ وَمَا تَدْرِيْ حَقِيْقَةَ بَاطِنِيْ
وَكُلُّ امْرِءٍ مِّنْ قَوْلِهٖ يُسْتَفْسَرُ

तुने मुझे गालियां दीं और मेरा हाल तुझे मालूम नहीं और प्रत्येक मनुष्य अपने कथन के बारे में पूछा जाएगा।

صَبَرْنَا عَلٰى سَبٍّ بِهٖ آذَيْتَنَا
وَ لٰكِنْ عَلٰى مَا تَفْتَرِيْ لَا نَصْبِرُ

हमने उन गालियों पर तो सब्र किया जिनके साथ तू ने हमारा दिल दुखाया, परन्तु वह जो तू ने हम पर झूठ बांधा उस पर हम सब्र नहीं कर सकते।

وَ وَاللّٰهِ اِنِّيْ صَادِقٌ لَسْتُ كَاذِبًا
فَلَا تَهْلِكُوْا مُسْتَعْجِلِيْنَ وَ فَكِّرُوْا

और ख़ुद की क़सम! कि मैं सच्चा हूं झूठा नहीं हूं। तो तुम जल्दी करके तबाह मत हो और खूब सोच लो।

وَ لَوْكُنْتُ كَذَّابًا شَقِيًّا لَضَرَّنِيْ
عَدَاوَةُ قَوْمٍ كَذَّبُوْنِيْ وَ كَفَّرُوْا

और यदि मैं झूठा या दुर्भाग्यशाली होता तो मुझे उन लोगों से अवश्य हानि पहुंचती जिन्होने दुश्मनी से मुझे झुठलाया और काफिर ठहराया।

وَشَاهَدْتَّ اَنَّ الْقَوْمَ كَيْفَ تَدَاكَئُوْا
عَلَيَّ وَ كَيْفَ رَمَوْا سِهَامًا وَّ جَمَّرُوْا

और तू ने देख लिया कि क़ौम ने मुझ पर कैसे उपद्रव किये और उन्होंने कैसे तीर चलाए और कैसे वे लड़ाई पर जमे।

رَمَوْا كُلَّ صَخْرٍ كَانَ فِيْ اَذْيَالِهِمْ
بِغَيْظٍ فَلَمْ اَقْلَقْ وَلَمْ اَتَحَيَّرِ

उनके दामन में जितने पत्थर थे सब फेंक दिए और यह काम क्रोध के साथ किया तो न मैं बेचैन हुआ और न हैरान हुआ।

وَجُرِّحَ عِرْضِيْ مِنْ رِمَاحِ اِهَانَةٍ
وَ اُلْقِيَ مِنْ سَبٍّ اِلَيَّ الْخَنْجَرُ

और मेरा सम्मान अपमान के भालों से ज़ख़्मी किया गया और गालियों से मेरी तरफ खंजर फेंके गए।

وَ قَالُوْا كَذُوْبٌ مُّفْنِدٌ غَيْرُ صَادِقٍ
فَقُلْنَا اخْسَئُوْا اِنَّ الْخَفَايَا سَتَظْهَرُ

और उन्होने कहा यह झूठा और झूठ बोलने वाला है सच्चा नहीं

है। हमने कहा कि तुम सब दूर हो। अन्ततः यह गुप्त वास्तविकता प्रकट हो जाएगी।

وَسَــبُّوْا وَ اٰذَوْنِیْ بِاَنْــوَاعِ سَــبِّہِمْ
وَ سَــمَّوْنِ دَجَّــالًا وَّسَــمَّوْنِ اَبْــتَرُ

और मुझे गालियां दी और भिन्न-भिन्न प्रकार की गालियों से दुख दिया और मेरा नाम दज्जाल रखा और मेरा नाम बुराई मात्र रखा जिसमें कोई भलाई नहीं।

وَ سَــمَّوْنِ شَــیْطَانًا وَّ سَــمَّوْنِ مُلْحِــدًا
وَ سَــمَّوْنِ مَلْعُونًــا وَّ قَالُــوْا مُــزَوِّرُ

और मेरा नाम शैतान रखा तथा मेरा नाम नास्तिक रखा,और मेरा नाम लानती रखा और कहा कि यह एक झूठ गढ़ने वाला आदमी है।

فَصِــرْتُ كَاَنِّیْ لِلرِّمَــاحِ دَرِیَّــةٌ
وَ اُوْذِیْــتُ حَــتّٰی قِیْــلَ عَبْــدٌ مُّحَقَّــرُ

तो मैं ऐसा हो गया जैसे कि भालों का निशाना हूं और मैं दुख दिया गया यहा तक कि लोगों ने कहा कि यह बहुत ही तुच्छ मनुष्य है

وَمَــا غَــادَرُوْا كَیْــدًا لِّدَوْسِیْ وَبَعْــدَہٗ
عَــلَیَّ حَضَــوْا زَمْــعَ الْاُنَــاسِ وَثَــوَّرُوْا

और मुझे कुचलने के लिए किसी छल को उठा न रखा तत्पश्चात् मुझ पर नीच लोगों को भड़काया और उकसाया।

وَ لٰكِــنْ مَــاٰ لُ الْاَمْــرِكَانَ ھَوَانُــھُمْ
وَ اُنْــزِلَ لِیْ آیــۃٌ تُنِــیْرُ وَتَبْهَــرُ

परन्तु अन्ततः उनकी बदनामी हुई और मेरे लिए वह निशान

प्रकट किए गए जो प्रकाशमान और विजयी थे।

فَاُوْصِيْكَ يَا رِدْفَ الْحُسَيْنِ اَبَاالْوَفَا
اَنِبْ وَاتَّقِ اللّٰه الْمُحَاسِبَ وَاحْذَرُ

तो मैं तुझे नसीहत करता हूं हे मुहम्मद हुसैन के पीछे चलने वाले। ख़ुदा से तौब: कर और उस मुहासिब से डर।

وَلَا تُلْهِكَ الدُّنْيَا عَنِ الدِّيْنِ وَالْهَوٰى
وَ اِنَّ عَذَابَ اللّٰه اَدْهٰى وَاَكْبَرُ

और तुझे दुनिया और उसका लालच धर्म से न रोके। और ख़ुदा का अज़ाब बड़ा कठोर और बड़ा है।

وَ لَا تَحْسَبِ الدُّنْيَا كَنَاطِفِ نَاطِفِيْ
اَتَدْرِىْ بِلَيْلِ مَسَرَّةٍ كَيْفَ تُصْبِحُ

और दुनिया को मिष्ठान की तरह न समझ जो मिष्ठान बनाने वाला तैयार करता है। क्या तू खुशी की रात को जानता है कि किस प्रकार सुबह करेगा।

اَلَا تَتَّقِى الرَّحْمٰنَ عِنْدَ تَصَنُّعٍ
وَمَنْ كَانَ اَتْقٰى لَا اَبَالَك يَحْذَرُ

क्या तू ख़ुदा से डरता नहीं और बनावट करता है और जो व्यक्ति संयमी हो वह अवश्य डरता है।

اَلَا لَيْتَ شِعْرِىْ هَلْ تُشَاهِدُ بَعْدَنَا
مَسِيْحًا يَحُطُّ مِنَ السَّمَآءِ وَ يُنْذِرُ

काश तुझे समझ होती। क्या मेरे बाद कोई और मसीह आकाश से उतरेगा और डराएगा?

وَلِلّٰهِ دَرُّ مذَكِّرٍ قَالَ اِنَّهُ
يَعَافُ الْهُدٰى شِكْسٌ زَنِيْمٌ مُّدَعْثَرُ

और उस डराने वाले ने क्या अच्छा कहा है कि एक बुरे स्वभाव वाला वीरान हो चुका कमीना हिदायत से नफ़रत रखता है।

ذَكَرْتَ بِمُدٍّ عِنْدَ بَحْثِكَ بِالْهَوٰى
اَحَادِيْثَ وَالْقُرْاٰنَ تُلْغِىْ وَ تَهْجُرُ

तू ने मुद्द में बहस करने के समय कहा था कि हमारे पास ये हदीसें है और क़ुर्आन को तो मात्र निकम्मा और झूठा ठहराया जाता है।

نَبَذْتُمْ كَلَامَ اللّٰهِ خَلْفَ ظُهُوْرِكُمْ
تَرَكْتُمْ يَقِيْنًا لِلظُّنُوْنِ فَفَكِّرُوْا

तुम लोगों ने ख़ुदा के कलाम को पीठ के पीछे डाल दिया और तुमने गुमान के लिए विश्वास को छोड़ दिया अब सोच लो।

فَصَارَ كَاٰثَارٍ عَفَتْ وَ تَغَيَّبَتْ
مَدَارُ نَجَاةِ النَّاسِ يَا مُتَكَبِّرُ

तो क़ुर्आन ऐसा हो गया जैसा कि मिटे हुए आसार और छुप गया, वही तो मुक्ति का आधार था हे अंहकारी।

وَاِنَّ شِفَاءَ النَّاسِ كَانَ بَيَانُهُ
فَهَلْ بَعْدَهُ نَحْوَالظُّنُوْنِ نُبَادِرُ

और उसका वर्णन लोगों के लिए शिफा थी। तो क्या हम क़ुर्आन छोड़कर गुमानों की तरफ दौड़ें।

وَ فَاضَتْ دُمُوْعُ الْعَيْنِ مِنِّىْ تَأَلُّمًا
اِذَا مَا سَمِعْتُ الْبَحْثَ يَا مُتَهَوِّرُ

तो इस विचार से मेरे आंसू जारी हो गए जब मैंने हे धृष्ट। तेरी

बहस को सुना।

كَذَبْـتَ بِمُـدٍّ عَامِـدًا فَتَمَايَلَـتْ
لَـيْـكَ شَـطَايِبُ جَاهِلِـيْنَ وَثَـوَّرُوْا

तू ने मुद्द गांव में जानबूझ कर झूठ बोला तो मूर्ख लोग तेरी तरफ झुक गए और शोर डाला।

وَ وَاللّٰهِ فِى الْقُـرْاٰنِ كُلُّ حَقِيْقَـةٍ
وَ آيَاتُـهُ مَقْطُوْعَـةٌ لَّا تَغَـيَّرُ

ख़ुदा की क़सम पवित्र-क़ुर्आन में प्रत्येक सच्चाई है और उसकी आयतें अटल हैं जो बदलती नहीं।

مَعِـيْنٌ مَّعِـيْنُ الْخُـلْدِ نُـوْرُ مُعِيْنِنَـا
هُـدَاهُ نَمِيْرُالْمَـاءِ لَا يَتَكَـدَّرُ

वह शुद्ध पानी है, स्वर्ग का पानी, हमारे ख़ुदा का नूरे हिदायत उसका स्वच्छ पानी है गन्दा नहीं।

اَرٰى آ يَـةً كَالْغِيْـدِ جَـاءَتْ مِـنَ السَّـمَا
وَفِيْهَـا شِـفَاءٌ لِّـلَّذِىْ يَتَدَبَّـر

उसकी आयतें खूबसूरत हैं जो आकाश से उतरीं और उन आयतों में विचार करने वालों के लिए शिफ़ा है।

وَ يُصْبِى قُلُوْبَ النَّـاسِ بِالنُّـوْرِ وَ الْهُدٰى
وَ يُـرْوِى الْعَطَـاشٰى بِالْمَعِـيْنِ وَ يَظْئَـر

और लोगों के दिल अपने प्रकाश के साथ खींच रहा है तथा प्यासों को साफ़ पानी से तृप्त कर रहा है और दाइयों की तरह दूध पिलाता है।

وَ قَـدْ كَانَ صُحُـفٌ قَبْـلَهُ مِثْـلَ خَـادِجٍ
فَجَـاءَ لِتَكْمِيْـلِ الْـوَرٰى لِيُغَـزَّر

इस से पहली किताबें उस ऊंटनी की तरह थीं जो जन्म से पहले बच्चा देती हैं। अतएव क़ुर्आन लोगों को पूर्ण करने के लिए आया ताकि एक बार ही सम्पूर्ण दूध दोहा जाए।

بِلَيْـلٍ كَمَـوْجِ البَحْـرِ اَرْخٰى سُـدُوْلَهُ
تَجَـلّٰى وَاَدْرٰى كُلَّ مَـنْ كَانَ يُبْصِـرُ

ऐसी रात में आया जो सागर की लहर की तरह अपनी चादर फैला रखी थी तो उसने आकर युग को प्रकाशित कर दिया और प्रत्येक जो देख सकता था उसे दिखा दिया।

اَيَـا اَيُّهَـا الْمُغْـوِیْ اَتُنْكِـرُ شَـأْنَهُ
وَمَـافِیْ يَدَيْنَـا غَـيْرُهُ يَـا مُـزَوِّرُ

हे गुमराह करने वाले क्या तू क़ुर्आन की शान से इन्कार करता है। क़ुर्आन के अतिरिक्त हमारे हाथ में क्या है हे झूठ गढ़ने वाले।

لِقَـوْمٍ هَـذٰى لَا بَـارَكَ اللّٰهُ مُدَّهُـمْ
جَهُـوْلٌ فَـاَدّٰى حَـقَّ كِـذْبٍ فَاَبْشَـرُوْا

उस व्यक्ति ने एक कौम के लिए बकवास की ख़ुदा उन के मुद्द को बरकत न दे। यह आवभगत के व्यक्ति मूर्ख है इसने झूठ बोलने का हक अदा कर दिया इसलिए वे लोग प्रसन्न हो गए।

لَهُ جَسَـدٌ لَّا رُوْحَ فِيْـهِ وَلَا صَفَـا
كَقِـدْرٍ يَّجُـوْشُ و لَيْـسَ فِيْـهِ تَدَبُّـرُ

यह केवल एक शरीर है जिसमें जान नहीं और न सफ़ा और एक हंडिया की तरह जोश मारता है कुछ उपाय नहीं करता।

نَبَذْتُمْ هُدَى الْمَوْلٰى وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ
فَدَعْنِیْ اُبَیِّنْ كُلَّمَا كَانَ يُسَتَّرُ

तुमने ख़ुदा तआला की हिदायतों को पीठ पीछे फैंक दिया अत: मुझे छोड़ दे ताकि मैं वर्णन करुं जो कुछ छुपाया गया है।

وَ اِنِّیْ اَخَذْتُ الْعِلْمَ مِنْ مَّنْبَعِ الْهُدٰى
وَ اَجْرٰى عُيُوْنِیْ فَضْلُهُ الْمُتَكَثِّرُ

और मैंने ज्ञान को हिदायत के स्रोत से लिया है और उसके फज़्ल ने मेरे झरने जारी कर दिये हैं।

وَ اُعْطِيْتُ مِنْ رَّبِّیْ عُلُوْمًا صَحِيْحَةً
وَاَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ وَاُعْثَرُ

और मैंने अपने रब्ब से सही विद्याएं पाई हैं और जो कुछ तुम नहीं जानते वह मुझे सिखाया जाता और सूचना दिया जाता है।

وَ كَأْسٍ سَقَانِیْ رُوْحُ رُوْحِیْ كَاَنَّهَا
رَحِيْقٌ كَنَجْمٍ نَاصِعِ اللَّوْنِ اَحْمَرُ

और कई प्याले मेरी जान की जान ने मुझे ऐसे पिलाए हैं कि जैसे सितारे की तरह एक शराब है शुद्ध लाल रंग की।

فَلَا تُبْشِرُوْا بِالنَّقْلِ يَا مَعْشَرَ الْعِدَا
وَ كَمْ مِّنْ نُّقُوْلٍ قَدْ فَرَاهَا مُسَحِّرُ

तो हे विरोधियो. केवल नक्लों के साथ प्रसन्न न हो जाओ। बहुत सी नक्लें और हदीसें हैं जो धोखेबाज़ ने बनाई हैं।

هَلِ النَّقْلُ شَيْءٌ بَعْدَ اِيْحَاءِ رَبِّنَا
فَاَیَّ حَدِيْثٍ بَعْدَهُ نَتَخَيَّرُ

और ख़ुदा तआला की वह्यी के बाद नक़्ल की क्या वास्तविकता

है। तो हम ख़ुदा तआला की वह्यी के बाद किस हदीस को मान लें।

وَ قَـدْ مُـزِّقَ الْاَخْبَـارُ كُلَّ مُمَـزَّقٍ
فَـكُلٌّ بِمَـا هُـوْ عِنْـدَهُ يَسْتَبْشِـرُ

और हदीसें तो टुकड़े-टुकड़े हो गईं तथा प्रत्येक गिरोह अपनी हदीसों से प्रसन्न हो रहा है।

اَعِنْـدَكَ بُرْهَـانٌ قَـوِىٌّ مُّنَقَّـحٌ
عَـلٰى فَضْـلِ شَـيْخٍ عَـابَ اَوْ اَنْـتَ تَهْـذِرُ

क्या तेरे पास मौलवी मुहम्मद हुसैन की श्रेष्ठता का कोई प्रमाण है जो मेरे कलाम का दोष निकालता है या तू यों ही बकवास कर रहा है।

اَ تَحْسَـبُ مِـنْ حُمْـقٍ حُسَـيْنًا مُّحَقِّقًا
وَفِىْ كَفِّـهِ حَمْـأٌ وَّ مَـاءٌ مُّكَـدَّرُ

क्या तू मूर्खता से मुहम्मद हुसैन का विद्वान(आलिम) समझता है। उसके हाथ में काली मिट्टी और गन्दा पानी है।

اَ تُخْـبِرُنِىْ مِـنْ نَّـازِلٍ مَّـا رَأَيْتَـه
وَتَذْكُـرُ اَخْبَـارًا دَفَاهَـا التَّغَـيُّرُ

क्या तू मेरे पास उस उतरने वाले का वर्णन करता है जिसको तू ने नहीं देखा और ऐसी हदीसें प्रस्तुत करता है जिन का अक्षरांतरण ने सत्यानाश कर दिया।

وَ تَعْلَـمُ اَنَّ الظَّـنَّ لَيْـسَ بِقَاطِـعٍ
وَ اَنَّ الْيَقِـيْنَ الْبَحْـتَ يُـرْوِىْ وَ يُثْمِـرُ

और तू जानता है कि गुमान कोई ठोस प्रमाण नहीं तथा विश्वास

वह चीज़ है जो सींचता और फल लाता है।

وَلَسْــتُ كَمِثْلِــكَ فِي الظُّنُــوْنِ مُقَيَّــدًا
وَ اِنِّیْ اَرَی اللّٰہ الْقَدِیْــرَ وَ اُبْصِــر

मैं तेरे समान गुमानों में गिरफ़्तार नहीं। मैं अपने शक्तिमान ख़ुदा को देख रहा हूं और अवलोकन कर रहा हूं।

اَخَذْنَــا مِــنَ الْــحَیِّ الَّذِیْ لَیْــسَ مِثْــلُهُ
وَ اَنْتُــمْ عَــنِ الْمَــوْتٰی رَوَیْتُــمْ فَفَکِّــرُوْا

हम ने उस से लिया कि वह जीवित और क़ायम रहने वाला तथा अकेला और भागीदार रहित है और तुम लोग मुर्दों से रिवायत करते हो।

اُرَبّٰی بِفَضْــلِ اللّٰہِ فِیْ حُجْــرِ لُطْفِــهٖ
وَفِیْ کُلِّ مَیْــدَانٍ اُعَــانُ وَاُنْصَــر

मैं ख़ुदा की मेहरबानी के आंचल में पोषण पा रहा हूं और प्रत्येक मैदान में सहायता दिया जाता हूं।

وَقَــدْ خَصَّــنِیْ رَبِّی بِفَضْــلٍ وَّرَحْمَــةٍ
وَ نَصْــرٍ وَّ تَأْیِیْــدٍ وَّ وَحْیٍ یُّکَــرَّرُ

मेरे रब्ब ने अपने फज़्ल और रहमत से मुझे विशेष कर दिया। और समर्थन एवं सहायता तथा निरन्तर वह्यी से मुझे विशिष्ट किया है।

سَــقَانِیْ مِــنَ الْاَسْــرَارِ کَأْسًــا رَوِیَّــةً
هَــدَانِیْ اِلٰی نَهْــجٍ بِــهِ الْحَــقُّ یَبْهَــر

मुझे वह प्याला पिलाया जो तृप्त करने वाला है और मुझे उस मार्ग का मार्गदर्शन किया जिसके साथ सच चमकता है।

فَدَعْ اَيُّهَا الْمُغْوِیْ حُسَيْنًا وَّ ذِكْرَهُ
اَ تَذْكُرُ لَيْلًا عِنْدَ شَمْسٍ تُنَوِّرُ

तो हे गुमराह करने वाले। मुहम्मद हुसैन और उसकी चर्चा को छोड़ दे। क्या तू सूर्य के सामने एक रात की चर्चा करेगा।

وَ نَحْنُ كُمَاةُ اللّٰهِ جِئْنَا بِاَمْرِهٖ
حَلَلْنَا بِلَادَالشِّرْكِ وَاللّٰهُ يَخْفُرُ

हम ख़ुदा के सवार हैं उसके आदेश से आए हैं तथा हम शिर्क के शहरों में दाखिल हुए है और ख़ुदा मार्ग-दर्शन कर रहा है।

اَقُوْلُ وَلَا اَخْشٰى فَاِنِّیْ مَسِيْحُهُ
وَلَوْ عِنْدَ هٰذَا الْقَوْلِ بِالسَّيْفِ اُنْحَرُ

मैं बेधड़क कहता हूं कि मैं ख़ुदा का मसीह मौऊद हूं यद्यपि मैं इस कथन पर तलवार से क़त्ल किया जाऊं।

وَقَدْ جَاءَ فِی الْقُرْآنِ ذِكْرُ فَضَائِلِیْ
وَ ذِكْرُ ظُهُوْرِیْ عِنْدَ فِتْنٍ تُثَوَّرُ

मेरी खूबियों का वर्णन क़ुर्आन में मौजूद है और मेरे प्रादुर्भाव का वर्णन भी फ़ित्ने से भरे युग में होना लिखा है।

وَمَا اَنَا اِلاَّ مُرْسَلٌ عِنْدَ فِتْنَةٍ
فَرُدَّ قَضَاءَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ تَقْدِرُ

मैं ख़ुदा की ओर से भेजा गया हूं। तू ख़ुदा के आदेश को बदल दे यदि तुझ में शक्ति है।

تَخَيَّرَنِی الرَّحْمَانُ مِنْ بَيْنِ خَلْقِهٖ
لَهُ الْحُكْمُ يَقْضِیْ مَايَشَاءُ وَ يَاْمُرُ

ख़ुदा ने मुझे अपनी सृष्टियों में से चुन लिया है आदेश उसी

का आदेश है जो चाहे करे।

وَ وَاللّٰہِ مَا اَفْتَرِیْ وَاِنِّیْ لَصَادِقٌ
وَ اِنَّ سَنَا صِدْقِیْ یَلُوْحُ وَ یَبْھَرُ

और ख़ुदा की क़सम मैं झूठ गढ़ने वाला नहीं, मैं सच्चा हूं तथा मेरी सच्चाई का प्रकाश चमक रहा है

تَرَاءَتْ لَنَا کَالشَّمْسِ صَفْوَۃُ اَمْرِنَا
وَ اَرْوَتْ حَدَائِقَنَا عُیُوْنٌ تُنَضِّرُ

सूर्य के समान हमारे मामले की सफाई प्रकट हो गई और हमारे बाग़ों को उन झरनों ने सींचा जो तरोताज़ा कर देते हैं।

تَکَدَّرَ مَاءُ السَّابِقِیْنَ وَعَیْنُنَا
اِلٰی اٰخِرِ الْاَیَّامِ لَا تَتَکَدَّرُ

दूसरो के पानी जो उम्मत में से थे सूख गए परन्तु हमारा झरना अन्तिम दिनों तक कभी नहीं सूखेगा।

اِذَا مَا غَضِبْنَا یَغْضَبُ اللّٰہُ صَائِلًا
عَلٰی مُعْتَدٍ یُّؤْذِیْ وَ بِالسُّوْءِ یجْھَرُ

जब हम क्रोधित हों तो ख़ुदा उस व्यक्ति पर प्रकोप करता है जो हद से बढ़ जाता है और खुली-खुली बुराई पर तत्पर होता है।

وَ یَاْتِیْ زَمَانٌ کَاسِرٌ کُلَّ ظَالِمٍ
وَھَلْ یُھْلَکَنَّ الْیَوْمَ اِلَّا الْمُدَمَّرُ

और वह समय आ रहा है जो प्रत्येक अत्याचारी को तोड़ेगा तथा कोई नहीं मरेगा परन्तु वही जो पहले से मर चुका।

وَ اِنِّیْ لَشَرُّ النَّاسِ اِنْ لَّمْ یَکُنْ لَّھُمْ
جَزَاءَ اِھَانَتِھِمْ صَغَارٌ یُّصَغِّرُ

और मैं बहुत बुरे मनुष्यों में से हूंगा यदि अपमान करने वाले अपना अपमान नहीं देखेंगे।

وَ وَاللّٰهِ اِنِّیْ مَاادَّعَیْتُ تَعَلِّیًا
وَ اَبْغِیْ حَیَاۃً مَّا یَلِیْھَا التَّکَبُّرُ

और ख़ुदा की क़सम मैंने शेख़ी के मार्ग से दावा नहीं किया। मैं ऐसा जीवन चाहता हूं जिस पर अहंकार की छाया ही न हो।

وَقَدْ سَرَّنِیْ اَنْ لَّا یُشَارَ بِاِصْبَعٍ
اِلَیَّ وَاُلْقٰی مِثْلَ عَظْمٍ یُعَفَّرُ

और मेरी यह खुशी रही कि मेरी ओर उंगली के साथ संकेत न किया जाए और मैं ऐसा फेंक दिया जाऊं जैसे कि एक धूल में ग्रस्त हड्डी।

فَلَمَّا اَجَزْنَا سَاحَۃَ الْکِبْرِ کُلَّھَا
اَتَانِیْ مِنَ الرَّحْمٰنِ وَحْیٌ یُّکَبِّرُ

तो जब हम अंहकार के मैदान से दूर निकल गए और सम्पूर्ण मैदान तय कर लिया तब ख़ुदा की वह्यी मेरे पास आई जिसने मुझे बड़ा बना दिया।

اِذَا قِیْلَ اِنَّکَ مُرْسَلٌ خِلْتُ اَنَّنِیْ
دُعِیْتُ اِلٰی اَمْرٍ عَلَی الْخَلْقِ یَعْسُرُ

जब यह कहा गया कि तू ख़ुदा की ओर से भेजा गया तो मैंने सोचा कि मैं ऐसी बात की ओर बुलाया गया कि जो लोगों पर भारी होगी।

وَلَوْ اَنَّ قَوْمِیْ اٰنَسُوْنِیْ کَطَالِبٍ
دَعَوْتُ لِیُعْطَوْا عَیْنَ عَقْلٍ وَبُصِّرُوْا

यदि मेरे पास मेरी क़ौम अभिलाषी की तरह आती तो मैं दुआ करता कि उनको बुद्धि दी जाए और दृष्टि प्रदान की जाए।

وَ لٰكِنَّهُمْ عَابُوْا وَ اٰذَوْا وَ زَوَّرُوْا
وَ حَثُّوْا عَلَيَّ الْجَاهِلِيْنَ وَ ثَوَّرُوْا

परन्तु उन्होंने दोष लगाये और दुख दिया तथा झूठ बांधा और मूर्खों को मुझ पर भड़काया

وَعَيَّرَنِى الْوَاشُوْنَ مِنْ غَيْرِ خُبْرَةٍ
وَنَاشُوْا ثِيَابِىْ مِنْ جُنُوْنٍ وَّ اعْذَرُوْا

और मीन-मेख करने वालों ने बिना परखे और अवगत हुए मुझ पर डांट-डपट की और उन्माद से मेरे कपड़े पकड़ लिए और इस काम में सर्वथा अतिश्योक्ति की

عَجِبْتُ لَهُمْ فِىْ حَرْبِنَا كَيْفَ خَالَطُوْا
وَلَمْ يَبْقَ ضِغْنٌ بَيْنَهُمْ وَتَنَمُّرُ

मैंने उन से आश्चर्य किया वे हमारी लड़ाई में कैसे परस्पर मिल गए तथा उनके मध्य परस्पर कोई दरिन्दगी और वैर न रहा।

وَ قَضَّوْا مَطَاعِنَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ اَصْدَرُوْا
اِلَيْنَا الْاَسِنَّةَ وَالْخَنَاجِرَ شَهَّرُوْا

एक अवधि तक तो एक दूसरे पर कटाक्ष करते रहे फिर उन्होंने हमारी ओर भाले फेर दिए और तलवारे खींचीं।

فَقُلْتُ لَهُمْ يَا اَيُّهَا النَّاسُ مَالَكُمْ
اَثَرْتُمْ غُبَارًا مِّنْ كَلَامٍ يُّزَوَّرُ

तो मैंने उनसे कहा कि हे लोगों तुम्हें क्या हो गया तुमने एक

झूठी बात से इतनी धूल उड़ाई।

عَلَی الْحُمْقِ جَیَّاشُوْنَ مِنْ غَیْرِ فِطْنَةٍ
کَمَا زَلَّتِ الصَّفْوَاءُ حِیْنَ تُکَوَّرُ

केवल मूर्खता से जोश करने वाले जैसा कि एक साफ पत्थर नीचे बुद्धिमता के बिना फैंकने से शीघ्र ही नीचे को फिसल जाता है।

فَمَا بَرِحَتْ اَقْدَامُنَا مَوْطِنَ الْوَغٰی
وَمَا ضَعُفَتْ حَتّٰی اَعَانَ الْمُظَفِّرُ

तो हमारे कदम रणभूमि से अलग न हुए और न हम थके यहां तक कि ख़ुदा ने हमें विजय प्रदान की।

وَ کُنْتُ اَرَی الْاِسْلَامَ مِثْلَ حَدِیْقَةٍ
مُبَعَّدَةٍ مِّنْ عَیْنِ مَاءٍ یُّنَضِّرُ

और मैं इस्लाम को उस बाग़ की तरह देखता हूं जो उस झरने से दूर हो जो तरोताज़ा करता है।

فَمَازِلْتُ اَسْقِیْهَا وَ اَسْقِیْ بِلَادَهَا
مِنَ الْمُزْنِ حَتّٰی عَادَ حِبْرٌ مُّدَعْثَرُ

तो मैं उस बाग़ को पानी देता रहा और उस की ज़मीनों को आकाशीय वर्षा का पानी यहां तक कि उसकी वीरान हो चुकी सुन्दरता लौट आई।

وَجَاشَتْ اِلَیَّ النَّفْسُ مِنْ فِتْنَةِ الْعِدَا
فَاَنْزَلَ رَبِّیْ حَرْبَةً لَّا تُکَسَّرُ

और मेरा दिल दुश्मनों के फ़ित्नों से निकलने लगा तो मेरे रब्ब ने एक दाव उतारा जो तोड़ा नहीं जाएगा।

فَاَصۡبَحۡتُ اَسۡتَقۡرِی الرِّجَالَ رِجَالَـهُمۡ
لِاُفۡحِمَ قَوۡمًا جَابِرِیۡنَ وَ اُنۡذِرُ

तो मैंने सुबह की और उन लोगों की खोज में लग गया ताकि मैं अत्याचारियों पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा करुं।

وَقَدۡ کَانَ بَابُ اللُّدِّ مَرۡکَزَ حَرۡبِهِمۡ
کَلَامٌ مُّضِلٌّ لَّاحُسَامٌ مُشَهَّرُ

उन के युद्ध करने का ढंग केवल मौखिक लड़ाई थी अर्थात् केवल गुमराह करने वाली बातों को प्रस्तुत करते और धर्म के लिए तलवार की लड़ाई न थी

فَوَافَیۡتُ مَجۡمَعَ لُدِّهِمۡ وَقَتَلۡتُهُمۡ
بِضَرۡبٍ وَّلَمۡ اَکۡسَلۡ وَلَمۡ اَتَحَسَّرُ

तो मैं लड़ने वालों के जमावड़े में आया और एक ही चोट से क़त्ल कर दिया और मैं न सुस्त हुआ न थका।

وَاِنِّیۡ اَنَا الۡمَوۡعُوۡدُ وَالۡقَائِمُ الَّذِیۡ
بِهٖ تُمۡلَأَنَّ الۡاَرۡضُ عَدۡلًا وَّ تُثۡمِرُ

मैं **मसीह मौऊद** और वह इमाम क़ायम हूं जो पृथ्वी को न्याय से भरेगा और वीरान जंगलों को फलदार करेगा।

بِنَفۡسِیۡ تَجَلَّتۡ طَلۡعَةُ اللّٰهِ لِلۡوَرٰی
فَیَاطَالِبِیۡ رُشۡدٍ عَلٰی بَابِیۡ احۡضُرُوۡا

मेरे साथ ख़ुदा की सूरत प्रजा पर प्रकट होगी। अत: हे हिदायत के अभिलाषियों मेरे दरवाज़े पर उपस्थित हो जाओ।

خُذُوۡا حَظَّکُمۡ مِّنِّیۡ فَاِنِّیۡ اِمَامُکُمۡ
اُذَکِّرُکُمۡ اَیَّامَکُمۡ وَاُبَشِّرُ

अपना हिस्सा मुझ से ले लो कि मैं तुम्हारा इमाम हूं। तुम्हें तुम्हारे दिन याद दिलाता हूं और खुशखबरी देता हूं।

وَقَدْ جِئْتُكُمْ يَا قَوْمِ عِنْدَ ضَرُوْرَةٍ
فَهَلْ مِنْ رَشِيْدٍ عَاقِلٍ يَّتَدَبَّرُ

और हे मेरी क़ौम मैं आवश्यकता के समय तुम्हारे पास आया हूं। अतः क्या कोई तुम में से कोई सीधा मार्ग पाने वाला और बुद्धिमान हो जो इस बात को सोचे।

وَمَا الْبِرُّ اِلَّا تَرْكُ بُخْلٍ مِّنَ التُّقٰى
وَمَا الْبُخْلُ اِلَّا رَدُّ مَنْ يَّتَبَقَّرُ

और नेकी इसके अतिरिक्त कुछ चीज़ नहीं कि तक़्वे (संयम) के द्वारा कंजूसी को दूर कर दिया जाए। और कंजूसी इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि जिस का ज्ञान विशाल और पूर्ण है तथा अपने से उत्तम है उसको स्वाकीर न किया जाए।

وَ قَالُوْا اِلَى الْمَوْعُوْدِ لَيْسَ بِحَاجَةٍ
فَاِنَّ كِتَابَ اللّٰهِ يَهْدِیْ وَ يُخْبِرُ

उन्होंने कहा कि मसीह मौऊद की तरफ कुछ आवश्यकता नहीं क्योंकि अल्लाह की किताब हिदायत देती तथा ख़बर देती है

وَمَاهِیَ اِلَّا بِالْغَيُوْرِ دُعَابَةٌ
فَيَاعَجَبًا مِّنْ فِطْرَةٍ تَتَهَوَّرُ

और यह तो स्वाभिमानी ख़ुदा के साथ हसी-ठट्ठा है तो ऐसी धृष्ट प्रकृतियों पर आश्चर्य आता है।

وَقَدْ جَاءَ قَوْلُ اللّٰهِ بِالرُّسْلِ تَوْأَمًا
وَمِنْ دُوْنِهِمْ فَهْمُ الْهُدٰى مُتَعَسِّرُ

वास्तविकता यह है कि ख़ुदा का कलाम और रसूल परस्पर जुड़वां हैं और उनके बिना ख़ुदा के कलाम का समझना कठिन है।

فَـاِنَّ ظُـبَی الْاَسْـیَافِ تَحْتَـاجُ دَاۤئِمًـا
اِلٰی سَـاعِدٍ یُّجْـرِی الدِّمَـاۤءَ وَ یُنْـدِرِ

क्योंकि तलवारों की धार हमेशा ऐसे बाज़ू की मोहताज है जो ख़ून को जारी करता और सर को शरीर से पृथक कर देता है।

بِعَضْـبٍ رَّقِیْـقِ الشَّـفْرَتَیْنِ هَزِیْمَـۃٌ
اِذَا نَاشَـہٗ طِفْـلٌ ضَعِیْـفٌ مُّحَقَّـرٗ

तलवार यद्यपि बारीक धारें रखती हो परन्तु फिर भी पराजय होगी जबकि उसको कमज़ोर और तुच्छ बच्चा हाथ में पकड़ेगा।

وَ اَ مَّـا اِذَا اَخَـذَ الْکَمِـیُّ مُفَقِّـرًا
کَفَـی الْعَـوْدَ مِنْہُ الْبَـدْئُ ضَرْبًـا وَّ یَنْحَرَ

परन्तु जब एक बहादुर आदमी एक कठोर तलवार को पकड़े तो उसका पहला वार दूसरे वार की आवश्यकता नहीं छोड़ेगा और ज़िब्ह कर देगा।

اِذَا قَـلَّ تَقْـوَی الْمَـرْءِ قَـلَّ اقْتِبَاسُـہٗ
مِـنَ الْـوَحْیِ کَالسَّـلْخِ الَّذِیْ لَا یُنَـوِّرُ

जब मनुष्य का संयम कम हो जाता है तो ख़ुदा के कलाम से उसका बातें निकालना तथा इबारतों के संदर्भ देना भी कम हो जाता है जैसा कि महीने की अन्तिम रात में कुछ रोशनी नहीं रहती।

فَیَـا اَسَـفَا اَیْـنَ التُّقَـاۃُ وَاَرْضُہَـا
وَاِنِّیْ اَرٰی فِسْـقًا عَـلَی الْفِسْـقِ یَظْہَـرُ

तो अफसोस कहां है उसका संयम और ज़मीन कहां है और मैं देखता हूं कि दुराचार पर दुराचार प्रकट हो रहा है।

أَرَى ظُلُمَاتٍ لَّيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَهَا
وَ ذُقْتُ كُئُوْسَ الْمَوْتِ اَوْ كُنْتُ اُنْصَرُ

मैं वे अंधकार देखता हूं। काश मैं उससे पहले मर जाता और मौत के प्याले चख लेता और या सहायता दिया जाता।

أَرَى كُلَّ مَحْجُوْبٍ لِدُنْيَاهُ بَاكِيًا
فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَبْكِيْ لِدِيْنٍ يُحَقَّرُ

मैं प्रत्येक महजूब को देखता हूं जो अपनी दुनिया के लिए रो रहा है। तो कौन है जो उस धर्म के लिए रोता है जिस का अपमान किया जाता है।

وَلِلدِّيْنِ اَطْلَالٌ اَرَاهَا كَلَاهِفٍ
وَ دَمْعِيْ بِذِكْرِ قُصُوْرِهٖ يَتَحَدَّرُ

और धर्म के लिए गिरे-पड़े टूटे हुए निशान शेष हैं जिन को मैं निराशा के साथ देख रहा हूं और उसके महलों को याद करके मेरे आंसू जारी हैं।

تَرَاءَتْ غَوَايَاتٌ كَرِيْحٍ مُّجِيْحَةٍ
وَاَرْخٰى سَدِيْلَ الْغَيِّ لَيْلٌ مُّكَدَّرُ

गुमराहियां एक आंधी के समान प्रकट हो गईं, ऐसी आंधी जो वृक्षों को जड़ से उखाड़ती है। और एक अंधेरी रात ने गुमराही के पर्दे नीचे छोड़ दिए।

تَهُبُّ رِيَاحٌ عَاصِفَاتٌ كَأَنَّهَا
سِبَاعٌ بِاَرْضِ الْهِنْدِ تَعْوِيْ وَتَزْئَرُ

घोर आंधियां चल रही हैं जैसे कि वह दरिन्दे हैं हिन्द देश में जो भेड़िए और शेर की आवाज़ निकाल रहे हैं।

اَرَی الْفَاسِقِیْنَ الْمُفْسِدِیْنَ وَزُمْرَهُمْ
وَقَلَّ صَلَاحُ النَّاسِ وَالْغَیُّ یَکْثُرُ

मैं दुराचारियों और उपद्रवियों के समूह देख रहा हूं तथा नेकी कम हो गई और गुमराही बढ़ गई।

أَرٰی عَیْنَ دِیْنِ اللّٰہِ مِنْھُمْ تَکَدَّرَتْ
بِھَا الْعِیْنُ وَ الْآرَامُ تَمْشِیْ وَتَعْبُرُ

ख़ुदा के धर्म के करने को देखता हूं कि गन्दा हो गया और उसमें जंगली चौपाए चल रहे और पार कर रहे हैं।

اَرَی الدِّیْنَ کَالْمَرْضٰی عَلَی الْاَرْضِ رَاغِمًا
وَ کُلُّ جَھُوْلٍ فِی الْھَوٰی یَتَبَخْتَرُ

अनुवाद – मैं धर्म को देखता हूं कि वह बीमार की तरह पृथ्वी पर पड़ा हुआ है प्रत्येक मूर्ख अपनी इच्छा और लालच के जोश में गर्व के साथ चल रहा है।

وَمَا ھَمُّھُمْ اِلَّا لِحَظِّ نُفُوْسِھِمْ
وَمَا جُھْدُھُمْ اِلَّا لِحَظٍّ یُّوَفَّرُ

और उनकी हिम्मतें इस से अधिक नहीं कि वे कामवासनाओं के आनन्द को चाहते हैं और उन के प्रयास इससे बढ़कर नहीं कि वे कामवासनाओं का आनंद कसरत से चाहते हैं।

نَسُوْا نَھْجَ دِیْنِ اللّٰہِ خُبْثًا وَّ غَفْلَةً
وَ قَدْ سَرَّھُمْ سُکْرٌ وَّ فِسْقٌ وَّ مَیْسِرُ

उन्होंने धर्म के मार्ग को दुष्टता और लापरवाही के कारण भुला दिया और उनको मस्ती तथा और जुए बाज़ी पसन्द आ गई।

أَرَى فِسْقَهُمْ قَدْ صَارَ مِثْلَ طَبِيْعَةٍ
وَمَا اِنْ أَرَى عَنْهُمْ شَقَاهُمْ يُقَشَّرُ

मैं देखता हूं कि उनका दुराचार तबीयत में दाखिल हो गया और मेरे नज़दीक अब प्रत्यक्षतया असंभव है। कि इन का दुराचार इन से अलग कर दिया।

فَلَمَّا طَغَى الْفِسْقُ الْمُبِيْدُ بِسَيْلِهِ
تَمَنَّيْتُ لَوْكَانَ الْوَبَائُ الْمُتَبِّرُ

तो जब तबाह करने वाला दुराचार एक तूफान की सीमा तक पहुंच गया तो मैंने अभिलाषा की कि देश में ताऊन फैले और तबाह करे।

فَاِنَّ هَلَاكَ النَّاسِ عِنْدَ اُولِى النُّهٰى
اَحَبُّ وَاَوْلٰى مِنْ ضَلَالٍ يُّدَمِّرُ

क्योंकि लोगों का मर जाना बुद्धिमानों के नज़दीक इससे अच्छा है कि उन पर गुमराही की मौत आए।

وَمَنْ ذَا الَّذِىْ مِنْهُمْ يَخَافُ حَسِيْبَه
وَمَنْ ذَا الَّذِىْ يَبْغِى السَّدَادَ وَيُؤْثِرُ

उन में से कौन है जो अपने ख़ुदा से डरता है और उन में से कौन है जो नेकी का मार्ग ग्रहण कर रहा है।

وَمَنْ ذَا الَّذِىْ لَا يَفْجُرُ اللّٰهَ عَامِدًا
وَمَنْ ذَا الَّذِىْ بَرٌّ عَفِيْفٌ مُّطَهَّرُ

और उनमें से कौन है जो जानबूझ कर ख़ुदा का गुनाह नहीं

करता तथा उनमें से कौन नेक,संयमी पवित्र दिल है।

وَمَــنْ ذَا الَّذِیْ مَاسَــبَّنِیْ لِتُقَاتِــهٖ
وَقَــالَ ذَرُوْنِیْ کَیْــفَ اُوْذِیْ وَ اُ کْــفِرُ

और उनमें से कौन है जिसने मुत्तकी होने के कारण मुझे गालियां न दी और कहा मुझे छोड़ दो मैं क्योंकर दुख दूं और कफ़िर ठहराऊं।

وَ کَیْــفَ وَاِنَّ اَ کابــر الْقَــوْمِ کُلَّــهُمْ
عَــلَیَّ حِــرَاصٌ وَّالْحُسَــامُ مُشَــهَّر

और गालियों से बचना कैसे हो सके वे तो मेरी जान लेने के लालची हैं और तलवार खींची गई है।

وَ لٰکِــنْ عَلَیْــهِمْ رُعْــبُ صِدْقِــیْ مُعَظَّــمٌ
فَکَیْــفَ یُبَــارِی اللَّیْــثَ مَــنْ هُــوَ جَــوْذَرُ

परन्तु मेरी शान का रोब उन पर बहुत है तो शेर का मुक़ाबला कैसे कर सकता है वह जो बछड़ा है।

فَلَیْــسَ بِاَیْــدِی الْقَــوْمِ اِلاَّ لِسَــانُهُمْ
مُنَجَّسَــةً بِالسَّــبِّ وَاللّٰہُ یَنْظُــرُ

तो क़ौम के हाथ में ज़ुबान के अतिरिक्त कुछ नहीं वह ज़ुबान जो गालियों की गन्दगी से ग्रस्त है और ख़ुदा देख रहा है।

قَضَــی اللّٰہُ اَنَّ الطَّعْــنَ بِالطَّعْــنِ بَیْنَنَــا
فَذَالِــكَ طَاعُــوْنٌ اَ تَاهُــمْ لِیُبْصِــرُوْا

ख़ुदा ने यह फैसला किया है कि कटाक्ष का दण्ड कटाक्ष है तो वह यही ताऊन है जो इनके देश में पहुंच गई है ताकि इनकी आंखे खुलें।

وَلَيْسَ عِلَاجُ الْوَقْتِ اِلَّا اِطَاعَتِيْ
اَطِيْعُوْنِ فَالطَّاعُوْنُ يُفْنٰى وَيُدْحَرِ

समय का इलाज मेरी फ़र्माबरदारी करना है। अतः मेरी फ़र्माबरदारी करो, ताऊन दूर हो जाएगी।

وَ قَدْ ذَابَ قَلْبِيْ مِنْ مَّصَائِبِ دِيْنِنَا
وَاَعْلَمُ مَالَا يَعْلَمُوْنَ وَاُبْصِرُ

और मेरा दिल धार्मिक संकटों से पिघल गया है और मुझे वे बातें मालूम हैं जो उन्हे मालूम नहीं।

وَبَثِّيْ وَحُزْنِيْ قَدْ تَجَاوَزَ حَدَّهُ
وَ لَوْلَا مِنَ الرَّحْمٰنِ فَضْلٌ اُتَبَّرَ

औऱ मेरा ग़म और शोक हद से बढ़ गया है और यदि ख़ुदा का फज़्ल न होता तो मैं मर जाता।

وَعِنْدِيْ دُمُوْعٌ قَدْ طَلَعْنَ الْمَآقِيَا
وَعِنْدِيْ صُرَاخٌ لَّايَرَاهُ الْمُكَفِّرُ

और मेरे पास वे आंसू है जो आंख के कौने में चढ़ रहे हैं तथा मेरे पास वह आह है जो काफ़िर कहने वाला उसको नहीं देखता।

وَلِيْ دَعَوَاتٌ صَاعِدَاتٌ اِلَى السَّمَا
وَلِيْ كَلِمَاتٌ فِي الصَّلَايَةِ تَقْعَرُ

और मेरी वे दुआएं हैं जो आकाश पर चढ़ रहीं है तथा मेरी वे बातें हैं जो पत्थर में धंस जाती हैं।

وَ اُعْطِيْتُ تَأْثِيْرًا مِّنَ اللّٰهِ خَالِقِيْ
وَ تَأْوِيْ اِلٰى قَوْلِيْ قُلُوْبٌ تُطَهَّرُ

और मैं ख़ुदा से जो मेरा पैदा करने वाला है एक प्रभाव दिया

गया हूं और मेरी तरफ पवित्र दिल झुकते हैं।

وَ اِنَّ جَنَانِیْ جَاذِبٌ بِصِفَاتِہٖ
وَ اِنَّ بَیَانِیْ فِی الصُّخُوْرِ یُؤَثِّرُ

और मेरा दिल अपनी विशेषताओं के साथ आकर्षित कर रहा है और मेरा बयान पत्थरों में असर करता है।

حَفَرْتُ جِبَالَ النَّفْسِ مِنْ قُوَّۃِ الْعُلٰی
فَصَارَ فُؤَادِیْ مِثْلَ نَھْرٍ تُفَجَّرُ

मैनें नफ़्स के पहाड़ो को आकाशीय शक्ति से खोद दिया तो मेरा दिल उस नहर की तरह हो गया जो जारी की जाती है

وَ اُعْطِیْتُ مِنْ خَلْقٍ جَدِیْدٍ مِّنَ الْھُدٰی
فَکُلَّ بَیَانٍ فِی الْقُلُوْبِ اُصَوِّرُ

और मुझे एक नया जन्म हिदायत का दिया गया अत: मैं प्रत्येक बयान दिलों में अंकित कर देता हूं।

فَرِیْقٌ مِّنَ الْاَحْرَارِ لَا یُنْکِرُوْنَنِیْ
وَ حِزْبٌ مِّنَ الْاَشْرَارِ آذَوْا وَ اَنْکَرُوْا

न्यायवानों का एक गिरोह मेरा इन्कार नहीं करता और दुष्ट लोगों का एक गिरोह दुख दे रहा है और इन्कार करता है।

وَ قَدْ زَاحَمُوْا فِیْ کُلِّ اَمْرٍ اَرَدْتُّہٗ
فَاَیَّدَنِیْ رَبِّیْ فَفَرُّوْا وَ اَدْبَرُوْا

और हर बात जिसका मैंने इरादा किया उसको उन्होंने हस्तक्षेप किया तो ख़ुदा ने मेरी सहायता की तो वे भाग गए और मुंह फेर लिया।

وَ کَیْفَ عَصَوْا وَاللّٰہِ لَمْ یُدْرَ سِرُّھَا
وَ کَانَ سَنَا بَرْقِیْ مِنَ الشَّمْسِ اَظْھَرُ

और क्यों अवज्ञाकारी हो गए, ख़ुदा की क़सम उसका भेद कुछ मालूम न हुआ और मेरी बिजली का प्रकाश सूर्य से भी अधिक प्रकट था।

لَزِمْتُ اصْطِبَارًا عِنْدَ جَوْرِ لِئَامِهِمْ
وَ كَانَ الْاَقَارِبُ كَالْعَقَارِبِ تَأْبُرُ

मैंने उनके ज़ुल्म को सहन किया और उस पर सब्र किया और निकट संबंधी बिच्छुओं की तरह डंक मारते थे।

وَ يَعْلَمُ رَبِّيْ سِرَّ قَلْبِيْ وَسِرَّهُمْ
وَ كُلُّ خَفِيٍّ عِنْدَهُ مُتَحَضِّرُ

मेरा रब्ब मेरे भेद तथा उनके भेद को जानता है और प्रत्येक गुप्त बात उसके नजदीक उपस्थित है।

وَ لَيْسَ لِعَضْبِ الْحَقِّ فِي الدَّهْرِ كَاسِرًا
وَ مَنْ قَامَ لِلتَّكْسِيْرِ بَغْيًا فَيُكْسَرُ

और ख़ुदा की तलवार को कोई तोड़ने वाला नहीं तथा जो तोड़ना चाहे वह स्वयं टूट जाएगा।

وَ مَنْ ذَا يُعَادِيْنِيْ وَاِنِّيْ حَبِيْبُهُ
وَمَنْ ذَا يُرَادِيْنِيْ اِذِ اللّٰهُ يَنْصُرُ

और मेरा दुश्मन कौन हो सकता है जबकि ख़ुदा मुझे दोस्त रखता है और कौन पत्थर मारने के साथ मुझ से लड़ाई कर सकता है जबकि ख़ुदा मेरा सहायक है।

وَلَوْكُنْتُ كَذَّابًا كَمَا هُوَ زَعْمُهُمْ
قَدْ كُنْتُ مِنْ دَهْرٍ اَمُوْتُ وَاُقْبَرُ

और यदि मैं झूठा होता जैसा कि उनका विचार है तो मैं एक अवधि से मरा होता और क़ब्र में दाखिल होता।

يَظُنُّـوْنَ اَنِّیْ قَـدْ تَقَوَّلْـتُ عَامِـدًا
بِمَكْـرٍ وَّ بَعْـضُ الظَّـنِّ اِثْـمٌ وَّ مُنْكَـرُ

वे लोग सोचते हैं कि मैंने जानबूझ कर झूठ बना लिया और छल से झूठ बनाया और कुछ गुमान ऐसे गुनाह हैं कि शरीअत और बुद्धि को उनके स्वीकार करने से इन्कार है।

وَ كَيْـفَ وَاِنَّ اللّٰهَ اَبْـدَى بَـرَاءَ تِی
وَجَـآءَ بِآيَـاتٍ تَلُـوْحُ وَتَبْهَـرُ

और यह क्योंकर सही हो सकता है और ख़ुदा ने तो मेरा बरी होना प्रकट कर दिया और वे निशान दिखाए जो रोशन और स्पष्ट हैं।

وَ يَأْتِيْـكَ وَعْـدُ اللّٰهِ مِـنْ حَيْـثُ لَا تَـرَى
فَتَعْرِفُـهٗ عَـيْنٌ تُحَـدُّ وَ تُبْصِـرُ

और ख़ुदा का वादा इस तौर से तुझे पहुंचेगा कि तुझे ख़बर नहीं होगी। तो उसको वह आंख पहचानेगी जो उस दिन तीव्र और देखने वाली होगी।

اَمُكْفِـرِ مَهْـلًا بَعْـضَ هٰـذَا التَّهَكُّـمِ
وَخَـفْ قَهْـرَ رَبٍّ قَـالَ لَا تَقْـفُ فَاحْـذَرُ

हे मेरे काफ़िर कहने वाले इस ग़म और गुस्से को कुछ कम कर और उस ख़ुदा से डर जिसने कहा है कि لا تقف ما ليس لك بـه عِلـم (उस बात के पीछे न पड़ जिसका तुझे ज्ञान नहीं)

وَاِذْ قُلْـتُ اِنِّیْ مُسْـلِمٌ قُلْـتَ كَافِـرٌ
فَاَيْـنَ التُّقٰـى يَااَيُّهَـا الْمُتَهَـوِّرُ

औऱ जब मैंने कहा कि मैं मुसलमान हूं तू ने कहा कि कफ़िर है। तो तेरा तक़्वा कहाँ है हे दिलेरी करने वाले।

وَاِنْ كُنْتَ لَا تَخْشٰى فَقُلْ لَّسْتَ مُؤْمِنًا
وَّ يَأْتِىْ زَمَانٌ تُسْئَلَنَّ وَتُخْبَرُ

और यदि तू डरता नहीं है तो कह दे कि तू मोमिन नहीं तथा वह समय चला आता है कि तू पूछा जाएगा और अवगत किया जाएगा।

وَ اِنِّىْ تَرَكْتُ النَّفْسَ وَالْخَلْقَ وَالْهَوٰى
فَلَا السَّبُّ يُؤْذِيْنِىْ وَلَا الْمَدْحُ يُبْطِرُ

मैंने नफ़्स,मख़्लूक(सृष्टि) और लालच को छोड़ दिया है अब मुझे न गाली दुख देती है और न प्रशंसा गर्व तथा ख़ुशी पैदा करती है।

وَ كَمْ مِّنْ عَدُوٍّ كَانَ مِنْ اَكْبَرِ الْعِدَا
فَلَمَّا اَتَانِىْ صَاغِرًا صِرْتُ اَصْغُرُ

बहुत लोग हैं जो मेरे कट्टर दुश्मन थे, तो जब ऐसा दुश्मन विनम्रतापूर्वक मेरे पास आया तो मैंने उस से बढ़कर विनम्रता की।

وَ لَسْتُ بِذِىْ كُهْرُوْرَةٍ غَيْرَ اَنَّنِىْ
اِذَا زَادَ فُحْشًا ذُوْعِنَادٍ اُصَعِّرُ

और मैं वैर रखने वाला व्यक्ति नहीं हूं। हां इतना है कि जब कोई गाली देने में हद से बढ़ जाए तो मैं उससे मुहं फेर लेता हूं।

وَ لَا غِلَّ فِىْ قَلْبِىْ وَلَا مِنْ جَبَانَةٍ
وَ اُلْقِىْ حُسَامِىْ مُغْضِيًا وَّ اُشَهِّرُ

और न मेरे दिल में कुछ वैर है और न मैं कायर हूं मैं क्षमा करके अपनी तलवार फेंक दिया करता हूं परन्तु मुकाबले में खींच

भी लेता हूं।

فَـاِنْ تَبْغِــنِیْ فِیْ حَلْقَـةِ السِّــلْمِ تُلْفِـنِیْ
وَ اِن تَطْلُبَــنِّیْ فِی الْمَیَادِیْــنِ اَحْضُــرُ

अत: यदि तू मुझे सुलह करने को जमाअत में बुलाए तो वहीं पाएगा और यदि तू मुझे युद्ध के मैदान में ढूंढे तो मुझे वहीं देख लेगा।

وَاَرْسَــلَنِیْ رَبِّیْ لِاِصْــلَاحِ خَلْقِــهٖ
فَیَاصَــاحِ لَا تَنْطِــقْ هَــوًی وَّ تَصَــبَّرُ

और ख़ुदा ने मुझे भेजा है ताकि मैं सृष्टि का सुधार करूँ तो हे मेरे साहिब अंहकार के तौर पर बात न कर और सब्र से मेरे काम में विचार कर।

وَ اِنْ اَ كُ كَذَّابًــا فَكِـذْبِیْ یُبِیْــدُنِیْ
وَ اِنْ اَ كُ مِــنْ رَّبِّیْ فَمَالَــكَ تَهْجُــرُ

और यदि मैं झूठा हूं तो मेरा झूठ मुझे मार देगा और यदि मैं ख़ुदा की ओर से हूं तो तू क्यों बकवास करता है।

فَـذَرْنِیْ وَ رَبِّیْ وَانْتَظِـرْ سَـیْفَ حُكْمِـهٖ
لِیَقْطَـعَ رَأْسِیْ اَوْ قَفَـا مَــنْ یُّكَفِّــرُ

तो मुझे मेरे ख़ुदा के साथ छोड़ दे और उसके आदेश की तलवार की प्रतीक्षा कर ताकि वह मेरा सर काटे या उसका जो मुझे काफ़िर कहता है।

تَحَــامَ قِتَــالِیْ وَاجْتَنِــبْ مَاصَنَعْتَــهٗ
وَ اِنَّــا اِذَا جُلْنَــا فَاِنَّــكَ مُدْبِــرُ

मेरे युद्ध से तू बच और अपने दुष्कर्मों से अलग हो जा और

जब हम मैदान में आए तो तू भाग जाएगा।

اَرَی الصَّالِحِیْنَ یُوَفَّقُوْنَ لِطَاعَتِیْ
وَ اَمَّا الْغَوِیُّ فَفِیالضَّلَالَۃِ یُقْبَرُ

मैं नेक लोगों को देखता हूं कि वे मेरी फरमाबरदारी के लिए सामर्थ्य दिए जाते हैं, परन्तु जो अनादि गुमराह है वह गुमराही में क़ब्र में जाएगा।

وَ ذَالِکَ خَتْمُ اللّٰہِ مِنْ بَدْوِ فِطْرَۃٍ
وَاِنَّ نُقُوْشَ اللّٰہِ لَا تَتَغَیَّرُ

और यह पैदायश के प्रारंभ से ख़ुदा की मुहर है और ख़ुदा के नक्श परिवर्तित नहीं हो सकते।

کَذَالِکَ نُوْرُ الرُّشْدِ مَایُخْطِیئُ الْفَتٰی
وَ کُلُّ نَخِیْلٍ لَّا مَحَالَۃَ تُثْمِرُ

इसी प्रकार जिस स्वभाव में सदमार्ग का प्रकाश है वह उस मर्द से पृथक नहीं होता और प्रत्येक खजूर अन्ततः फल लाती है।

وَ مَنْ یَّکُ ذَا فَضْلٍ فَیُدْرِکُ مَقَامَہٗ
وَ لَوْ فِیْ شَبَابٍ اَوْ بِوَقْتٍ یُّعَمَّرُ

तो जिसके साथ ख़ुदा की कृपा (फज़्ल)है वह अपने मुकाम को पा लेगा, यद्यपि जवानी में या उस समय कि जब वह बूढ़ा हो जाए।

وَ لَا یَھْلِکُ الْعَبْدُ السَّعِیْدُ جِبِلَّۃً
اِذَا مَاعَمِیَ یَوْمًا بِآخَرَ یَنْظُرُ

और जिसकी फितरत (प्रकृति) में सौभाग्य है वह तबाह नहीं होगा। यदि आज अंधा है तो कल देखने लगेगा।

وَ لِلْغَيِّ آثَارٌ وَّ لِلرُّشْدِ مِثْلُهَا
فَقُوْمُوْا لِتَفْتِيْشِ الْعَلَامَاتِ وَانْظُرُوْا

और गुमराही के लिए निशान हैं और ऐसा ही सदमार्ग के लिए भी। तो तुम लक्षणों को छान-बीन करो और खूब देखो।

اَرَى الظُّلْمَ يَبْقٰى فِى الْخَرَاطِيْمِ وَسْمُهٗ
وَ يُنْصَرُ مَظْلُوْمٌ ضَعِيْفٌ مُّخَسَّرُ

मैं देखता हूं कि मनुष्य की नाक में ज़ुल्म के लक्षण शेष रह जातें हैं और अत्याचार-पीड़ित को अन्ततः सहायता दी जाती है जो कमज़ोरी और हानि वाला होता है।

وَ قَدْ اَعْرَضُوْا عَنْ كُلِّ خَيْرٍ بِغَيْظِهِمْ
كَاَنِّيْ اَرَاهُمْ مِّثْلَ نَارٍ تُسَعَّرُ

उन्होंने प्रत्येक नेकी से जो मैंने प्रस्तुत की क्रोधपूर्वक मुंह फेर लिया, जैसे मैं एक भड़कती हुई आग की तरह उनको देख रहा हूं।

وَ يُنْصَرُ مَظْلُوْمٌ بِاٰخِرِ اَمْرِهٖ
وَلَا سِيَّمَا عَبْدٌ مِّنَ اللّٰهِ مُنْذِرُ

और अत्याचार पीड़ित अन्ततः मदद दिया जाता है विशेष तौर पर वह बन्दा जो ख़ुदा की ओर से है।

اِذَا مَا بَكَى الْمَعْصُوْمُ تَبْكِى الْمَلَائِكُ
فَكَمْ مِّنْ بِلَادٍ تُهْلَكَنَّ وَ تُجْذَرُ

जब मासूम रोता है तो उसके साथ फ़रिश्ते रोते हैं तो बहुत सी बस्तियां तबाह की जाती हैं और उजाड़ी जाती हैं

اِذَا ذَرَفَتْ عَيْنَا تَقِيٍّ بِغُمَّةٍ
فَرَجٌ كَرْبٌ مَّسَّهٗ اَوْ يُبَشَّرُ

जब एक संयमी की आंखे आंसू जारी करती हैं एक ग़म के कारण तो वह बेचैनी उससे दूर की जाती है या खुशखबरी दी जाती है।

عَلَى الاَرْضِ قَوْمٌ كَالسُّيُوْفِ دُعَائُهُمْ
فَمَنْ مَّسَّ هٰذَا السَّيْفَ بِالشَّرِّ يُبْتَرُ

पृथ्वी पर एक क़ौम है जो तलवारों की तरह उनकी दुआ है। अत: जो व्यक्ति उस तलवार को छू जाता है वह काटा जाता है।

تَرَى كَيْفَ نَرْقٰى وَالْحَوَادِثُ جُمَّةٌ
وَيُهْلَكُ مَنْ يَّبْغِىْ هَلَاكِىْ وَ يَمْكُرُ

तू देखता है कि हम क्योंकर उन्नति कर रहे हैं हालांकि दुर्घटनाएं चरों और से एकत्र हैं और जो व्यक्ति मेरी तबाही चाहता है और छल करता है वह तबाह किया जाता है।

لَنَا كُلَّ آنٍ مِّنْ مُّعِيْنٍ حِمَايَةٌ
نُغَادِرُ صَرْعٰى مَاكِرِيْنَ وَ نَظْفَرُ

हमारे लिए सहायता करने वाले की ओर से सहायता है हम छल करने वालों को गिरा देते हैं और विजयी होते हैं।

اَيَا شَاتِمًا لَّا شَاتِمَ الْيَوْمَ مِثْلَكُمْ
وَمَا اِنْ اَرَى فِىْ كَفِّكُمْ مَايُبْطِرُ

(अली हायरीशिया के प्रहार के उत्तर में)

हे गाली देने वाले। आज तुम जैसा गाली देने वाला कोई नहीं और मैं तुम्हारे हाथ में वह चीज़ नहीं देखता जो तुम्हे इस अंधकार पर तत्पर करती है।

تَسُبُّ وَمَا اَدْرِىْ عَلٰى مَاتَسُبُّنِىْ
ااَذَاكَ قَوْلِىْ فِىْ حُسَيْنٍ فَتُوْغَر

और तू मुझे गाली देता है तथा मैं नहीं जानता कि तू क्यों मुझे गाली देता है। क्या इमाम हुसैन के कारण तुम दुख पहुंचा तो तू कुपित हुआ।

اَتَحْسَبُهٗ اَتْقَى الرِّجَالِ وَ خَيْرَهُمْ
فَمَا نَالَكُمْ مِّنْ خَيْرِهٖ يَا مُعْذِرُ

क्या तू उसको सम्पूर्ण संसार से अधिक संयमी समझता है और यह तो बताओ कि इस से तुम्हे धार्मिक लाभ क्या हुआ हे अतिश्योक्ति करने वाले।

اَرَاكُمْ كَذَاتِ الْحَيْضِ لَا مِثْلَ طَاهِرٍ
تَطِيْبُ وَمِنْ مَّاءِ الْعَذَابَةِ تَطْهَرُ

मैं तुम्हे हैज़ वाली औरत की तरह देखता हूं वह खुशबू लगाए हो हैज़ (मासिक धर्म) के बाद गर्भाशय से पानी आना भी समाप्त होकर उससे भी पवित्र हो चुकी है।

حَسِبْتُمْ حُسَيْنًا اَكْرَمَ النَّاسِ فِي الْوَرٰى
وَاَفْضَلَ مَافَطَرَ الْقَدِيْرُ وَ يَفْطُرُ

तुमने हुसैन को सम्पूर्ण सृष्टि से उत्तम समझ लिया है और उन समस्त लोगों से अधिक श्रेष्ठ समझा है जो ख़ुदा ने पैदा किए।

كَاَنَّ امْرَءًا فِي النَّاسِ مَا كَانَ غَيْرُهٗ
وَ طَهَّرَهُ الرَّحْمَانُ وَالْغَيْرُ يَفْجُرُ

जैसे लोगों में वही एक आदमी था और उसको ख़ुदा ने पवित्र किया तथा अन्य अपवित्र हैं।

وَ هٰذَا هُوَ الْقَوْلُ الَّذِيْ فِي ابْنِ مَرْيَمٍ
يَقُوْلُ النَّصَارٰى اَيُّهَا الْمُتَنَصِّرُ

और यह तो वही कथन है जो हज़रत ईसा के बारे में ईसाई कहा करते हैं। हे ईसाइयों से सदृश।

فَيَاعَجَبًا كَيْفَ الْقُلُوْبُ تَشَابَهَتْ
فَكَادَ السَّمَا مِنْ قَوْلِكُمْ تَتَفَطَّرُ

तो आश्चर्य है कि दिल कैसे समान हो गए। तो निकट है कि आकाश उनकी बातों से फट जाएं।

اَتُطْرِئُ عَبْدًا مِّثْلَ عِيْسٰى وَتَنْحِتُ
لَهُ رُتْبَةً كَالْاَنْبِيَاءِ وَ تَهْذُرُ

क्या तू ईसा की तरह एक बन्दे की हद से बढ़कर प्रशंसा करता है और उसके लिए नबियों का पद ठहराता है।

اَلَا لَيْتَ شِعْرِيْ هَلْ رَأَيْتَ مَقَامَهُ
كَمِثْلِ بَصِيْرٍ اَوْ عَلَى الظَّنِّ تَعْمُرُ

काश तुझे समझ होती, क्या तूने उसका मुक़ाम देख लिया है या सारी इमारत गुमान पर है।

اَ تُعْلِيْهِ اِطْرَاءً وَّ كِذْبًا وَّ فِرْيَةً
اَتَسْقِيْهِ كَأْسًا مَاسَقَاهُ الْمُقَدِّرُ

क्या तू उसको केवल झूठ और झूठ गढ़ने से बुलन्द करना चाहता है क्या तू उसको वह प्याला पिलाता है जो ख़ुदा ने उसको नहीं पिलाया।

تَكَادُ السَّمٰوَاتُ الْعُلٰى مِنْ كَلَامِكُمْ
تَفَطَّرْنَ لَوْلَا وَقْتُهَا مُتَقَرِّرُ

निकट है कि आकाश तुम्हारे कलाम से फट जाएं यदि उनके

फटने का समय निर्धारित न हो।

اَكَانَ حُسَيْنٌ اَفْضَلَ الرُّسْلِ كُلِّهِمْ
اَكَانَ شَفِيْعَ الْاَنْبِيَاءِ وَ مُؤْثَرُ

क्या हुसैन समस्त नबियों से बढ़कर था। क्या वही नबियों का शफ़ी और सबसे चुना हुआ था।

اَ لَا لَعْنَةُ اللّٰهِ الْغَيُوْرِ عَلَى الَّذِىْ
يَمِيْنُ بِاِطْرَاءٍ وَّ لَا يَتَبَصَّرُ

खबरदार हो कि स्वाभिमानी ख़ुदा की लानत उस व्यक्ति पर है जो बढ़ा चढ़ाकर बातें करके झूठ बोलता है और नहीं देखता।

وَاَمَّا مَقَامِىْ فَاعْلَمُوْا اَنَّ خَالِقِىْ
يُحَمِّدُنِىْ مِنْ عَرْشِهٖ وَ يُوَقِّرُ

और मेरा मुक़ाम यह है कि मेरा ख़ुदा अर्श पर से मेरी प्रशंसा करता है तथा सम्मान देता है।

لَنَا جَنَّةٌ سُبْلُ الْهُدٰى اَزْهَارُهَا
نَسِيْمُ الصَّبَا مِنْ شَأْنِهَا تَتَحَيَّرُ

हमारे लिए एक स्वर्ग है कि हिदायत के मार्ग उसके फूल हैं और सुबह की हवा उसकी शान से हैरान हो रही है।

تَكَدَّرَ مَاءُ السَّابِقِيْنَ وَ عَيْنُنَا
اِلٰى آخِرِ الْاَيَّامِ لَا تَتَكَدَّرُ

पहले लोगों का पानी गन्दा हो गया और हमारा पानी अन्तिम युग तक गन्दा नहीं होगा।

رَأَيْنَا وَاَنْتُمْ تَذْكُرُوْنَ رُوَاتَكُمْ
وَهَلْ مِنْ نُّقُوْلٍ عِنْدَ عَيْنٍ تُبَصَّرُ

हमने देख लिया और तुम अपने रावियों का वर्णन करते हो और क्या किस्से देखने के मुकाबले पर कुछ चीज़ हैं?

وَ شَتَّانَ مَابَيْنِیْ وَ بَيْنَ حُسَيْنِكُمْ
فَاِنِّیْ اُؤَيَّدُ كُلَّ اٰنٍ وَّ اُنْصَرُ

और मुझ में तथा तुम्हारे हुसैन में बहुत अन्तर है क्योंकि मुझे तो हर समय ख़ुदा की सहायता और मदद मिल रही है।

وَاَمَّا حُسَيْنٌ فَاذْكُرُوْا دَشْتَ كَرْبَلَا
اِلٰی هٰذِهِ الْاَيَّامِ تَبْكُوْنَ فَانْظُرُوْا

परन्तु हुसैन तुम करबला के जंगल को याद कर लो अब तक तुम रोते हो तो सोच लो।

وَ اِنِّیْ بِفَضْلِ اللّٰهِ فِیْ حُجْرِ خَالِقِیْ
اُرَبّٰی وَ اُعْصَمُ مِنْ لِّيَامٍ تَنَمَّرُوْا

मैं ख़ुदा के फ़ज़्ल से उसकी मेहरबानी के आंचल में हूं और पोषण पा रहा हूं और हमेशा कमीनों के आक्रमण से जो चीते के रूप में हैं बचाया जाता हूं।

وَاِنْ يَّأْتِنِی الْاَعْدَاءُ بِالسَّيْفِ وَالْقَنَا
فَوَاللّٰهِ اِنِّیْ اُحْفَظَنَّ وَ اَظْفَرُ

और यदि शत्रु तलवारों तथा भालों के साथ मेरे पास आएं तो ख़ुदा की क़सम मैं बचाया जाऊंगा और मुझे विजय मिलेगी।

وَ اِنْ يُّلْقِنِیْ خَصْمِیْ بِنَارٍ مُّذِيْبَةٍ
تَجِدْنِیْ سَلِيْمًا وَّ الْعَدُوُّ يُدَمَّرُ

और यदि मेरा शत्रु एक पिघलाने वाली आग में मुझे डाल दे

तो मुझे सुरक्षित पाएगा और शत्रु तबाह होगा।

وَ اَوْعَدَنِیْ قَوْمٌ لِّقَتْلِیْ مِنَ الْعِدَا
فَاَدْرَکَهُمْ قَهْرُ الْمَلِیْکِ وَخُسِّرُوْا

कुछ शत्रुओं ने मुझे क़त्ल करने के लिए वादा किया तो ख़ुदा के प्रकोप ने उनको पकड़ लिया और वे घाटा पाने वाले हो गए।

کَذٰالِکَ تَبْغِیْ قَهْرَ رَبٍّ مُّحَاسِبٍ
وَمَا اِنْ أَرَی فِیْکَ الْکَلَامَ یُؤَثِّرُ

इसी प्रकार तू भी ख़ुदाई हिसाब लेने वाले से प्रकोप मांग रहा है और मैं नहीं देखता कि तुझ में कलाम असर करे।

بُعِثْتُ مِنَ اللّٰهِ الرَّحِیْمِ لِخَلْقِهٖ
لِاُنْذِرَ قَوْمًا غَافِلِیْنَ وَاُخْبِرِ

मैं दयालु ख़ुदा की तरफ से उसकी सृष्टि के लिए भेजा गया हूं ताकि मैं लापरवाहों को होशियार करूँ और उनको ख़बर दूं।

وَ ذٰلِکَ مِنْ فَضْلِ الْکَرِیْمِ وَلُطْفِهٖ
عَلٰی کُلِّ مَنْ یَّبْغِی الصَّلَاحَ وَیَشْکُرُ

और मेरा आना कृपालु ख़ुदा का फ़ज़्ल(कृपा) है और उसकी कृपा उन सब लोगों पर है जो सुधार चाहते हैं और धन्यवाद करते हैं।

اَرَی النَّاسَ یَبْغُوْنَ الْجِنَانَ نَعِیْمَهَا
وَ اَحْلٰی اَطَایِبْهَاالَّتِیْ لَا تُحْصَرُ

मैं लोगों को देखता हूं कि स्वर्ग और उसकी नेमतों के अभिलाषी हैं तथा स्वर्ग का वे आनन्द मांगते हैं जो उच्चतर असीमित और अपार हैं।

وَ أَبْغِیْ مِنَ الْمَوْلٰی نَعِیْمًا یَّسُرُّنِیْ
وَمَا هُوَ اِلَّا فِیْ صَلِیْبٍ یُّکَسَّرُ

और मेरी इच्छा एक मनोकामना है जिस पर मेरी खुशी निर्भर है और वह इच्छा यह है कि किसी प्रकार सलीब टूट जाए।

وَ ذٰلِكَ فِرْدَوْسِیْ وَ خُلْدِیْ وَ جَنَّتِیْ
فَاَدْخِلْنِ رَبِّیْ جَنَّتِیْ اَنَا اَضْجَرُ

यही मेरा फिरदोस है,यही मेरा स्वर्ग है, यही मेरी जन्नत है। अत: हे मेरे ख़ुदा मेरे स्वर्ग में मुझे दाखिल कर कि मैं बेचैन हूं।

وَ اِنِّیْ وَرِثْتُ الْمَالَ مَالَ مُحَمَّد
فَمَا اَنَا اِلَّا آلُهُ الْمُتَخَیَّرُ

मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माल का वारिस बनाया गया हूं। मैं उसकी चुनी हुई सन्तान हूं जिसको विरसा पहुंच गया।

وَ کَیْفَ وَرِثْتُ و لَسْتُ مِنْ اَبْنَاءِهٖ
فَفَکِّرْ وَهَلْ فِیْ حِزْبِکُمْ مُّتَفَکِّرُ

और मैं क्योंकर उसका वारिस बनाया गया जबकि मैं उसकी सन्तान में से नहीं हूं तो यहां विचार कर क्या तुम में कोई भी विचार करने वाला नहीं।

اَ تَزْعَمُ اَنَّ رَسُوْلَنَا سَیِّدَ الْوَرٰ ی
عَلٰی زَعْمِ شَانِیْهِ تُوُفِّیَ اَبْتَرُ

क्या तू गुमान करता है कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नि:सन्तान होने की हालात में मृत्यु पाई जैसा कि गाली देने वाले दुश्मन का विचार है।

فَــلَا وَالَّذِیْ خَلَــقَ السَّـــمَاءَ لِاَجْــلِهٖ
لَهٗ مِثْلُنَــا وُلْدٌ اِلٰی یَــوْمٍ یُحْشَــر

मुझे उसकी क़सम जिसने आकाश बनाया कि ऐसा नहीं है बल्कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए मेरी तरह और भी बेटे हैं तथा क़यामत तक होंगे।

وَاِنَّــا وَرِثْنَــا مِثْــلَ وُلْدٍ مَتَاعَــهٗ
فَــاَیُّ ثُبُــوْتٍ بَعْــدَ ذٰلِــكَ یُحْضَــر

और हमने सन्तान की तरह उसकी विरासत पाई। तो इस से बढ़कर और कौन सा सबूत है जो प्रस्तुत किया जाए?

لَهٗ خَسَــفَ الْقَمَــرُ الْمُنِــیْرُ وَاِنَّ لِیْ
غَسَــا الْقَمَــرَانِ الْمُشْــرِقَانِ اَ تُنْكِــر

उसके लिए चन्द्र-ग्रहण का निशान प्रकट हुआ और मेरे लिए चांद एवं सूर्य दोनों का। अब क्या तू इन्कार करेगा।

وَ کَانَ کَلَامٌ مُعْجِزٌ آیَــةً لَّهٗ
کَذٰلِــكَ لِیْ قَــوْلِیْ عَــلَی الْــکُلِّ یَبْهَــرُ

उसके चमत्कारों में से चमत्कार पूर्ण कलाम भी था। इसी प्रकार मुझे वह कलाम दिया गया है जो सब पर विजयी है।

اِذَا الْقَــوْمُ قَالُــوْا یَدَّعِــی الْــوَحْیَ عَامِــدًا
عَجِبْــتُ فَــاِنِّیْ ظِــلُّ بَــدْرٍ یُنَــوِّرُ

जब क़ौम ने कहा कि यह तो जानबूझ कर वह्यी का दावा करता है। मैंने आश्चर्य किया कि मैं तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रतिबिम्ब हूं।

وَ اَنّٰی لِظِــلٍّ اَنْ یُّخَالِــفَ اَصْــلَهٗ
فَمَــا فِیْــهِ فِیْ وَجْهِــیْ یَلُــوْحُ وَیَزْهَــرُ

और छाया अपने मूल से विपरीत कैसे हो सकती है तो वह प्रकाश जो उसमें है वह मुझ में चमक रहा है।

وَاِنِّیْ لَذُوْنَسَبٍ کَاَصْلٍ اُطِیْعُہٗ
وَمِنْ طِیْنِہِ الْمَعْصُوْمِ طِیْنِیْ مُعَطَّر

और मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरह कुलीन हूं और उसकी पवित्र मिट्टी का मुझ में ख़मीर है।

کَفَی الْعَبْدَ تَقْوَی الْقَلْبِ عِنْدَ حَسِیْبِنَا
وَلَیْسَ لِنَسْبٍ ذُوْصَلَاحٍ مُعَیِّرُ

बन्दे को दिल का संयम पर्याप्त है और एक नेक व्यक्ति को इसलिए नहीं डांट सकते कि उसका वंश उच्चतंम नहीं।

وَلٰکِنْ قَضٰی رَبُّ السَّمَا لِاَئِمَّۃٍ
لَھُمْ نَسَبٌ کَیْلَا یَھِیْجَ التَّنَفُّرُ

परन्तु ख़ुदा ने इमामों के लिए चाहा कि वे कुलीन हों ताकि लोगों को उनके वंश का कमी की कल्पना करके घृणा पैदा न हो।

وَمَنْ کَانَ ذَا نَسَبٍ کَرِیْمٍ وَلَمْ یَکُنْ
لَہٗ حَسَبٌ فَھُوَ الدَّنِیُّ الْمُحَقَّرُ

और जो व्यक्ति अच्छा वंश रखता है परन्तु उसमें व्यक्तिगत विशेषताएं कुछ नहीं वह कमीना और तुच्छ है।

وَلِلّٰہِ حَمْدٌ ثُمَّ حَمْدٌ فَاِنَّنَا
جَمَعْنَاھُمَا حَقًّا فَلِلّٰہِ نَشْکُرُ

और प्रशंसा ख़ुदा के लिए है और फिर प्रशंसा है कि हमने अपने अन्दर वंश एवं प्रतिष्ठा दोनों को इकट्ठा किया है। अतः हम

ख़ुदा का धन्यवाद करते हैं।

كَذٰلِكَ سُنَنُ اللّٰهِ فِيْ أَنْبِيَاءِهِ
جَرَتْ مِنْ قَدِيْمِ الدَّهْرِ فَاخْشَوْا وَ اَبْصِرُوْا

ख़ुदा की सुन्नत इसी प्रकार उसके नबियों में है जो प्राचीन काल से जारी है तो डरो और देखो।

وَاَمَّا الَّذِيْ مَاجَاءَ مِثْلَ أَئِمَّةٍ
فَلَيْسَ لِذَالِكَ شَرْطُ نَسَبٍ فَاَبْشِرُوْا

परन्तु जो व्यक्ति इमामों में से नहीं है उसके लिए वंश की आवश्यकता नहीं तो खुशी मनाओ।

وَمَا جِئْتُ اِلَّا مِثْلَ مَطَرٍ وَّ دِيْمَةٍ
دَرُوْرٍ وَّ اَرْوَيْتُ الْبِلَادَ وَاَعْمُرُ

और मैं वर्षा के समान आया हूं जो तीव्रता और अहिस्ता से बरसती है और उसका पानी जारी रहता है और मैंने शहरों को सैराब कर दिया तथा आबाद कर रहा हूं।

وَ كَمْ مِّنْ اُنَاسٍ بَايَعُوْنِيْ بِصِدْقِهِمْ
وَمَا خَالَفُوْا قَوْلِيْ وَمَا هُمْ تَذَمَّرُوْا

और बहुत से लोग हैं जिन्होंने मुझ से बैअत की और न उन्होंने मेरी बात का विरोध किया और न वे अन्तः कुटिल हो गए।

فَقَرَّبْتُ قُرْبَانًا يُّنَجِّيْ رِقَابَهُمْ
وَ يَعْلَمُ رَبِّيْ مَانَحَرْتُ وَاَنْحَرُ

तो मैंने ऐसी क़ुर्बानी की जिस से मैंने उनकी गर्दनों को छुड़ा दिया और मेरा ख़ुदा जानता है कि मैंने क्या क़ुर्बानी की और क्या

कर रहा हूं।

وَلِیْ عِــزَّۃٌ فِیْ حَضْــرَۃِ اللّٰہِ خَالِقِــیْ
فَطُــوْبٰی لِقَــوْمٍ طَاوَعُــوْنِیْ واٰثَــرُوْا

मुझे ख़ुदा के यहां जो मेरा स्रष्टा है एक सम्मान है। तो खुशी हो उस क़ौम के लिए जिन्होंने मेरी आज्ञा का पालन किया और मुझे अपनाया।

أَ تَی الْعِلْــمُ بِالْمُتَقَدِّمِــیْنَ وَبَعْدَھُــمْ
تَــلَافٰی جَمِیْــعَ الْفَائِتَــاتِ مُؤَخَّــر

ज्ञान पहले लोगों के द्वारा आया और उनके बाद जो कुछ उनके युगों में रह गया था उसके पीछे आने वाले ने क्षतिपूर्ति की।

وَمَــا اَ نَــا اِلَّا مِثْــلَ مَــالِ تِجَــارَۃٍ
فَمَــنْ رَدَّنِیْ کِــبْرًا اُبِیْــدُوْا وَ خُسِّــرُوْا

मैं एक व्यापार के माल के समान हूं तो जिन लोगों ने मुझे अस्वीकार किया वे तबाही और घाटें में रहे।

وَمَــا ھَلَــکَ الاَشْــرَارُ اِلَّا لِبُخْلِــھِمْ
وَمَــا فَھِمُــوْا اَقْوَالَنَــا وَتَنَمَّــرُوْا

और बुरे लोग तो केवल अपनी कंजूसी से तबाह हुए और उन्होंने हमारी बातों को न समझा और चीतापन प्रकट किया।

قُلُــوْبٌ تُضَاھِــی اَجْمَــۃً مَوْحُوْشَــۃً
فَمِــنْ شَــکْلِ اِنْــسٍ وَحْشُــھَا تَتَنَفَّــرُ

कुछ दिल ऐसे हैं जो उस वन के समान हैं जिसमें जंगली जानवर रहते हैं। अत: इन्सानों की शक्ल देखकर उसके वहशी

(जानवर) भागते हैं।

كَبِيْرُ أُنَاسٍ شَرُّهُمْ فِيْ زَمَانِنَا
وَاَعْقَلُهُمْ شَيْطَانُ قَوْمٍ وَاَمْكَرُ

बड़ा महान हमारे युग में वह है जो बड़ा बुरा है और बड़ा बुद्धिमान वह है जो समस्त क़ौम में से एक शैतान है और सर्वाधिक छल करने वाला है।

فَمَنْ يَّتَّقِيْ مِنْهُمْ وَمَنْ كَانَ خَائِفًا
اُقَلِّبُ طَرْفِيْ كُلَّ آنٍ وَّاَنْظُرُ

तो कौन उनमें से डरता है और कौन भयभीत है मैं अपनी आंख हर तरफ फेर रहा हूं और देख रहा हूं।

وَمَنْ كَانَ فِيْهِمْ ذُوْصَلَاحٍ كَنَادِرٍ
فَكَانَ غَرِيْبًا بَيْنَهُمْ لَا يُوَقَّرُ

और उनमें से जो व्यक्ति कुछ योग्यता रखता होगा तो वह उनमें एक ग़रीब होगा उसका कोई समान नहीं होता।

وَجَاءَ كَرَهْطٍ حَوْلَهُمْ عَامَةُ الْوَرٰى
شَطَائِبُ شَتّٰى مِثْلَ عُمْيٍ فَاَنْكَرُوْا

और समान्य लोग एक गिरोह की तरह उनके पास आ गए भिन्न-भिन्न गिरोह जो अंधों की तरह थे तो इन्कार किया।

اَنَاخُوْا بِوَادٍ مَا رَأٰى وَجْهَ خُضْرَةٍ
وَهَلْ عِنْدَ اَرْضٍ جَدْبَةٍ مَّا يُخَضِّرُ

ऐसे जंगल में ठहरे जिसमें सब्जी का नाम-व-निशान न था और क्या वनस्पति रहित भूमि में कोई सब्जी पैदा हो सकता है।

فَاَبْکِیْ عَلٰی تِلْکَ الثَّلٰثَۃِ بَعْدَھُمْ
عَلٰی زُمْرَۃٍ یَقْفُوْنَھُمْ اَ تَحَسَّرُ

तो मैं उन तीनों अर्थात् सनाउल्लाह,मेहरअली और अली हायरी पर रोता हूं तथा उस गिरोह पर जो उन के अनुयायी हैं अफसोस करता हूं।

وَمَا اِنْ اَرٰی فِیْھِمْ مَّخَافَۃَ رَبِّھِمْ
شُعُوْبُ لِئَامٍ بِالْمَلَاھِیْ تَمَوَّرُوْا

और मैं उन में उनके रब्ब का कुछ भय नहीं देखता बदकिस्मत गिरोह खेल कूद के साथ गर्व कर रहे हैं।

وَمَاقُمْتُ فِیْ ھٰذَا الْمَقَامِ بِمُنْیَتِیْ
وَیَعْلَمُ رَبِّیْ سِرَّ قَلْبِیْ وَیَشْعُرُ

और मैं इस मुक़ाम में अपनी इच्छा से खड़ा नहीं हुआ मेरा ख़ुदा मेरे दिल के भेद को जानता है।

وَ کُنْتُ امْرَءًا اَبْغِیْ الْخُمُوْلَ مِنَ الصِّبَا
مَتٰی یَأْتِنِیْ مِنْ زَاءِرِیْنَ اُصَعِّرُ

और मैं एक आदमी था जो बचपन से एकान्तवास को दोस्त रखता था। जब कोई मिलने वाला मेरे पास आता तो मैं किनारे हो जाता।

فَاَخْرَجَنِیْ مِنْ حُجْرَتِیْ حُکْمُ مَالِکِیْ
فَقُمْتُ وَلَمْ اُعْرِضْ وَلَمْ اَ تَعَذَّرُ

अतः मुझे कोठरी में से मेरे मालिक के आदेश ने निकाला तो मैं उठा न मैंने मुह फेरा न विलम्ब किया।

وَاِنِّیْ مِنَ الْمَوْلَی الْکَرِیْمِ وَاِنَّہ
یُحَافِظُنِیْ فِیْ کُلِّ دَشْتٍ وَیَخْفِرُ

और मैं ख़ुदा की ओर से हूं तथा ख़ुदा प्रत्येक जंगल मेरी सुरक्षा तथा मार्ग-दर्शन करता है।

فَکِیْدُوْا جَمِیْعَ الْکَیْدِ یَا اَیُّھَا الْعِدَا
فَیَعْصِمُنِیْ رَبِّیْ وَھٰذَا مُقَدَّرُ

हे शत्रुओं। तुम हर प्रकार का छल मुझ से करो तो मेरा ख़ुदा मुझे बचाएगा और यही निश्चित है।

مَضٰی وَقْتُ ضَرْبِ الْمُرْھِفَاتِ وَ دَفْوُھَا
وَاِنَّا بِبُرْھَانٍ مِّنَ اللّٰہِ نَنْحَرُ

वह समय गुज़र गया जबकि तलवारें चलाई जाती थीं और हम ख़ुदा के प्रमाण से इन्कारियों को ज़िब्ह करते हैं।

وَلِلّٰہِ سُلْطَانٌ وَّحُکْمٌ وَّشَوْکَۃٌ
وَنَحْنُ کُمَاۃٌ بِالْاِشَارَۃِ نَحْضُرُ

और ख़ुदा के लिए कब्ज़ा आदेश और वैभव है। और हम वह सवार हैं जो इशारे पर उपस्थित होतें हैं।

اِذَا مَا رَأَیْنَا حَاءِرًا اَجْھَلَ الْوَرٰی
طَوَیْنَا کِتَابَ الْبَحْثِ وَالْاٰیُ اَظْھَرُ

और जब मैंने अली हायरी को जो सब से अधिक मूर्ख है देखा निशान जो हम प्रस्तुत करते हैं वे स्पष्ट है फिर बहस की क्या आवश्यकता।

وَمَا کُنْتُ بِالصَّمْتِ الْمُخَجِّلِ رَاضِیًا
وَلٰکِنْ رَّأَیْتُ الْقَوْمَ لَمْ یَتَبَصَّرُ

और मैं शर्मिन्दा करने वाली खामोशी पर सहमत न था परन्तु मैंने लोगों को देखा कि वे कुछ सोचते नहीं।

اُخَاطِبُ جَهْرًا لَااَقُوْلُ كَخَافِتٍ
فَاِنِّیْ مِنَ الرَّحْمٰنِ اُوْحٰی وَاُخْبَرُ

मैं खुले तौर पर सम्बोधित करता हूं न कि गुप्त कथन से क्योंकि मैं ख़ुदा की तरफ से वह्यी पाता हूं तथा ख़बर दिया जाता हूं।

اَيَا عَابِدَ الْحَسَنَيْنِ اِيَّاكَ وَاللَّظٰى
وَمَالَكَ تَخْتَارُ السَّعِيْرَ وَ تَشْعُرُ

हे हसन और हुसैन की इबादत करने वाले नर्क की आग से बच। तुझे क्या हो गया कि नर्क को अपनाता है और जानता है।

وَاَنْتَ امْرَئٌ مِّنْ اَهْلِ سَبٍّ وَّاِنَّنَا
رِجَالٌ لِاِظْهَارِ الْحَقَائِقِ نُؤْمَرُ

और तू वह आदमी है जो गालियां देता है और हम लोग वह आदमी हैं जो वास्तविकताओं को प्रकट करने के लिए आदेश दिए जाते हैं।

سَبَبْتَ وَاِنَّ السَّبَّ مِنْ سُنَنِ دِيْنِكُمْ
لِكُلِّ أُنَاسٍ سُنَّةٌ لَّا تُغَيَّرُ

तूने गालियां दी और गालियां देना तुम्हारा आचरण है तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक आचरण है जो नहीं बदलता।

تَرٰی سُقْمَ نَفْسِیْ مَا تَرٰی آیَ رَبِّنَا
كَاَنَّكَ غُوْلٌ فَاقِدُ الْعَيْنِ اَعْوَرُ

तू मेरे नफ़्स का दोष देखता है और ख़ुदा के निशान नहीं देखता। जैसे कि तू एक देव है खोई आंख वाला काना।

وَمَا اَفْلَحَ الْعُمْرَانِ مِنْ ضَرْبِ لَعْنِكُمْ
فَمِثْلِیْ لِهٰذَا اللَّعْنِ اَحْرٰی وَاَجْدَرُ

और हज़रत अबू बकर और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तुम से छुटकारा नहीं पाया। तो मेरे जैसा आदमी इस लानत के सर्वाधिक योग्य है।

رُوَيْدَكَ دَأْبَ اللَّعْنِ هٰذَا وَصِيَّتِیْ
وَ بَعْضُ الْوَصَايَا مِنْ مَّنَايَا تُذَكَّرُ

लानत करने की आदत को छोड़ दे यह मेरी वसीयत है और कुछ वसीयतें मौतों के समय याद आंएगी।

وَيَأْتِیْ زَمَانٌ يَسْتَبِيْنُ خِفَائُ نَا
فَمَالَكَ لَا تَخْشٰی وَ لَا تَتَبَصَّرُ

और वह समय आता है कि हमारा छिपाव प्रकट हो जाएगा तो मुझे क्या हो गया कि न तू डरता है और न सच को पहचानता है।

وَلَا تَذْكُرُوا الْاَخْبَارَ عِنْدِیْ فَاِنَّهَا
كَجَلْدَةِ بَيْتِ الْعَنْكَبُوْتِ تُكَسَّرُ

और मेरे पास केवल खबरों का कुछ वर्णन मत करो कि वे मकड़ी के घर की तरह तोड़ी जा सकती हैं

وَ اَنّٰی لِاَخْبَارٍ مُّقَامٌ وَّمَوْقِفٌ
لَدٰی شَأْنِ فُرْقَانٍ عَظِيْمٍ مُعَزَّرُ

और खबरें इस किताब के सामने कहां ठहर सकती हैं जो कि ख़ुदा का महान कलाम पवित्र क़ुर्आन है।

فَلَا تَقْفُ اَمْرًا لَسْتَ تَعْرِفُ سِرَّهٗ
فَتُسْأَلُ بَعْدَ الْمَوْتِ يَامُتَهَوِّرُ

तो ऐसी बात का अनुकरण न कर जिस का भेद तुझे मालूम नहीं। हे दिलेरी करने वाले मौत के बाद तू अवश्य पूछा जाएगा।

وَلَسْتُ بِتَوَّاقٍ اِلٰى مَجْمَعِ الْعِدَا
وَلٰكِنْ مَتٰى يَسْتَحْضِرُ الْقَوْمُ اَحْضُرُ

और मैं अकारण दुश्मनों के गिरोह की तरफ ध्यान नहीं देता परन्तु जब विरोधि लोग मुझे बुलाते हैं तो मैं शोक से उपस्थित हो जाता हूं।

وَلِلّٰهِ فِىْ اَمْرِىْ عَجَائِبُ لُطْفِهٖ
اُشَاهِدُ هَا فِىْ كُلِّ وَقْتٍ وَّاَنْظُرُ

और ख़ुदा को मेरे काम में अपनी मेहरबानी के चमत्कार है मैं उनको प्रत्येक बात में देखता हूं।

عَجِبْتُ لِخَتْمِ اللّٰهِ كَيْفَ اَضَلَّكُمْ
فَمَا اِنْ اَرٰى فِيْكُمْ رَشِيْدًا يُّفَكِّرُ

मैं ख़ुदा की मुहर पर आश्चर्य करता हूं तुमको क्योंकर गुमराह कर दिया। अतः मैं तुम में कोई ऐसा सन्मार्ग-प्रदर्शक नहीं देखता जो विचार करता हो।

وَهَلْ مِنْ دَلِيْلٍ عِنْدَكُمْ تُؤْثِرُوْنَهُ
فَاِنْ كَانَ فَأْتُوْنَا فَاِنَّا نُفَكِّرُ

क्या कोई प्रमाण तुम्हारे पास है जिसको तुमने ग्रहण कर रखा है, यदि हो तो प्रस्तुत करो कि हम उसमें सोचेंगे।

سَيَجْزِى الْمُهَيْمِنُ كَاذِباً تَارِكَ الْهُدٰى
كِلَانَا اَمَامَ اللّٰهِ لَانَتَسَتَّرُ

ख़ुदा तआला झूठे को दण्ड देगा जो हिदायत को छोड़ता है हम दोनों गिरोह ख़ुदा के सामने हैं जो उस से छुप नहीं सकते।

اَتَعْصُوْنَ بَغْيًا مَّنْ اَتٰى مِنْ مَّلِيْكِكُمْ
وَ قَدْ تَمَّتِ الْاَخْبَارُ وَالْاٰيُ تَبْهَرُ

क्या तुम केवल बग़ावत की दृष्टि से उस व्यक्ति की अवज्ञा करते हो जो तुम्हारे बादशाह की तरफ से आया है। तथा सूचनाएं पूरी हो गईं और निशान चमक उठे।

وَقَدْ قِيْلَ مِنْكُمْ يَأْتِيَنَّ اِمَامُكُمْ
وَذٰلِكَ فِي الْقُرْآنِ نَبَأٌ مُّكَرَّرُ

और तुम सुन चुके हो कि तुम्हारा इमाम तुम में से ही आएगा और यह ख़बर तो क़ुर्आन में कई बार आ चुकी है।

اَتَانِيْ كِتَابٌ مِّنْ كَذُوْبٍ يُّزَوِّرُ
كِتَابٌ خَبِيْثٌ كَالْعَقَارِبِ يَأْبُرُ

मुझे कज़्ज़ाब की तरफ से एक किताब पहुंची है। वह ख़बीस किताब और बिच्छू की तरह डंक मार।

فَقُلْتُ لَكِ الْوَيْلَاتُ يَا اَرْضَ جَوْلَرَ
لُعِنْتِ بِمَلْعُوْنٍ فَاَنْتِ تُدَمَّرُ

तो मैंने कहा कि हे गोलड़ा की भूमि तुझ पर लानत तू लानती के कारण लानती हो गईं। तू क़यामत को तबाही में पड़ेगी।

تَكَلَّمَ هٰذَا النِّكْسُ كَالزَّمْعِ شَاتِمًا
وَ كُلُّ امْرِءٍ عِنْدَ التَّخَاصُمِ يُسْبَرُ

इस नीच ने कमीने लोगों की तरह गाली के साथ बातें की है और प्रत्येक आदमी लड़ाई के समय परखा जाता है।

اَ تَزْعَمُ يَاشَيْخَ الضَّلَالَةِ اَنَّنِىْ
تَقَوَّلْتُ فَاعْلَمْ اَنَّ ذَيْلِىْ مُطَهَّرُ

हे गुमराही के शेख। क्या तू यह गुमान करता है कि मैंने यह झूठ बना लिया है तो जान ले कि मेरा दामन झूठ से पवित्र है।

اَتُنْكِرُ حَقًّا جَآءَ مِنْ خَالِقِ السَّمَا
سَيُبْدِىْ لَكَ الرَّحْمَانُ مَا أَنْتَ تُنْكِرُ

क्या तू उस सच से इन्कार करता है जो आकाश से आया। ख़ुदा शीघ्र ही तुझ पर प्रकट कर देगा जिस चीज़ का तू ने इन्कार किया है।

اِذَا مَارَأَيْنَا اَنَّ قَلْبَكَ قَدْ غَسَا
فَفَاضَتْ دُمُوْعُ الْعَيْنِ وَالْقَلْبُ يَضْجَرُ

जब हमने देखा कि तेरा दिल कठोर हो गया तो आंखों से आंसू जारी हुए और दिल बेचैन था।

اَخَذْتُمْ طَرِيْقَ الشِّرْكِ مَرْكَزَ دِيْنِكُمْ
اَهٰذَا هُوَ الْاِسْلَامُ يَامُتَكَبِّرُ

तुमने शिर्क के ढंग को अपने धर्म का केन्द्र बना लिया। क्या यही इस्लाम है हे अहंकारी।

وَمَا اَنَا اِلَّا نَائِبُ اللّٰهِ فِى الْوَرٰى
فَفِرُّوْا اِلَىَّ وجَانِبُوا الْبَغْىَ وَاحْذَرُوْا

और मैं मख़्लूक के लिए ख़ुदा का नायब हूं अतः मेरी ओर भागो और अवज्ञा छोड़ दो तथा डरो।

وَاِنَّ قَضَاءَ اللّٰهِ يَأْتِىْ مِنَ السَّمَا
وَمَا كَانَ اَنْ يُّطْوٰى وَيُلْغٰى وَيُحْجَرُ

और ख़ुदा की तकदीर आकाश से आएगी तथा संभव नहीं होगा

कि स्थगित रखी जाए और खंडित की जाए तथा रोक दी जाए।

نَطَقْتَ بِكِذْبٍ اَيُّهَا الْغُوْلُ شَقْوَةً
خَفِ اللّٰہ يَاصَيْدَ الرَّدٰى كَيْفَ تَجْسُرُ

हे देव। तू ने दुर्भाग्य के कारण झूठ बोला। हे मौत के शिकार ख़ुदा से डर क्यों दिलेरी करता है।

اَ تَقْصِدُ عِرْضِىْ بِالْاَكَاذِيْبِ وَالْجَفَا
وَاَنْتَ مِنَ الدَّيَّانِ لَا تَتَسَتَّرُ

क्या झूठी बातों के साथ मेरे सम्मान का इरादा करता है और तू दण्ड देने वाले से छुपा नहीं है।

وَاِنْ تَضْرِبَن عَلى الصَّلَاتِ زُجَاجَةً
فَلَا الصَّخْرُ بَلْ اِنَّ الزُّجَاجَةَ تُكْسَرُ

और यदि तू शीशे को पत्थर पर मारे तो पत्थर नहीं बल्कि शीशा ही टूटेगा।

تَعَالٰى مَقَامِىْ فَاخْتَفٰى مِنْ عُيُونِكُمْ
وَكُلُّ رَفِيْعٍ لَا مَحَالَةَ يُسْتَرُ

मेरा मुक़ाम बुलन्द था तो तुम्हारी आंखों से छुप गया और प्रत्येक दूर तथा बुलन्द छुप जाता है।

وَ فِىْ حِزْبِكُمْ اِنَّا نَرٰى بَعْضَ اٰيِنَا
فَاِنَّا دَعَوْنَا حِزْبَكُمْ فَتَأَخَّرُوْا

हमने तुम्हारे गिरोह में अपने कुछ निशान पाएं क्योंकि हमने तुम्हारे गिरोह को बुलाया और वे पीछे हट गए।

تَبَصَّرْ خَصِيْمِىْ هَلْ تَرٰى مِنْ مُّطَاعِنٍ
عَلَىَّ خُصُوْصًا غَيْرَ قَوْمٍ تُطَهِّرُ

हे मेरे दुश्मन तू सोच ले कि क्या ऐसे भी ऐतराज़ हैं जो विशेष तौर पर मुझ पर आतें हैं तथा नबियों पर नहीं आए जिन को तू पवित्र समझता है।

وَاَرْسَلَنِیْ رَبِّیْ بِآیَاتِ فَضْلِهٖ
لِاَعْمُرَ مَاهَدَّ اللِّئَامُ وَدَعْثَرُوْا

और ख़ुदा ने मुझे अपने निशानों के साथ भेजा है ताकि मैं उस इमारत को बनाऊं जिसे कमीनों ने तोड़ा और वीरान किया।

وَفِی الدِّیْنِ اَسْرَارٌ وَّسُبْلٌ خَفِیَّةٌ
وَیُظْهِرُهَا رَبِّیْ لِعَبْدٍ یُخَیِّرُ

और धर्म में भेद हैं और गुप्त मार्ग हैं और मेरा रब्ब वे भेद उस बन्दे पर प्रकट करता है जिसको चुन लेता है।

وَکَمْ مِّنْ حَقَائِقٍ لَا یُرٰی کَیْفَ شَبْحُهَا
کَنَجْمٍ بَعِیْدٍ نُوْرُهَا یَتَسَتَّرُ

और बहुत सी वास्तविकताएं हैं कि उनकी सूरत दिखाई नहीं देती उस सितारे की तरह जो बहुत दूर है। दूरी के कारण उन वास्तविकताओं का प्रकाश छुप जाता है।

فَیَأْتِیْ مِنَ اللّٰهِ الْعَلِیْمِ مُعَلِّمٌ
وَیَهْدِیْ اِلٰی اَسْرَارِهَا وَیُفَسِّرُ

तो ख़ुदा की तरफ से एक शिक्षक आता है और उसके भेद प्रकट करता है तथा वर्णन करता है।

وَ اِنْ کُنْتَ قَدْ آلَیْتَ اَنَّكَ تُنْکِرُ
فَکِدْنِیْ لِمَا زَوَّرْتَ فَالْحَقُّ یَظْهَرُ

और यदि तू ने क़सम खा ली है कि तू इन्कार करता रहेगा तो तू जिस प्रकार चाहे आपने झूठ बोलने से छल कर। सच प्रकट हो कर रहेगा

وَسَـوْفَ تَـرٰ ى اَنِّیْ صَـدُوْقٌ مُؤَیَّـدٌ
وَلَسْــتُ بِفَضْـلِ اللّٰہِ مَااَنْــتَ تَسْــطُر

और शीघ्र तू देखेगा कि मैं सच्चा हूं और मदद किया गया हूं और मैं ख़ुदा के फ़ज़्ल से ऐसा नहीं जैसा कि तू लिखता है।

وَ یُبْـدِیْ لَـکَ الرَّحْمَـانُ اَمْـرِیْ فَیَنْجَـلِیْ
اَ اِنِّیْ ظَـلَامٌ اَوْ مِـنَ اللّٰہِ نَـیِّرُ

और ख़ुदा मेरी वास्तविकता तुझ पर प्रकट करेगा तो स्पष्ट हो जाएगा कि क्या मैं अंधकार हूं या प्रकाश हूं।

اُرِیْـکَ وَ غَــدَّارَ الزَّمَـانِ اَبَـا الْوَفَـا
یَـدَاللّٰہِ فَالضَّوْضَـاۃُ یُخْفٰـی وَیُسْــتَرُ

मैं तूझे और युग के ग़द्दार सनाउल्लाह को ख़ुदा का हाथ दिखाऊंगा तो शोर और फरियाद सब रुक जाएगी

وَیَعْلَـمُ رَبِّیْ مَـنْ تَصَلَّـفَ وَافْـتَرٰی
وَمَــنْ ھُــوَ عِنْــدَاللّٰہِ بَرٌّ مُّطَھَّـرُ

और मेरा ख़ुदा जानता है कि बुरा और झूठ गढ़ने वाला कौन है तथा वह कौन है जो उसके नज़दीक नेक और पवित्र है।

اَ تُطْفِـئُ نُـوْرًا قَـدْ اُرِیْـدَ ظُھُـوْرُہٗ
لَـکَ الْبُھْـرُ فِی الدَّارَیْـنِ وَ النُّـوْرُ یَبْھَـر

क्या तू उस प्रकाश को बुझाना चाहता है जिसके प्रकट करने

का इरादा किया गया है तुझे दोनों लोकों में अभागपन है। और प्रकाश प्रकट होकर रहेगा।

اَلَا اِنَّ وَقْتَ الدَّجْلِ وَالزُّوْرِ قَدْ مَضٰی
وَجَاءَ زَمَانٌ يُحْرِقُ الْكِذْبَ فَاصْبِرُوْا

सावधान हो झूठ और धोखे का समय गुज़र गया और वह समय आ गया जो झूठे को जला देगा। अतः सब्र कर।

وَاِنْ كُنْتَ قَدْ جَاوَزْتَ حَدَّ تَوَرُّعٍ
فَكَفِّرْ وَ كَذِّبْ اَ يُّهَا الْمُتَهَوِّرُ

और यदि तू संयम की हद से आगे गुज़र गया है हे दिलेर आदमी। तो मुझे काफ़िर कह और झुठला।

اَيَا اَ يُّهَا الْمُوْذِیْ خَفِ الْقَادِرَ الَّذِیْ
يَشُجُّ رُؤُوْسَ الْمُعْتَدِيْنَ وَيَقْهَرُ

हे दुख देने वाले उस शक्तिमान ख़ुदा से डर जो अवज्ञा करने वालों का सर तोड़ता है और उन पर प्रकोप उतारता है।

اِذَامَا تَلَظّٰی قَهْرُهٗ يُهْلِكُ الْوَرٰی
فَلَيْسَ بِوَاقٍ بَعْدَهٗ يَا مُزَوِّرُ

जब उस का प्रकोप भड़कता है तो लोगों को तबाह कर देता है फिर इसके बाद हे मुज़व्विर। कोई बचाने वाला नहीं होता।

وَلَسْتَ تُرَاعِیْ نَهْجَ رِفْقٍ وَلِيْنَةٍ
كَدَأْبِ ثَنَاءِ اللّٰهِ تُؤْذِیْ وَتَأْبُرُ

और तू नर्मी के मार्ग का ध्यान नहीं रखता और मौलवी सनाउल्लाह की तरह डंक मारता है।

اَلَا اِنَّ حُسْنَ النَّاسِ فِیْ حُسْنِ خُلْقِهِمْ
وَمَنْ یَّقْصِدِ التَّحْقِیْرَ خُبْثًا یُحَقَّر

खबरदार हो कि लोगों कि खूबी उनके आचरण की खूबी में है और जो व्यक्ति शरारत से तिरस्कार करता है उसका भी तिरस्कार किया जाता है।

أَ آخَیْتَ ذِئْبًا عَایِثًا اَوْ اَبَاالْوَفَا
أَ وَافَیْتَ مُدًّا اَوْ رَأَیْتَ امْرَتْسَر

क्या तू ने किसी भेड़िए से दोस्ती लगाई है या मौलवी सनाउल्लाह से। क्या तू ने मुद्द में अपना कदम डाला या अमृतसर में?

اَلَا اِنَّ اَهْلَ السَّبِّ یُدْرَی بِلَطْمَةٍ
وَ مُجْرِمُ لَطْمٍ بِالْهَرَاوٰی یُکَسَّرُ

सावधान हो कि गाली देने वाला तमांचे से होशियार किया जाता है और जो तंमाचा मारने का अपराधी हो उसे डण्डों से कूटा करते हैं।

فَاِیَّاكَ وَالتَّوْهِیْنَ وَالسَّبَّ وَالْقَلٰی
اذَامَارَمَیْتَ الْحَجَرَ بِالْحَجَرِ تُنْذَرُ

तो तू अपमान और गाली तथा शत्रुता से बच जब तू ने पत्थर चलाया तो पत्थर से ही डराया जाएगा।

وَاَعْلَمُ اَنَّ اللَّعْنَ وَالسَّبَّ دَأْبُکُمْ
وَمَنْ اَکْثَرَ التَّکْفِیْرَ یَوْمًا سَیُکْفَرُ

और मैं जानता हूं कि लानतबाज़ी और गाली तुम्हारी आदत है और जो व्यक्ति लोगों को बार-बार काफ़िर कहेगा एक दिन वह भी काफ़िर ठहराया जाएगा।

وَاِنَّــا وَاِيَّاكُــمْ اَمَــامَ مَلِيْكِنَــا
فَيَقْضِــىْ قَضَايَانَــا كَمَــا هُــوَ يَنْظُــرُ

और हम तुम ख़ुदा की आंखों के सामने हैं तो वह हमारे मुक़द्दमें को जैसा कि देख रहा है फ़ैसला करेगा।

فَــاِنْ كُنْــتُ كَذَّابًــا كَمَــا اَنْــتَ تَزْعَــمُ
فَتُعْــلٰى وَاِنِّىْ فِى الْاَنَــامِ اُحَقَّــرُ

तो यदि मैं झूठा हूं जैसा कि तू समझता है तो तू ऊंचा किया जाएगा और मैं लोगों में तिरस्कृत किया जाऊंगा।

وَاِنْ كُنْــتُ مِــنْ قَــوْمٍ اَتَــوْا مِــنْ مَّلِيْــكِـهِمْ
فَتُجْــزٰى جَــزَاءَ الْمُفْسِــدِيْنَ وَتُبْــتَرُ

और यदि मैं उन लोगों में से हूं जो अपने बादशाह की तरफ से आए तो तुझे वह दण्ड मिलेगा जो उपद्रवियों को मिला करता है।

واَقْسَــمْتُ بِــاللّٰهِ الَّذِىْ جَــلَّ شَــأْنُهٗ
سَــيُكْرِمُنِىْ رَبِّىْ وَشَــأْنِىْ يُكَــبَّرُ

और मैं ख़ुदा की क़सम खाता हूं जिसकी शान महान है कि शीघ्र ही मेरा ख़ुदा मुझे महानता देगा और मेरी प्रतिष्ठा बुलन्द की जाएगी।

شَــعَرْنَا مَــاٰلَ الْمُفْسِــدِيْنَ وَمَــنْ يَّعِــشْ
اِلٰى بُرْهَــةٍ مِــنْ بَعْــدِ ذٰلِــكَ يَشْــعُرُ

हमें उपद्रवियों का अंजाम मालूम हो गया है और जो व्यक्ति कुछ समय तक जीवित रहेगा उसे भी मालूम हो जाएगा।

وَفِى الْاَرْضِ اَحْنَــاشٌ وَسَــبْعٌ وَشَــرُّهُمْ
رِجَــالٌ اَهَانُــوْنِىْ وَسَــبُّوْا وَ كَفَّــرُوْا

और पृथ्वी में सांप भी हैं और दरिन्दे भी परन्तु सब से बुरे वे

लोग हैं जो मेरा अपमान करते, गालियां देते और काफ़िर कहते हैं।

مَنَعْنَا مِنَ الْکِذْبِ الْکَثِیْرِ فَکَاثَرُوْا
وَشَرُّ خِصَالِ الْمَرْءِ کِذْبٌ یُّکَرِّرُ

हमने बहुत झूठ से उनको मना किया तो उन्होंने प्रचुरता के साथ झूठ बोलना शुरु किया और मनुष्य की सर्वाधिक बुरी आदत वह झूठ है जो बार-बार वर्णन करता है।

کَتَبْتَ فَوَیْلٌ لِّلْاَنَامِلِ وَالْقَلَمِ
وَتَبَّتْ یَدٌ تُغْوِی الْاَنَامَ وَتَهْذُرُ

तू ने अपनी किताब लिखी तो उन उंगलियों पर शोर है और तबाह हो गया वह हाथ जो लोगों को गुमराह करता और बकवास करता है।

وَ کَیْفَ الْفَرَاغَةُ لِلرِّسَالَةِ حُصِّلَتْ
اَلَمْ یَكُ طَنْبُوْرٌ وَّمَا اَنْتَ تَزْمُرُ

और किताब लिखने के लिए कैसे फुर्सत पैदा हो गई क्या तंबूर और अन्य बांसुरियां तेरे पास मौजूद न थे।

اُوَانِسُ رِجْزَ الْکِذْبِ فِیْهَا کَأَنَّهَا
کَنِیْفٌ وَقَدْ عَایَنْتُ وَالْعَیْنُ تَقْذُرُ

मैं झूठ की गन्दगी उस किताब में देखता हूं जैसे वह पख़ाना है और मैंने देखा और आंखों ने घृणा की।

زَمَانٌ یَسُحُّ الشَّرَّ عَنْ کُلِّ فِیْقَةٍ
وَزَلْزَلَةٌ اَرْدَی الْاُنَاسَ وَصَرْصَرُ

यह वह युग है कि कभी-कभी बुराई के बादल से पानी निकाल रहा है और एक भूकम्प है जिसने लोगों को मार दिया तथा हवा बड़ी

प्रचण्ड और तेज़ चल रही है।

فَفِیْ ھٰذِہِ الْاَیَّامِ یُطْرَی ابْنُ مَرْیَمٍ
مَسِیْحٌ اَضَلَّ بِہِ النَّصَارٰی وَ خَسَّرُوْا

तो इन दिनों वह मसीह प्रशंसा किया जाता है जिसके साथ ईसाइयों ने लोगों को गुमराह किया और तबाह किया

کَذٰلِکَ فِی الْاِسْلَامِ عَاثَ تَشَیُّعٌ
اَبَادُوْا کَثِیْرًا کَاللُّصُوْصِ وَدَمَّرُوْا

इसी प्रकार इस्लाम में शिया धर्म फैल गया है, चोरों की तरह बहुतों को तबाह कर चुके हैं।

نَرٰی شِرْکَھُمْ مِثْلَ النَّصَارٰی مُخَوِّفًا
نَرَی الْجَاھِلِیْنَ تَشَیَّعُوْا وَ تَنَصَّرُوْا

हम उनके शिर्क को ईसाइयों की तरह भयानक देखते है हम मूर्खों को देखते हैं कि शिया होते जाते हैं और ईसाई भी।

فَتُبْ وَاتَّقِ الْقَھَّارَ رَبَّکَ یَاعَلِیْ
وَاِنْ کُنْتَ قَدْ اَزْمَعْتَ حَرْبِیْ فَاَحْضُرُ

तो हे अली हायरी तू ख़ुदा से डर और तौबः कर यदि तू ने मेरे मुकाबले का संकल्प कर लिया है तो मैं उपस्थित हूं।

عَکَفْتُمْ عَلٰی قَبْرِ الْحُسَیْنِ کَمُشْرِکٍ
فَلَا ھُوَ نَجَّاکُمْ وَ لَا ھُوَ یَنْصُرُ

तू ने मुश्रिकों की तरह हुसैन की क़ब्र का ऐतिकाफ़ किया। तो वह तुम्हें छुड़ा न सका और न मदद कर सका।

اَلَا رُبَّ یَوْمٍ کَانَ شَاھِدَ عِجْزِکُمْ
بِاٰخِّ الْحُسَیْنِ وَ وُلْدِہٖ اِذْ اُحْصِرُوْا

सावधान हो कि तुम्हारे असमर्थ रहने के लिए कई दिन गवाह हैं विशेष तौर पर वे दिन जबकि अबू बकर ,उमर और उस्मान खलीफा हो गए और हज़रत अली रह गए।

وَيَوْمَ فَعَلْتُمْ مَّافَعَلْتُمْ بِغَدْرِكُمْ
بِاَخِ الْحُسَيْنِ وَ وُلْدِهِ اِذْ اُحْصِرُوْا

और जबकि तुमने वह काम किया जो हुसैन के भाई मुस्लिम के साथ और उसकी सन्तान के साथ तथा वे क़ैद किए गए।

فَظَلَّ الْاُسَارٰى يَلْعَنُوْنَ وَفَائَكُمْ
فَرَرْتُمْ وَاَهْلُ الْبَيْتِ اُوْذُوْا وَدُمِّرُوْا

तो वे क़ैदी अर्थात् अहलेबैत तुम्हारी वफ़ादारी पर लानत डालते थे तुम भाग गए और अहले बैत दुख दिए गए तथा क़त्ल किए गए।

هُنَاكَ تَرَاءَى عِجْزُ مَنْ تَحْسَبُوْنَهُ
شَفِيْعَ النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ فَتَفَكَّرُوْا

तब उस व्यक्ति का असमर्थ होना और कमज़ोर होना अर्थात् हुसैन का प्रकट हो गया, जिसको तुम कहते थे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी क़यामत को वही सिफ़ारिश करेगा

زَعَمْتُمْ حُسَيْنًا اَنَّهُ سَيِّدُ الْوَرٰى
وَكُلُّ نَبِيٍّ مِّنْهُ يَنْجُوْ وَ يُغْفَرُ

तुम गुमान करते हो कि हुसैन समस्त सृष्टि का सरदार है और प्रत्येक नबी उसी की सिफ़ारिश से मुक्ति पाएगा और क्षमा किया जाएगा।

فَاِنْ كَانَ هٰذَا الشِّرْكُ فِى الدِّيْنِ جَائِزًا
فَبِاللَّغْوِ رُسْلُ اللّٰهِ فِى النَّاسِ بُعْثِرُوْا

तो यदि वह शिर्क धर्म में वैध होता तो समस्त पैगम्बरों की केवल निरर्थक तौर पर गणना होती।

وَ ذٰلِكَ بُهْتَانٌ وَّ تَوْهِيْنُ شَأْنِهِمْ
لَكَ الْوَيْلُ يَاغُوْلُ الْفَلَا كَيْفَ تَجْسُرُ

और यह आरोप है तथा नबियों की मानहनि है। हे जंगलों के मसान तुझ पर लानत यह तू क्या दिलेरी कर रहा है।

طَلَبْتُمْ فَلَاحًا مِّنْ قَتِيْلٍ بِخَيْبَةٍ
فَخَيَّبَكُمْ رَبٌّ غَيُوْرٌ مُّتَبِّرُ

तुम ने उस भस्म से मुक्ति की अभिलाषा की कि जो निराशा से मर गया तो तुम को ख़ुदा ने जो स्वाभिमानी है प्रत्येक मनोकामना से निराश किया वह ख़ुदा जो मारने वाला है।

وَوَاللّٰهِ لَيْسَتْ فِيْهِ مِنِّيْ زِيَادَةٌ
وَعِنْدِيْ شَهَادَاتٌ مِّنَ اللّٰهِ فَانْظُرُوْا

और ख़ुदा की क़सम मुझ से कुछ नहीं तथा मेरे पास ख़ुदा की गवाहियां हैं। अतः तुम देख लो।

وَاِنِّيْ قَتِيْلُ الْحِبِّ لٰكِنْ حُسَيْنُكُمْ
قَتِيْلُ الْعِدَا فَالْفَرْقُ اَجْلٰى وَاَظْهَرُ

और मैं ख़ुदा के प्रेम में भस्म किया हुआ हूं परन्तु तुम्हारा हुसैन दुश्मनों का भस्म किया हुआ है तो अन्तर खुला-खुला और स्पष्ट है।

حَدَرْنَا سَفَائِنَكُمْ اِلٰى اَسْفَلِ الثَّرٰى
وَاَوْثَانَكُمْ فِيْ كُلِّ وَقْتٍ نُكَسِّرُ

हमने तुम्हारी नौकाएं पाताल की तरफ उतार दीं और तुम्हारे बुत हर समय तोड़ रहे हैं।

وَوَاللّٰہِ اِنَّ الدَّھْرَ فِیْ کُلِّ وَقْتِہٖ
نَصِیْحٌ لَکُمْ فِیْ نُصْحِہٖ لَا یُقَصِّرُ

और ख़ुदा की क़सम युग अपने प्रत्येक समय में तुम्हे नसीहत कर रहा है और नसीहत में कुछ कमी नहीं करता।

تَنَاھٰی لِسَانُ النَّاسِ عَنْ دَأْبِ فُحْشِھِمْ
وَ مِقْوَلُکُمْ یَجْرِیْ وَلَا یَتَحَسَّرُ

सब लोगों ने गालियों की आदत छोड़ दी और तुम्हारी ज़ुबान अब तक लानतबाज़ी पर जारी हो रही है तथा थकती नहीं।

اَشَعْتُمْ طَرِیْقَ اللَّعْنِ فِیْ اَھْلِ سُنَّۃٍ
فَاَجْرَوْا طَرِیْقَتَکُمْ فَاِنْ شِئْتُمْ انْظُرُوْا

तुमने लानतबाज़ी के तरीको को अहले सुन्नत वलजमाअत में फैला दिया तो उन्होंने भी यह तरीका जारी कर दिया यदि चाहो तो देख लो।

فَیَالَیْتَ مِتُّمْ قَبْلَ تِلْکَ الطَّرَاءِقِ
وَلَمْ یَکُ دِیْنُ اللّٰہِ مِنْکُمْ یُخَسَّرُ

काश तुम इन समस्त तरीक़ों से पहले ही मर जाते और ख़ुदा का धर्म तुम्हारे कारण तबाह न होता।

جَعَلْتُمْ حُسَیْنًا اَفْضَلَ الرُّسْلِ کُلِّھِمْ
وَجُزْتُمْ حُدُوْدَ الصِّدْقِ وَاللّٰہُ یَنْظُرُ

तुमने हुसैन को समस्त नबियों से श्रेष्ठतम ठहरा दिया और सच्चाई की सीमाओं से आगे गुज़र गए। और अल्लाह देख रहा है।

وَعِنْدَ النَّوَاءِبِ وَالْاَذٰی تَذْکُرُوْنَہٗ
کَأَنَّ حُسَیْنًا رَبُّکُمْ یَا مُزَوِّرُ

और संकटों एवं दुखों के समय तुम उसी को याद करते हो

जैसे हुसैन तुम्हारा रब्ब है हे अभागे, झूठ बोलने वाले।

وَخَرَّتْ لَهُ اَحْبَارُكُمْ مِثْلَ سَاجِدٍ
فَمَا جُرْمُ قَوْمٍ اَشْرَكُوْا اَوْ تَنَصَّرُوْا

और तुम्हारे उलेमा सजदा करने वालों की तरह उसके आगे गिर गए तो अब मुश्रिकों या ईसाईयों का क्या गुनाह है।

نَسِيْتُمْ جَلَالَ اللّٰهِ وَالْمَجْدَ وَالْعُلٰى
وَمَا وِرْدُكُمْ اِلَّا حُسَيْنٌ اَتُنْكِرُ

तुमने ख़ुदा के प्रताप और श्रेष्ठता को भुला दिया और तुम्हारा विर्द केवल हुसैन है क्या तू इन्कार करता है?

فَهٰذَا عَلَى الْاِسْلَامِ اِحْدَى الْمَصَائِبِ
لَدَىْ نَفَحَاتِ الْمِسْكِ قَذْرٌ مُّقَنْطَرُ

अत: इस्लाम पर यह एक संकट है। कस्तूरी की खुशबू के पास विष्ठा का ढेर है।

وَاِنْ كَانَ هٰذَا الشِّرْكُ فِى الدِّيْنِ جَائِزًا ★
فَبِاللَّغْوِ رُسْلُ اللّٰهِ فِى النَّاسِ بُعْثِرُوْا

और यदि शिर्क धर्म के जायज़ (वैध) है तो ख़ुदा के पैगम्बर व्यर्थ तौर पर लोगों में भेजे गए।

★**हाशिया :-** इस शेर का मतलब है कि जब शिर्क वैध था और काफ़िरों ने केवल अपने उन उपास्यों की सहायता में जो हुसैन की तरह गैरुल्लाह थे मुसलमानों को क़त्ल करना आरंभ कर दिया था जिस पर अन्तत: मुसलमानों को इजाज़त हुई कि अब तुम भी इन मुश्रिकों का मुकाबला करो तो इस मुकाबले की क्या आवश्यकता थी बल्कि मुश्रिकों को कहना चाहिए था कि तुम अपने शिर्क में हक़ पर हो और कलिमा ग़लत है अब तुम मेहरबानी करके युद्ध छोड़ दो और हमें कष्ट न दो। हम तुझ से तुम्हारे मुकाबले पर कोई युद्ध नहीं करते और हम मानते हैं कि अल्लाह के ग़ैर से मुरादें मांगना सब सच है। इस पर हमारा कोई ऐतराज़ नहीं।

وَاَیٌّ صَلَاحٍ سَاقَ جُنْدَ نَبِیِّنَا
اِلٰی حَرْبِ حِزْبِ الْمُشْرِکِیْنَ فَدَمَّرُوْا

और क्या मतलब था कि हमारे नबी की सेना मुकाबले के लिए चली गई। मुश्रिकों की लड़ाई के अवसर पर उनको मारा।

وَشَنُّوْا عَلَیْہِمْ کُلَّ شَنٍّ بِمَوْطِنٍ
فَصَارَ مِنَ الْقَتْلٰی بَرَازٌ مُّعَصْفَرُ

और अपने प्रयासों से उन मुश्रिकों को युद्ध के मैदान में खूब तबाह किया यहां तक कि उन लाशों से युद्ध का मैदान लाल हो गया।

وَ کَمْ مِّنْ زِرَاعَاتٍ اُبِیْدَتْ وَمِثْلُہَا
بُیُوْتٌ مَبِیْتَاۃٌ وَّ طِرْفٌ مُّصَدِّرُ

और बहुत सी खेतियां तबाह की गईं और घर उजाड़ दिए गए और वे घोड़े जो सब से आगे निकल जाते थे मारे गए।

وَاُحْرِقَ مَالُ الْمُشْرِکِیْنَ وَ حُصِّلَتْ
مَغَانِمُ شَتّٰی وَالْمَتَاعُ الْمُوَقَّرُ

और मुश्रिकों का घर बार जलाया गया और बहुत सी ग़नीमतें तथा बहुत से सामान प्राप्त किए गए।

بِبَدْرٍ وَّاُحُدٍ قَامَ نَوْعُ قِیَامَۃٍ
وَ کَانَ الصَّحَابَۃُ کَالْاَفَانِیْنِ کُسِّرُوْا

बदर और उहद के युद्ध में एक क़यामत मची हुई थी और सहाबा रज़ि टहनियों की तरह तोड़े गए।

ھَمَتْ مِثْلَ جَرْیَانِ الْعُیُوْنِ دِمَائُ ھُمْ
تَسَوَّرَ دِعْصَ الرَّمْلِ مَا کَانَ یَقْطُرُ

और झरनों की तरह उनके खून जारी हो गए और उनका खून रेत के ढेर के ऊपर चढ़ गया

وَ كَانَ بِحُـرِّ الرَّمْـلِ مَوْقِفُـهُمْ فَـهُمْ
عَلٰى رِسْـلِهِمْ بَـارَوْا عِدَاهُـمْ وَجَمَّـرُوْا

और शुद्ध रेत में उनके खड़े होने का स्थान था, तो उन्होंने बड़ी मर्यादा तथा आराम से दुश्मनों का मुक़ाबला किया और लड़ाई पर जमें रहे।

وَ قَامُـوْا لِبَـذْلِ نُفُوْسِـهِمْ مِـنْ صِدْقِـهِمْ
عَـلٰى مَوْطِـنٍ فِيْـهِ الْمَنِيَّـةُ يَـزْئَرُ

और अपनी सच्चाई से जान क़ुर्बान करने के लिए ऐसे स्थान पर खड़े हो गए जिसमें मौत शेर के समान गुर्राती थी।

وَصُبَّـتْ عَـلٰى رَأْسِ النَّـبِيِّ مُصِيْبَـةٌ
وَدَقُّـوْا عَلَيْـهِ مِـنَ السُّـيُوْفِ الْمِغْـفَ

और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर एक संकट आया और दुश्मनों ने उसके खोद को तलवारों से उसके सर में धंसा दिया।

عَـلٰى مِثْلِهَـا لَـمْ نَطَّلِـعْ فِى مُكَلَّـمٍ
وَاِنْ كَانَ عِيْسٰـى اَوْ مِـنَ الرُّسْـلِ اٰخَـرُ

उन समस्त संकटों के लिए दूसरे नबी में उदाहरण नहीं पाया जाता चाहे ईसा हो या कोई अन्य नबी हो

فَفَكِّـرْ أَهٰـذَا كُلُّهُ كَانَ بَاطِـلًا
وَمَـا كَانَ شِـرْكُ النَّـاسِ شَـيْئًا يُغَـيَّرُ

अत: सोच क्या यह समस्त कार्यवाईयां झूठी थीं और शिर्क कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसको बदलाया जाए।

اَ لَا لَاْ يِمِـىْ عَـارَ النِّسَـاءِ اَبَالْوَفَـا
اِ لَامَ كَفِئَتَيَـانِ الْوَغٰـى تَتَنَمَّـرُ

हे स्त्रियों की शर्म सनाउल्लाह। कब तक युद्ध के मर्दों की तरह चीतापन दिखाएगा।

أَرُدْتُّ الْهَـوٰى مِـنْ بَعْـدِ سِـتِّيْنَ حِجَّـةً؟
وَذٰلِـكَ رَأْيٌ لَايَـرَاهُ الْمُفَكِّـرُ

क्या मैंने साठ वर्ष की आयु के बाद मौक़ा परस्ती को अपनाया। यह तो किसी बुद्धिमान की राय न होगी।

اَرَيْنَـاكَ اٰيَـاتٍ فَـلَا عُـذْرَ بَعْدَهَـا
وَاِنْ خِلْتَهَـا تُخْفٰـى عَـلَى النَّـاسِ تُظْهَـرُ

हम तुझे एक निशान दिखाते हैं और उसके बाद कोई बहाना शेष न रहेगा और यदि तू सोचे कि वह छुपा रहेगा तो वह हरगिज़ छुपा न रहेगा।

اَرَدْتَّ بِمُـدٍّ ذِلَّـتِيْ فَرَأَيْتَهَـا
وَمَـنْ لَّايُوَقِّـرْ صَادِقًـا لَّايُوَقَّـرُ

तू ने मुद्द के स्थान पर मेरा अपमान चाहा तो स्वयं अपमानित हुआ और जो व्यक्ति सच्चे अपमान करता है वह स्वयं अपमानित हो जाएगा।

وَ كَاَيِّـن مِّـنَ الْاٰيَـاتِ قَـدْ مَـرَّ ذِكْرُهَـا
رَأَيْتُـمْ فَاَعْـرَضْتُـمْ وَقُلْتُـمْ تُـزَوِّرُ

और बहुत से निशान हैं जिन का वर्णन हम कर चुके हैं। तुम ने वे निशान देखे और इन्कार किया और कहा कि झूठ बोलता है

فَعَـنَّ لَنَـا بَعْـدَ التَّجَـارِبِ حِيْـلَةٌ
لِنَـكْتُـبَ اَشْـعَارًا بِهَـا الْاٰىَ تَشْـعُرُ

अत: हमारे लिए बहुत अनुभवों के बाद एक हुलिया प्रकट हुआ और हम ने शेर लिखे हैं ताकि तुम पर यह निशान प्रकट हो जाएं।

فَهٰذَا هُوَ التَّبْكِيْتُ مِنْ فَاطِرِ السَّمَا
وَهٰذَا هُوَ الْاِفْحَامُ مِنِّیْ فَفَكِّرُوْا

तो इसी माध्यम से ख़ुदा तुम्हारा मुहं बन्द करना चाहता है और यही मेरी ओर से समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण करना है।

اَثَارَتْ سَنَابِكُ طِرْفِنَا نَقْعَ فَوْجِكُمْ
فَهَلْ مِنْ كَمِیٍّ لِّلْوَغٰی يَتَبَخْتَرُ

हमारे घोड़ों के खुरों ने तुम्हारी खाक़ उड़ा दी। अतः क्या तुम में कोई सवार है जो मैदान में आए।

اَتُثْبِتُ عَظْمَةَ آيَتِیْ بِتَقَاعُسٍ
وَقَدْ جِئْتَ مُدًّا سَاعِيًا لِّتُحَقِّرُ

क्या अब तू पीछे हटने से मेरे निशान को सिद्ध कर देगा? तू मुद्द में दौड़ता हुआ आया था ताकि मेरा अपमान करे।

فَاِنْ تُعْرِضَنَّ الْاٰنَ يَابْنَ تَصَلُّفٍ
فَهٰذَا عَلٰی بَطْنِ الْمُكَذِّبِ خَنْجَرُ

अतः अब यदि तू ने मुक़ाबले से मुहं फेर लिया तो यह तरीक़ा तो झुठलाने वाले के पेट पर एक तलवार है।

وَاِنْ كُنْتَ تَخْتَارُ الْهَزِيْمَةَ عَامِدًا
وَتَهْوِیْ بِوَهْدِ الذُّلِّ عِجْزًا وَّ تَحْدُرُ

और यदि तू जान-बूझ कर पराजय ग्रहण करेगा और अपमान के गढ़े में विनम्रता से गिर पड़ेगा।

فَفِيْهَا نَكَالُ الْعٰلَمِيْنَ وَلَعْنَةٌ
وَفِيْهَا فَضِيْحَتُكُمْ اَلَا تَتَذَكَّرُ

तो इस में धर्म एवं संसार की विपत्ति और लानत है और इसमें तुम्हारी बदनामी है क्या तुम विचार नहीं करते?

وَمَالَــكَ لَا تَسْــطِيْعُ اِنْ كُنْــتَ صَادِقًــا
لِاَهْــلِ صَــلَاحٍ كُلُّ اَمْرٍ مُيَسَّــرُ

और यदि तू सच्चा है तो क्यों अब तुझे मुकाबले की शक्ति नहीं होती? और सच्चे के लिए प्रत्येक कार्य आसान किया जाता है।

وَ كُنْــتَ اِذَا خُــيِّرْتَ لِلْبَحْــثِ وَالْوَغَــا
سَــطَوْتَ عَلَيْنَــا شَــاتِمًا لِتُوَقَّــرُ

और जब तू मुद्द के स्थान में बहस के लिए चुना गया तू ने हम पर प्रहार किया ताकि इस प्रकार तेरा सम्मान हो।

لَعَمْــرِىْ لَقَــدْ شَــجَّتْ قَفَــاكَ رِسَــالَتِىْ
وَاِنْ مِــتَّ لَا يَأْتِيْــكَ عَــوْنٌ مُّعَــزِّرُ

और मुझे क़सम है कि मेरी पुस्तक ने तेरा सर तोड़ दिया और अब यदि तू मर भी जाए तो तुझे वह मदद नहीं पहुंचेगी जो तुझे सम्मान दे।

وَ كَيْــفَ وَاَنْتُــمْ قَــدْ تَرَكْتُــمْ مُعِيْنَكُــمْ
وَلَيْــسَ لَكُــمْ مَــوْلٰى وَمَــنْ هُوَ يَنْصُــرُ

और तुम्हे सहायता क्योंकर पहुंचती तुम तो ख़ुदा को छोड़ बैठे और तुम्हारा अब कोई मौला नहीं जो तुम्हे मदद दे।

اَفِيْكُــمْ كَمِــيٌّ ذُوْنِضَــالٍ شَــمَرْدَلٌ
فَــاِنْ كَانَ فَلْيَحْضُــرْ وَلَا يَتَأَخَّــرُ

क्या तुम में कोई लड़ने वाला बहादुर सवार मौजूद है यदि हो तो चाहिए कि उपस्थित हो जाए और विलम्ब न करे।

وَجِئْنَــاكَ يَاصَيْــدَ الــرَّدٰى بِهَدِيَّــةٍ
وَنُهْــدِى اِلَيْــكَ الْمُرْهِفَــاتِ وَ نَعْقِــرُ

और हे विपत्ति के शिकार हम तेरे पास एक उपहार ले कर आए हैं और हम तेज़ तलवारों का अर्थात् अद्वितीय कसीदः का तुझे

उपहार देते हैं।

فَاَبْشِرْ وَبَشِّرْ كُلَّ غُوْلٍ يَسُبُّنِیْ
سَیَأْتِیْكَ مِنِّیْ بِالتَّحَائِفِ سَرْوَرُ

अतः खुश हो और प्रत्येक समूह जो मुझे गाली दिया करता था उसको खुशखबरी दे। शीघ्र ही मेरी ओर से सय्यद मुहम्मद सरवर उपहार लेकर तेरे पास आएंगे।

وَاِنِّیْ اَنَا الْبَازِی الْمُطِلُّ عَلَی الْعِدَا
وَاِنِّیْ مُعَانٌ مِّنْ مُّعِیْنٍ یُّکَبَّرُ

और मैं वह बाज़ हूं जो दुश्मनों पर जा पड़ता है और मैं ख़ुदा तआला से मदद दिया गया हूं।

اَثِرْ كُلَّ شَرْقِیِّ الْبِلَادِ وَغَرْبِهَا
وَكُلَّ اَدِیْبٍ كَانَ كَالْبَقِّ یَطْمِرُ

तू पूरब-पश्चिम को मेरे मुकाबले पर उकसा और प्रत्येक सहित्यकार को बुला लो जो मच्छर की तरह कूदता था।

وَمَنْ كَانَ یَحْكِیْ نَاقَةً مُشْمَعِلَّةً
صَغَارٌ یَمُسُّ الْقَوْمَ فَاسْعَوْا وَدَبِّرُوْا

और उस व्यक्ति को बुला लो जो तीव्र गर्मी ऊंटनी के समान हो। क़ौम को बड़ी बरबादी का सामना है दौड़ो और कुछ उपाय करो।

وَاِنِّیْ لَعَمْرُ اللّٰهِ لَسْتُ بِجَائِرٍ
وَاِنْ كُنْتَ تَأْتِیْ بِالصَّوَابِ فَاُدْبِرُ

और मैं ख़ुदा की क़सम ज़ालिम नहीं हूं। यदि तुम्हारा उत्तर सही होगा तो मैं पीछे हट जाऊंगा।

وَاِنْ كُنْتَ لَا تُصْغِیْ اِلَیْنَا تَغَافُلًا
تَهُدُّ وَتُلْغِیْ كُلَّمَا كُنْتَ تَعْمُرُ

और यदि तू ने हमारे इस कथन की ओर ध्यान न दिया तो तू उस इमारत को ध्वस्त कर देगा तथा बेकार कर देगा जो तू ने बनाई थी।

اَلَسْتَ تَرٰی یَرْمِی الْقَنَا مَنْ عِنْدَکُمْ
جَھُوْلٌ وَلَا یَدْرِی الْعُلُوْمَ وَاَکْفَرُ

क्या तू नहीं देखता कि वह व्यक्ति तुम पर भाले चला रहा है जो तुम्हारे नज़दीक,मूर्ख,ज्ञानहीन और काफ़िर है।

فَاَیْنَ ضَرَتْ مِنْکُمْ عَلَامَۃُ صِدْقِکُمْ
وَاَیْنَ اخْتَفٰی عِلْمٌ بِہٖ کُنْتَ تُکْفِرُ

और तुम्हारी सच्चाई का लक्षण कूद कर कहां चला गया और कहां वह ज्ञान चला गया जिसके साथ तू काफ़िर बनाता था।

وَاَیْنَ التَّصَلُّفُ بِالْفَضَائِلِ وَالنُّھٰی
وَاَیْنَ بِھٰذَا الْوَقْتِ قَوْمٌ وَّ مَعْشَرُ

और कहां वह शेखी जो श्रेष्ठता और बुद्धि की जाती थी और कहां है इस समय तेरी क़ौम तथा तेरा गिरोह?

وَاَیْنَ عَفَتْ مِنْکُمْ طَلَاقَۃُ اَلْسُنٍ
سِلَاطٍ عَلَیْنَا مِثْلَ سَیْفٍ یُّشَھَّرُ

और ज़ुबानों की चालाकी कहां मिट गई वे ज़ुबानें जो हम पर तलवार की तरह खींची गई थीं।

وَفِیْ خَمْسَۃٍ قَدْ تَمَّ نَظْمُ قَصِیْدَتِیْ
بَلِ الْوَقْتُ خَالِصَۃً اَقَلُّ وَاَقْصَرُ

और मेरा कसीद: पांच दिन में समाप्त हुआ बल्कि असल समय इस से भी बहुत कम है अर्थात् तीन दिन।

فَفَکِّرْ بِجُھْدِکَ خَمْسَ عَشْرَۃَ لَیْلَۃً
وَنَادِ حُسَیْنًا اَوْ ظَفَرْ اَوْ اَصْغَرُ

अतः तू पन्द्रह रातें प्रयास करता रह और मुहम्मद हुसैन को और काज़ी ज़फरुद्दीन और असग़र अली को बुला ले।

وَهٰـذَا مِـنَ الاٰیٰـتِ یَـا اَکْـبَرَ الْعِـدَا
فَهَـلْ اَنْـتَ تَنْسِـجُ مِثْلَهَـا یَـا مُخَسَّـر

और यह ख़ुदा का निशान है हे बड़े दुश्मन। तो क्या तू इस के समान बना लेगा?

عَـلٰی مَوْطِـنٍ یَّخْشَـی الْجَبَـانُ نُجَمِّـرُ
فَـاِنْ کُنْـتَ فِیْ شَـیْئٍ فَبَـادِرْ وَ نَبْـدِرُ

जहां कायर भाग जाते हैं हम जम कर खड़े हैं। तू यदि कुछ चीज़ है तो मुकाबले पर आ फिर हम देख लेंगे।

اَتَسْـتُرُ بَغْیًـا بَـرْقَ اٰیٰـتِ رَبِّنَـا
سَـیُظْهِرُ رَبِّی کُلَّمَـا کُنْـتَ تَسْـتُرُ

क्या तू बग़ावत करके हमारे रब्ब के निशानों की चमक की छुपाना चाहता है। तो मेरा ख़ुदा वह सब प्रकट कर देगा जिसको तू छुपाता है।

تُرِیْـدُوْنَ ذِلَّتَنَـا وَنَحْـنُ هَوَانَکُـمْ
وَلِلّٰهِ حُکْـمٌ نَافِـذٌ فَسَـیَأْمُرُ

तुम हमारा अपमान चाहते हो और हम तुम्हारा और ख़ुदा के लिए आदेश लागू है वह फैसला कर देगा।

تَرَکْتُـمْ کَلَامَ اللّٰهِ مِـنْ غَـیْرِ حُجَّـةٍ
وَاِنَّ کَلَامَ ا لِلّٰهِ اَهْـدٰی وَاَظْهَـرُ

तुमने ख़ुदा के कलाम को बिना तर्क छोड़ दिया और ख़ुदा का कलाम असल हिदायत और बहुत स्पष्ट है।

وَ یَسَّـرَهُ الْمَـوْلٰی لِیَدَّکَّـرَ الْـوَرٰی
فَلَاشَـكَّ اَنَّ الذِّکْرَاَجْـلٰی وَاَیْسَـرُ

और ख़ुदा ने उसे आसान किया ताकि लोग याद करें। तो कुछ सन्देह नहीं कि क़ुर्आन रोशन और बहुत आसान है।

وَفِيْـهِ تَجَلَّـتْ بَيِّنٰـتٌ مِّـنَ الْهُـدٰى
وَسَـمَّاهُ فُرْقَانًـا عَلِيْـمٌ مُقَـدِّرُ

और उसमें खुली-खुली हिदायतें मौजूद हैं तथा ख़ुदा ने सका नाम फ़ुर्क़ान रखा है।

وَ سَـمَّاهُ تِبْيَانًـا وَّ قَـوْلًا مُّفَصَّـلًا
فَـاَىَّ حَدِيْـثٍ بَعْـدَهُ نَتَخَـيَّرُ

और उसका नाम तिब्यान तथा विस्तृत कथन रखा तो हम इसके बाद किस हदीस को अपनाएं।

فَـدَعْ ذِكْـرَ بَحْـثٍ فِيْـهِ ظُلْـمٌ وَّفِرْيَـةٌ
وَفَكِّـرْ بِنُـوْرِ الْقَلْـبِ فِيْمَـا نُكَـرِّرُ

तू ऐसी बहस को छोड़ दे जिसमें झूठ है तथा दिल के प्रकाश के साथ हमारी बातों में विचार कर।

لَنَـا الْفَضْـلُ فِى الدُّنْيَـا وَاَنْفُـكَ رَاغِـمٌ
وَكُلُّ صَـدُوْقٍ لَّا مَحَـالَةَ يُظْهَـرُ

हमें दुनिया में महानता दी गई और तू अपमान में है और प्रत्येक ईमानदार अन्ततः विजयी किया जाता है।

عَلَوْنَـا بِسَـيْفِ اللّٰهِ خَصْمًـا اَبَاالْوَفَـا
فَنُمْـلِىْ ثَنَـاءَ اللّٰهِ شُـكْرًا وَّنَسْـطُرُ

हमने अपने दुश्मन अबुलवफा को मार लिया। अतः हम ख़ुदा की प्रशंसा धन्यवाद करने की दृष्टि से लिखते हैं।

اَيَزْعَـمُ اَنِّىْ قَـدْ تَقَوَّلْـتُ عَامِـدًا
فَوَيْـلٌ لَّهُ يُغْـوِى الْاِنَـاسَ وَيَهْـذُرُ

वह गुमान करता है कि मैंने जान-बूझ कर झूठ बना लिया तो उस पर कोलाहल कि लोगों को गुमराह कर रहा तथा बकवास कर रहा है।

اَرٰی بَاطِـلًا قَـدْ ثَلَّـمَ الْحَـقُّ جُـدْرَهُ
فَاَضْـحَی الْهُـدٰی مِثْـلَ الضُّـحٰی یُتَبَصَّـرُ

मैं देखता हूं कि सच्चाई ने झूठ की दीवारों में छेद कर दिया तो हिदायत रोशन दिन के समान प्रकट हो गई।

وَاِنِّیْ طَبَعْـتُ الْیَـوْمَ نَظْـمَ قَصِیْـدَتِیْ
وَکَانَ اِلٰی نِصْـفٍ تَمَشّـٰی نُوَمْـبَرُ

और आज मैंने अपने इस क़सीदः की नज़्म को छाप दिया और नवम्बर का लगभग आधा महीना गुज़र चुका था।

کَذَالِـکَ مِـنْ شَـعْبَانَ نِصْـفٌ کَمِثْـلِهٖ
فَیَـا رَبِّ بَارِکْھَـا لِمَـنْ یَّتَذَکَّـرُ

इसी प्रकार शाबान का भी आधा (महीना) था। तो हे मेरे रब्ब इसे उनके लिए मुबारक कर जो हिदायत पर आना चाहे।

رمَیْـتُ لِاَغْتَالَـنْ وَّمَا کُنْـتُ رَامِیًـا
وَلٰکِـنْ رَّمَـاهُ اللّٰہ رَبِّیْ لِیُظْھِـرُ

मैंने इस पुस्तक को तीर के समान चलाया ताकि सहसा दुश्मन का काम समाप्त करुं और वास्तव में मैंने इसको नहीं चलाया बल्कि ख़ुदा ने चलाया ताकि मुझे विजय दे।

وَھٰـذَا لِعَھْـدٍ قَـدْ تَقَرَّرَبَیْنَنَـا
بِمُـدٍّ فَلَـمْ نَنْکُـثْ وَلَـمْ نَتَغَـیَّرُ

और हमने यह कसीदः उस अहद की दृष्टि से लिखा है जो

मुद्‌द गांव में किया गया था। तो हमने अहद को तोड़ा नहीं और न हम बदल गए।

نَــرٰی بــرَکَاتٍ نَزَّلُوْهَــا مِــنَ السَّــمَا
لَنَــا كَاللَّوَاقِــحِ وَالْــكلَامُ يُنَضَّــرُ

हम ऐसी बरकतें देख रहे हैं जो आकाश से हमारे लिए उतरी हैं उन ऊंटनियों की तरह जो गर्भ वाली होती हैं तथा ताज़ा कलाम किया गया है।

وَوَ اللّٰهِ اِنَّ قَصِيْــدَتِىْ مِــنْ مُّؤَيِّــدِىْ
فَنُثْــنِىْ عَــلٰى رَبٍّ كَرِيْــمٍ وَ نَشْــكُرُ

और ख़ुदा की क़सम मेरा क़सीद: मेरे उसी ख़ुदा की और से है जो मेरा समर्थन कर रहा है। तो हम उसकी प्रशंसा करते हैं और धन्यवाद करते हैं।

وَيَــارَبِّ اِنْ اَرْسَــلْتَنِىْ مِــنْ عِنَايَــةٍ
فَاَيِّــدْوَ كَمِّــلْ كُلَّ مَــا قُلْــتُ وَانْصُــرُ

अनुवाद- और हे मेरे रब्ब तू ने अपनी कृपा से मुझे भेजा है तो सहायता कर और प्रत्येक तरीके से जो मैंने सोचा है उसे पूरा कर।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

शे'र

क़ादिर के कारोबार नमूदार हो गए,
काफिर जो कहते थे वे गिरफ़्तार हो गए।
काफ़िर जो कहते थे, वे नगो निसार हो गए।
जितने थे सब के सब ही गिरफ़्तार हो गए।

दस हज़ार रुपए का विज्ञापन

यह विज्ञापन ख़ुदा तआला के उस निशान को व्यक्त करने के लिए प्रकाशित किया जाता है जो और निशानों की तरह एक भविष्यवाणी को पूरा करेगा अर्थात् यह भी वह निशान है जिसके वारे में वादा था कि वह दिसम्बर 1902 ई० के अन्त तक प्रकटन में आ जाएगा तथा उसके साथ दस हज़ार रुपए का विज्ञापन इस बात के लिए बतौर गवाह के है अपने दावे की सच्चाई के लिए किस ज़ोर से तथा कितना धन व्यय करके विरोधियों को सावधान किया गया है। मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी ने गावं मुद्द में बुलन्द आवाज़ से कहा था कि हम पुस्तक ऐजाज़ुलमसीह को चमत्कार नहीं कह सकते और मैं इस प्रकार की पुस्तक बना सकता हूं और यह सच भी है कि यदि विरोधी मुक़ाबला कर सकें और उस निर्धारित समय में इसी प्रकार की पुस्तक बना सकें तो फिर वह चमत्कार कैसा हुआ। इस स्थिति में तो हम साफ़ झूठे हो गए। परन्तु जब हमारे मित्र मौलवी सय्यद मुहम्मद सरवर साहिब और मौलवी अब्दुल्लाह साहिब 2,नवम्बर 1902ई० को क़ादियान में पहुंच

गए तो कुछ दिन के बाद मैंने सोचा कि ऐजाज़ुलमसीह का उदाहरण मांगा जाए तो जैसा कि हमेशा से ये विरोधी लोग हालों-बहानों से काम लेते हैं। इसमें भी कह देंगे कि हमारी समय में पुस्तक ऐजाज़ुलमसीह सत्तर दिन में तैयार नहीं हुई जैसा कि संबंधित जल्सा महोत्सव के भाषण के बारे में मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब ने यह फ़रमाया था कि यह भाषण पहले बनाया गया है। और एक समय तक सोच कर लिखा गया है, तो यदि अब भी कह दें कि यह ऐजाज़ुलमसीह सत्तर दिन में नहीं बल्कि सत्तर महीनें में बनाई गई है। तो अब यह बात जन समान्य की दृष्टि में संदिग्ध हो जाएगी। और मैं कुछ दिन इसी चिन्ता में था कि क्या करुं। अन्ततः 6 नवम्बर 1902 ई० की शाम को मेरे दिल में डाला गया कि एक कसीदः मुद्द स्थान के मुबाहसे के बारे में बनाऊं। क्योंकि बहरहाल कसीदः बनाने का समय निश्चित और अटल है क्योंकि इस से तो कोई इन्कार नहीं कर सकता कि 29 और 30 अक्टूबर 1902 ई० को मुद्द के स्थान में बहस हुई थी और फिर 2 नवम्बर को हमारे मित्र क़ादियान पहुंचे और 7 नवम्बर 1902 ई० को मैं एक गवाही के लिए मुन्शी नसीरुदीन साहिब बटाला की अदालत के मुन्सिफ की कचहरी में गया। शायद मैंने एक या दो शेर मार्ग में बनाए। परन्तु 8 नवम्बर 1902 ई० को क़सीदः पूरे ध्यान से आंरभ किया और पांच दिन तक क़सीदः और उर्दू लेख समाप्त कर लिया। इसलिए यह मामला शक और सन्देह से पवित्र हो गया कि कितने समय में क़सीदः बनाया गया। क्योंकि इस कसीदः में तथा उर्दू लेख में उस बहस की घटनाएं लिखी हैं। जो 29,30 अक्तूबर 1902ई० में मुद्द के स्थान में हुई थी। तो यदि यह कसीदः और उर्दू लेख इस थोड़े समय में तैयार

नहीं हुआ और इस से पहले बनाया गया तो फिर मुझे अन्तर्यामी मानना चाहिए जिसने समस्त घटनाओं की पहले से ख़बर दी। अतः यह एक महान निशान है और फैसले का बहुत ही आसान तरीका। और याद रहे कि जैसा अभी मैंने वर्णन किया है कि समस्त समय कसीदः पर ही व्यय नहीं बल्कि उस उर्दू लेख पर भी व्यय (खर्च) हुआ है जो उस कसीदः के साथ सलंग्न है और वे दोनों सामूहिक रुप से ख़ुदा तआला की ओर से एक निशान हैं और मुकाबले के लिए तथा दस हज़ार रुपया इनाम पाने के लिए यह शर्त आवश्यक है कि जो व्यक्ति मुकाबले पर लिखे वह साथ ही उस उर्दू का खण्डन भी लिखे जो मेरे कारणों को तोड़ सके जिसकी इबारत हमारी इबारत से कम न हो और यदि कोई इन दोनों में से किसी को छोड़ेगा तो वह इस शर्त को तोड़ने वाला होगा। मैं अपने विरोधियों पर कोई ऐसी कठिनाई नहीं डालता जिस कठिनाई से मैंने हिस्सा न लिया हो। स्पष्ट है कि उर्दू इबारत भी इसी बहस की घटना के बारे में है और इसमें मौलवी सनाउल्लाह साहिब के उन आरोपों का उत्तर है जो उन्होंने प्रस्तुत किये थे। इस स्थिति में कौन सन्देह कर सकता है कि वह उर्दू इबारत पहले से बना रखी थी। तो मेरा अधिकार है कि जितने विलक्षण समय में यह उर्दू इबारत और कसीदः तैयार हो गए हैं। मैं उसी समय तक उदाहरण प्रस्तुत करने की उन लोगों से मांग करुं जो इन लेखों को मनुष्य का बनाया हुआ झूठ समझते हैं और चमत्कार नहीं ठहराते और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि यदि वह उतने समय तक जो मैंने उर्दू लेख और कसीदः पर व्यय किया है उतना ही उर्दू लेख जिसमें मेरी प्रत्येक बात का उत्तर हो कोई बात रह न जाए और उतना ही कसीदः जो इसी

संख्या के शेरों में घटनाओं के वर्णन पर आधारित हो और सरस एवं सुबोध हो। इसी निर्धारित अवधि में छाप कर प्रकाशित कर दें तो मैं उनको दस हज़ार रुपये नकद दूंगा। मेरी ओर से यह सही शरई इक़रार है जिसमें वादा भंग कदापि नहीं होगा जिसकी वे अदालत द्वारा भी भरपाई करा सकते हैं और यदि अब मौलवी सनाउल्लाह और मेरे अन्य विरोधी अलग रहें और मुझे निरन्तर क़ाफ़िर और दज्जाल कहते रहें तो यह उनका अधिकार नहीं होगा कि पराजित तथा निरन्तर होकर ऐसी चालाकी प्रकट करें और वे जनता के सामने झूठे ठहरेंगे, और फिर में यह भी इजाज़त देता हूं कि वे सब मिलकर उर्दू लेख का उत्तर तथा घटनाओं पर आधारित कसीद: लिख दें मैं कुछ बहाना नहीं करुंगा। यदि उन्होंने कसीद: और संलग्न लेख का उत्तर निर्धारित समय में छाप कर प्रकाशित कर दिया तो मैं निस्संदेह झूठा ठहरुंगा। परन्तु चाहिए कि मेरे कसीद: की तरह प्रत्येक शेर के नीचे उर्दू अनुवाद लिखें तथा समस्त शर्तों के साथ इसे भी एक शर्त समझ लें। इस मुकाबले से सम्पूर्ण झगड़े का फैसला हो जाएगा और इंशाअल्लाह 16 नवम्बर 1902 ई० की सुबह को मैं यह पुस्तक ऐजाज़-ए-अहमदी मौलवी सनाउल्लाह के पास भेज दूंगा जो मौलवी सय्यद मुहम्मद सरवर साहिब लेकर जाएंगे तथा इसी तारीख को यह पुस्तक उन समस्त सज्जनों की सेवा में जो इस कसीद: में सम्बोधित हैं रजिस्ट्री द्वारा भेज दूंगा अन्ततः मैं इस बात पर भी सहमत हो गया हूं कि उन समस्त विरोधियों को उपरोक्त कथित उत्तर के लिखने और प्रकाशित करने के लिए पन्द्रह दिन की छूट दूं। क्योंकि यदि वह अधिक से अधिक बहस करें तो उन्हें इस स्थिति में कि 18 या 19 नवम्बर 1902 ई० तक मेरा क़सीद: उनके पास पहुंच

जाएगा। बहरहाल मानना पड़ेगा कि 1, नवम्बर 1902 ई० से आधे नवम्बर तक पन्द्रह दिन हुए। परन्तु फिर भी मैंने उनकी हालत पर दया करके समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के तौर पर उनके लिए पांच दिन और बढ़ा दिए हैं तथा डाक के दिन उन दिनों से बाहर हैं। अत: हम झगड़े से अलग होने के लिए तीन दिन डाक के मान लेते हैं। अर्थात् 17,18,19 नवम्बर 1902 ई० इन दिनों तक बहर हाल उनके पास जगह-जगह यह क़सीद: पहुंच जाएगा अब उनकी समय सीमा 20 नवम्बर से आरंभ होगी। तो इस प्रकार से 10 दिसम्बर 1902 तक इस समय सीमा का अन्त हो जाएगा। फिर यदि 20 दिन में जो दिसम्बर 1902 ई० की दसवीं तारीख के दिन की शाम तक समाप्त हो जाएगा। उन्होंने इस क़सीद: तथा उर्दू लेख का उत्तर छाप कर प्रकाशित कर दिया तो यों समझो कि मैं बिल्कुल बरबाद हो गया और मेरा सिलसिला झूठा हो गया। इस स्थिति में मेरी समस्त जमाअत को चाहिए कि मुझे छोड़ दें और संबंध समाप्त करें। परन्तु यदि अब भी विरोधियों ने जानबूझ कर पृथकता की तो न केवल दस हज़ार रुपए के इनाम से वंचित रहेंगे बल्कि दस लानतें उन का अनादि भाग होगा। इस इनाम में सनाउल्लाह को पांच हज़ार मिलेगा और शेष पांच हज़ार को यदि विजयी हो गए एक-एक हज़ार मिलेगा। यदि मौलवी सनाउल्लाह

والسلام علی من اتبع الھدی

ख़ाकसार-

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी